LOK SABHA DEBATES

Second Series

Volume XXXVII, 1959/1881 (Saka)

[December 14 to 22, 1959 | Agrahayana 23 to Pausa 1, 1881 (Saka)]



TH SESSION, 1959/1881 (Saka)

(Vol. XXXVII contains Nos. 21 to 27)

LOK SABHA SECRETARIAT NEW DELHI

CONTENTS

[SECOND SERIES, VOL. XXXVII - DECEMBER 14 TO 22ND, 1959/AGRAHAYANA 23RD TO PAUSA 1, 1881(SAKA)]

| No. 21Monday, December, 14, 1959/Agrahayana 23rd, 1881(Saka) Oral Answers to Questions Starred Questions Nos. 827 to 834, 836 to 839, 873 and 840 4765-99 Written Answers to Questions Starred Questions Nos. 835, 841 to 87a and 874 Unstarred Questions Nos. 1348 to 1404 Mation for Adjournment |
|---|
| Oral Answers to Questions Starred Questions Nos. 827 to 834, 836 to 839, 873 and 840 Written Answers to Questions Starred Questions Nos. 835, 841 to 87a and 874 Unstarred Questions Nos. 1348 to 1404 4819—51 |
| Written Answers to Questions.— Started Questions Nos. 835, 841 to 872 and 874 4799—4819 Unstarted Questions Nos. 1348 to 1404 4819—51 |
| Statted Questions Nos. 835, 841 to 872 and 874 4799—4819 Unstarred Questions Nos. 1348 to 1404 4819—51 |
| Unstarred Questions Nos. 1348 to 1404 |
| |
| Motion for Adjournment— |
| |
| Explosion in Hyderabad 4851—61 |
| Papers laid on the Table 4861—63 |
| Messages from Rajya Sabha 4864 |
| President's Assent to Bill |
| Committee on Absence of Members from the sittings of the House-Seven- |
| teenth Report 4865 |
| Calling Attention to Matter of Urgent Public Importance |
| Kidnapping of two policemen 4865—67 |
| Appropriation (No. 8) Bill. Introduced |
| Indian Statistical Institute Bill 4867—4965 |
| Motion to consider 4869—4937 |
| Clauses 2 to 12 and 1 4937—62 |
| Motion to pass 4962—65 |
| Tripura Land Revenue and Land Reforms Bill 4965—89 |
| Motion to refer to Joint Committee 4965—89 |
| Indian Tariff (Amendment) Bill—Introduced 4989 |
| Half-an-Hour Discussion re: Hassan-Mangalore Rail link 4990-5000 |
| Daily Digest 500x-08 |
| No. 22 - Tuesday, December, 15, 1959/Agrahayana. 24, 1881 (Saka) |
| Oral Answers to Questions— |
| Starred Questions Nos. 875 to 887, 889, 891 and 892 5009-48 |
| Short Notice Question No. 7 5048—54 |
| Written Answers to Questions |
| Starred Questions Nos. 888, 890 and 893 to 919 |
| Unstarred Questions Nos. 1405 to 1491 |
| Papers laid on the Table : 5118—19 |
| Calling Attention to Matter of Urgent Public Importance- |
| Minority Community in East Pakistan 5120—24 |
| Administration of Evacuee Property (Amendment) Bill_Introduced 5124 |

Administration of Evacuee Property (Amendment) Bill—Introduced
Displaced Persons (Compensation and Rehabilitation) Second Amendment

Bill_Introduced

Appropriation (No. 8) Bill, 1959....Passed

Mistion to refer to Joint Committee

Tripura Land Revenue and Land Reforms Bill .

5124-25

5125-26

5126-42

5126-42

| | | | | | | | CONCOUNT |
|---|-----------------|-----------|--------|-------|---------|-------|-------------------------|
| Motion re Suspension of Rule . | | | | | | | . 5142-44 |
| Manipur Land Revenue and Land Rei | forms B | i 11 | | | | | · 51445207 |
| Motion to refer to Joint Committee | | | | | | | · 51445207 |
| Delhi Land Holdings (Ceiling) Bill | • | | | | | | 5207-46 |
| Motion to refer to Joint Committee | | • | | | | | . 5207-46 |
| Daily Digest | | | | | • | | 5247-54 |
| . 23Wednesday, December 16, 1959/A | grahaya | na 25 | , 1881 | (Sak | a) | | |
| Oral Answers to Questions | | | | | | | |
| Starred Questions Nos. 920 to 930, | hne cco | 022 | | | | | 5255 |
| - | , 32 alim | 733 | • | • | • | • | 525592 |
| Written Answers to Questions- | | | | | | | |
| Starred Questions Nos. 931 and 934 | | | | • | • | • | . 329 253 16 |
| Unstarred Questions Nos. 1492 to 1 | | | • | • | • | | . 5316-53 77 |
| Re: Motion for Adjournment | | | | • | • | • | 537880 |
| Papers laid on the Table | | | | | • | | . 538081 |
| Re: Order in the House | | | | | | | . 53B186 |
| Committee on Private Members' Bills | and Rea | solutio | ons | | | | |
| Fifty-fourth Report | | | | | | | . 5386 |
| Mineral Oils (Additional Duties of Exc | ise and | Custo | ms) A | mend | lment | Bill | |
| Introduced | | | | | | | . 538687 |
| Delhi Land Holdings (Ceiling) Bili . | | | | | | | 5387-5481 |
| Motion to refer to Joint Committee | | | | | | | · 53875481 |
| Statement re: Commonwealth Prime A | | | | | | | . 5402 |
| Motion re: Food Situation | | | | | | | 5481-26, |
| | | | | | | | 552830 |
| Business of the House | | • | | • | - | • | 552728 |
| Daily Digest | | • | ٠. | · . | • | • | 553138 |
| . 24—Thursday, December 17, 1959/Agra | <i>ahayan</i> a | 2 26, 1 | 881 (| Saka) | | | |
| Oral Answers to Questions | | | | | | | |
| • | -4 c0c | • • • • • | | | | | ## # |
| Starred Questions Nos. 968 to 979 a | na 982 | 10 984 | • | | ٠ | • | 553974 |
| Written Answers to Questions | | | | | | | |
| Starred Questions Nos. 980, 981, 98 | € to 101 | . A. | | | _ | | · 5574~~9I |
| Unstarred Questions Nos. 1584 to 10 | | | | | | | 5591-5629 |
| | | | • | | · | | . 5629 |
| Question of Privilege | | • | • | • | | | . 562931 |
| Panera laid on the Table | • | · | : | | • | | . 5631-34 |
| Papers laid on the Table Message from Rajya Sabha | • | • | | | • | • | |
| Calling Attention to Matter of Urgent | | | | | • | • | 5634-35 |
| | | • | | _ | | | |
| Police firing at Youth Pestival, Myse | ore . | • | • | | • | • | 563539 |
| Election to Committee | | | | | | | |
| Batimates Committee | | <u>.</u> | | | | • | . 5639 |
| Statutory Resolution 78: Sugar (Special Excise Duty) Bill | I Excise | Duty |) Ord | inanc | e and : | Sugar | . 564070 |
| Motion to consider | • | | | | | | . 564070 |
| Ciauses 1 to 5 | | | | | • | | 5670 |
| Motion to pass | | | | | | | 5670 |
| Indian Tariff (Amendment) Bill . | | | | | | | 5670-91 |
| Motion to consider | | | | | | | 567089 |
| Clauses I and 2 | | | | | | | 5689 |
| Motion to pass | | | | | | | . 468001 |
| numbers on Suma | • | - | • | | - | • | - "AAAA-AT |

| | | | | | | COLUMNS |
|---|----------|---------------|------------|---------|---------|-----------------------|
| Business of the House | | | | | | . 569195 |
| Motion re: Price of Sugarcane and Sugar | | | | | | . 56955767 |
| Motion w: Report of Pay Commission . | | | | | | . 5767-5806 |
| Daily Digest | | | | | | . 5807-16 |
| No. 25Friday, December 18, 1959/Agrahayana | 27, 18 | 81 (<i>S</i> | uka) | | | |
| Oral Answers to Questions- | | | | | | |
| Starred Questions Nos. 1015, 1017 to 1027 | . 1029 | 1032 | and | 1034. | | . 581755 |
| Short Notice Question No. 8 | | | | | | . 5855-56 |
| Written Answers to Questions | | | | | | |
| Starred Questions Nos. 1016, 1028, 1030, 1052-B, 1053 to 1068, 1068-A and 1069 | 1031, 1 | 033, | 1035 | 10 105 | 2, 1052 | -A, 585688 |
| Unstarred Questions Nos. 1653 to 1770, 1 | 770-A | | ъъ, г | 770-C | , 1770- | D, |
| 1770-E and 1770-F | • | • | • | • | • | 58885960 |
| Re: Motion of Privilege | • | • | • | • | • | 5960-61 |
| Re: Motion for Adjournment | • | • | • | • | • | . 5961-62 |
| Papers laid on the Table | • | ٠ | • | • | | 5962—65 |
| Committee on Petitions— | | | | | | |
| Minutes of sittings | | | | | | . 59 6 5 |
| Arrest and detention of a Member | | | | | | 5966 |
| Calling Attention to Matter of Urgent Public | c Impo | rtanc | c - | | | |
| Reported violations of Indian air space eve | r NEF | A an | d Ass | am. | | . 596671 |
| Statement re: Indo-Pakistan Financial Talks | | | | | | 5971-72 |
| Business of the House | | | | | | 5972-73 |
| Mineral Oils (Additional Duties of Excise an | d Cus | oms) | Ame | ndmer | t Bill | 5973—6011 |
| Motion to consider | | | | | | 5973—6008 |
| Correction of Result of a Division | • | | | | | 6011-12 |
| Married Women's Property (Extension) Bill | - | | | | • | 6012-17 |
| Motion to consider as passed by Rajya Sal | | • | • | • | • | 6012-17 |
| • • • | | • | • | • | • | 6017 |
| | • | ٠ | | • | • | |
| Motion to pass | • | • | • | • | • | 6017 |
| Motion re: Report of Pay Commission | | • | • | • | • | 601732 |
| Committee on Private Members' Bills and Re | | | | | | _ |
| • | | • | | • | • | . 6032-33 |
| Resolution re: Development of Drug Industr | • | | | | • | 603387 |
| Resolution re: Compulsory Military Training | g in E | lucati | onal l | Institu | tions | . 6c87 9 8 |
| Daily Digest | | • | | | | · 6 3996110 |
| No. 26 Monday, December 21, 1959/Agrahayana | a 30, 11 | B81 (i. | Saka). | | | |
| Oral Answers to Questions | | | | | | • |
| Starred Questions Nos. 1076, 1077, 1079 to to 1095 and 1120-A. | · 1081 | , 1083 | to 10 | | 90, 109 | . 6111—4 8 |
| Written Answers to Questions | | | | | | |
| Starred Questions Nos. 1078, 1082, 1089, 10 to 1108, 1108-A, 1109 to 1117, 1117-A, 111 1124-A and 1124-B. | | | | | | |
| Unstarred Questions Nos. 1771 to 1785, 17 1898-C and 1898-D | | 898, | 1898- | A, 189 | 8-B, | 6172-6258 |
| Motion for Adjournment- | | | | | | |
| Accident in the Nizamuddin Trunk Sewer | | | | | | 625864 |
| Question of Privilege | | | | | | 626466 |

| | | | | | | | | | A |
|---|--|---|-------------------------------------|------------------------------|-----------------------|---------------|----------------|--------------------|--|
| Barrer and a confi | ! ? . | | | | | | | | COLUMN |
| Statement re: S | | cverions | • | • | • | • | • | • | 6366 7 |
| Papers laid on | _ | • | | • | • | • | • | ٠ | 6278 |
| Meanges from | • • | | • | • | • | • | • | • | . 628 |
| President's Asse | | | • | • | • | • | • | • | . 628 |
| Public Account | | - | | | | | | | |
| Twenty-first | - | | • | • | • | | | • | . 638 |
| Estimates Com | | | | | | | | | |
| Sinty-Afth, S | • | | - | - | | • | | | . dat |
| Statement re: A | annual Repor | t of Resc | we Stat | ions C | omuji | ttec | | | 6286-6 |
| Arrest of a Mon | nber, . | | • | | • | | | | . 6287-8 |
| Leave of Absen | ce | | | • | • | | | | . 628 |
| Appointment of | Members to | Joint Co | | e on C | ompa | nies (, | Amen | iment) | . 42899 |
| Motion re: Foo | d Situation | | | | | | | | 629164 |
| Haff-an-Hour D | | Contrib | ution to | Empl | oyees | Provi | dent l | und | 6423- |
| Daily Digest . | | , | | | | | | | 6437 |
| | | | | | | | | | - 457 |
| 27 - Tuesday, D | Jecember 22, | 1959/201 | usa 1, 1 | 991 (V) | ara)_ | - | | | |
| Oral Answers to | Questions | | | | | | | | |
| Starred Quest | tions Nos. II | 25 to 112 | | | | | | | . 64518 |
| Started Quest | 10110 1403. 11. | -) (U 11) | | • | • | • | • | • | . 6431 |
| | re to Awastin | | | | | | | | |
| Written Answer | is to Question | ns | | | | | | | |
| Starred Quest | ions Nos. 113 | 8 to 1160 |), 1162 175 8 116 | to 1164 | , 1164 A. | | 164-E | 3, 1165 | |
| Starred Quest XX68, 1168- | tions Nos. 113 -A, 1168-B, 1 | 8 to 1160 169 to 1 | 175 and | to 1164 1 1175- |), 1164 A . | (-Α, 1 | 164-E | 1165 | 648565 |
| Starred Quest xx68, 1168- Unstarred Qu | tions Nos. 113 -A, 1168-B, 1 estions Nos. | 8 to 1160 169 to 1: 1899 to 2 | 175 and | to 1164 1 1175+ |), 116, A. | | 164-E | 3, 116 5 1 | 648565 6920 |
| Starred Quest 1268, 1168- Unstarred Qu Papers laid on t | tions Nos. 113 -A, 1168-B, 1 estions Nos. he Table | 8 to 1160 169 to 1 1899 to 2 | 175 #110 2017 . | to 1164 1175+ | h 1164 A . | | 164-E | 3, 11 6 5 1 | 648565 6920 |
| Starred Quest x168, 1168- Unstarred Qu Papers laid on t Committee on C | tions Nos. 113 -A, 1168-B, 1 estions Nos. he Table Government A | 8 to 1160 169 to 1: 1899 to 2 | 175 #110 2017 . | to 1164 1 1175+ |), 116, A. | | 164-E | 3, 1165 | 648565 6573 |
| Starred Quest x168, 1168- Unstarred Qu Papers laid on t Committee on C Minutes of Si | tions Nos. 113-A, 1168-B, 1 estions Nos. he Table Jovernment Axteenth Sittis | 8 to 1160 169 to 1 1899 to 2 Assurance ng. | 175 #110 2017 . | to 1164 1 1175- | 1164 A. | | 164-E | , 1165 | 648565 6573 |
| Starred Quest 1268, 1168- Unstarred Qu Papers laid on t Committee on C Minutes of Si Committee on A | cions Nos. 113 -A, 1168-B, 1 estions Nos. he Table Government A xteenth Sittli Absence of Mo | 18 to 1160 169 to 1 1899 to 2 Assurance ng. | 175 #110 2017 . | to 1164 | , 116, A. | | 164-E | 3, 1165 t | 648365 6320 6573 |
| Starred Quest 1268, 1168- Unstarred Qu Papers laid on t Committee on C Minutes of Si Committee on A Vinutes of Se | tions Nos. 113 A, 1168-B, 1 estions Nos. he Table Government A xteenth Sittle Absence of Me eventeenth Si | 18 to 1160 169 to 1 1899 to 2 Assurance ang. embers— | 175 #110 2017 . | to 1164 | A. | | 164 - E | 3, 1165 | 648565 6573 6573 |
| Starred Quest 1268, 1168- Unstarred Qu Papers laid on t Committee on C Minutes of Si Committee on A Vinutes of Se Messages from | tions Nos. 113 A, 1168-B, 1 estions Nos. he Table Government A xteenth Sittle Absence of Me eventeenth Si Rajya Sabha | 8 to 1160 169 to 1 1899 to 2 Assurance ng. embers— tting | 175 and 2017 - | to 1164 | A. | | 164 - E | 1, 1165 | 648565 6573 6573 |
| Starred Quest 1268, 1168- Unstarred Qu Papers laid on t Committee on C Minutes of Si Committee on A Vinutes of Se Messages from Committee on S | tions Nos. 113 A, 1168-B, 1 estions Nos. he Table Government A xteenth Sittle Absence of Me eventeenth Si Rajya Sabha subordinate L | 8 to 1160 169 to 1 1899 to 2 Assurance ng. embers— tting | 175 and 2017 - | to 1164 | A. | | 164-E | 3, 1165 | 648565 6573 6573 657 |
| Starred Quest 1168, 1168. Unstarred Qu Papers laid on t Committee on C Minutes of Si Committee on A Minutes of Se Messages from Committee on S Seventh Repo | cions Nos. 113 A, 1168-B, 1 estions Nos. he Table Government A xteenth Sittle absence of Me eventeenth Si Rajya Sabha subordinate L | 8 to 1160 169 to 1 1899 to 2 Assurance ng. embers— tting | 175 and 2017 - | to 1164 | A. | | 164-E | 3, 1165 | 648565 6573 6573 657 |
| Starred Quest 1168, 1168. Unstarred Qu Papers laid on t Committee on C Minutes of Si Committee on A Minutes of Se Messages from Committee on S Seventh Repo Estimates Comm | ions Nos. 113 A, 1168-B, 1 estions Nos. he Table Government A xteenth Sittle absence of Me eventeenth Si Rajya Sabha subordinate L itt nittee— | 8 to 1160 169 to 1 1899 to 2 Assurance ng. embers— tting | 175 #16 2017 | i 1175+ | A. | | 164-Ē | 3, 1165 | 648565 6573 6573 657 |
| Starred Quest 1268, 1168- Unstarred Qu Papers laid on t Committee on C Minutes of Si Committee on A Minutes of So Messages from Committee on S Seventh Repo Estimates Comm Sixty-eighth, | ions Nos. 113 A, 1168-B, 1 estions Nos. he Table Government A xteenth Sittin absence of Me eventeenth Si Rajya Sabha abbordinate L rt nittee Sixty-ninth s | 8 to 1166 169 to 1: 1899 to 2: Assurance ng. embers— tting egislation | 175 #16 2017 . | i 1175- | A. | | 164-Ē | 3, 1165 | 648565 6573 6573 655 655 658 |
| Starred Quest 1268, 1168- Unstarred Qu Papers laid on t Committee on C Minutes of Si Committee on A Minutes of So Messages from Committee on S Seventh Repo Estimates Comm Sixty-eighth, Correction of A | ions Nos. 113 A, 1168-B, 1 estions Nos. he Table Government A xteenth Sittin absence of Me eventeenth Si Rajya Sabha subordinate L st nittee Sixty-ninth a nswer to Star | 8 to 116c 169 to 1: 1899 to 2 Assurance ng. embers— tting egislation and Sever | ntieth I | Reports | A. | | 164-Ē | 3, 1165 | 648565 6573 6573 655 655 658 |
| Starred Quest 1268, 1168- Unstarred Qu Papers Isid on t Committee on C Minutes of Si Committee on A Minutes of Se Messages from Committee on S Seventh Repo Estimates Comm Sixty-eighth, Correction of A Motor Vehicles | ions Nos. 113 A, 1168-B, 1 estions Nos. he Table Government A xteenth Sittle absence of Me eventeenth Si Rajya Sabha subordinate L ort nittee— Sixty-ninth a nswer to Star (Amendment | 8 to 1160 169 to 11 1899 to 2 Assurance ng. embers— tting cegislation and Seven tred Queen 3 Bill—F | necth Fasted | Reports | A. | | 164-E | 1, 1165 | 648565 6573 6573 657 657 658 |
| Starred Quest 1268, 1168- Unstarred Qu Papers laid on t Committee on C Minutes of Si Committee on A Minutes of So Messages from Committee on S Seventh Repo Estimates Comm Sixty-eighth, Correction of A Motor Vehicles Motions 78: Co. | ions Nos. 113 A, 1168-B, 1 estions Nos. he Table Government A xteenth Sittle absence of Me eventeenth Si Rajya Sabha cubordinate L ort nittee Sixty-ninth a nswer to Star (Amendment al Mines Rese | 8 to 116c 169 to 11 1899 to 2 Assurance ng. embers— tting cegislation and Seven zed Ques 3) Bill—Four Ruler | necth Fation N | i 1175- Reports o. 585 | A. | | 164-E | 1, 1165 | 6483653 6573657 657 657 658 65826587 |
| Starred Quest 1268, 1168- Unstarred Qu Papers laid on t Committee on C Minutes of Si Committee on A Minutes of So Messages from Committee on S Seventh Repo Estimates Comm Sixty-eighth, Correction of A Motor Vehicles Motions 78: Co Motion 78: Peti | ions Nos. 113 A, 1168-B, 1 estions Nos. he Table Government A xteenth Sittle absence of Me eventeenth Si Rajya Sabha subordinate L ort nittee Sixty-ninth a nswer to Star (Amendment al Mines Reso | 18 to 1160 169 to 11 1899 to 2 Assurance ng. embers— tting cegislation and Sever treed Quest Bill—F cue Ruler (atural Ge | necth Fation Nossed | Reports 0. 585 | A. | | 164-E | | 648565 6573657 657 657 657 658 6580658965896589 |
| Starred Quest 1268, 1168- Unstarred Qu Papers laid on t Committee on C Minutes of Si Committee on A Minutes of So Messages from Committee on S Seventh Repo Estimates Comm Sixty-eighth, Correction of A Motor Vehicles Motions 78: Co. | ions Nos. 113 A, 1168-B, 1 estions Nos. he Table Government A xteenth Sittle absence of Me eventeenth Si Rajya Sabha subordinate L ort nittee Sixty-ninth a nswer to Star (Amendment al Mines Reso | 18 to 1160 169 to 11 1899 to 2 Assurance ng. embers— tting cegislation and Sever treed Quest Bill—F cue Ruler (atural Ge | necth Fation Nossed | Reports 0. 585 | A. | | 164-E | 6613 | 64856573657657565896548573, 6648 |
| Starred Quest 1268, 1168- Unstarred Qu Papers laid on t Committee on C Minutes of Si Committee on A Minutes of So Messages from Committee on S Seventh Repo Estimates Comm Sixty-eighth, Correction of A Motor Vehicles Motions 78: Co Motion 78: Peti | ions Nos. 113 A, 1168-B, 1 estions Nos. he Table Government A xteenth Sittli absence of Me eventeenth Si Rajya Sabha abordinate L ort nittee Sixty-ninth a nswer to Star (Amendment al Mines Res roleum and N orts of Orissa | 18 to 1160 169 to 11 1899 to 2 Assurance ng. embers— tting and Sever tted Ques () Bill—F cue Ruler (atural G Mining (| ntieth I | Reports 0. 585 | A. | | 164-E | 6613 | 648565 6573657 657 657 658 658658967 658967 |
| Starred Quest 1168, 1168- Unstarred Qu Papers laid on t Committee on C Minutes of Si Committee on A Vinutes of So Messages from Committee on S Seventh Repo Estimates Comm Sixty-eighth, Correction of A Motor Vehicles Motion 78: Peti Motion 78: Repo | ions Nos. 113 A, 1168-B, 1 estions Nos. he Table Government A xteenth Sittli absence of Me eventeenth Si Rajya Sabha abordinate L ort nittee Sixty-ninth a nswer to Star (Amendment al Mines Res roleum and N orts of Orissa | 18 to 1160 169 to 11 1899 to 2 Assurance ng. embers— tting and Sever tted Ques () Bill—F cue Ruler (atural G Mining (| ntieth I | Reports 0. 585 | A. | | 164-E | 6613 | 648365 6573657 657 657 658 6586586589664848, 66516663672 |
| Starred Quest 1168, 1168- Unstarred Qu Papers laid on t Committee on C Minutes of Si Committee on A Vinutes of Se Messages from Committee on S Seventh Repo Seventh Repo Sixty-eighth, Correction of A Motor Vehicles Motion re: Pen Motion re: Repo Discussion re: S | cions Nos. 113 A, 1168-B, 1 estions Nos. he Table Government A xteenth Sittin absence of Me eventeenth Si Rajya Sabha subordinate L st mittee Sixty-ninth a nswer to Star (Amendment al Mines Res- roleum and N orts of Orissa Sino-Indian R | 8 to 1160 169 to 11 1899 to 2 Assurance ng. embers— tting and Sever med Ques Bill— Focue Rules (atural Gi Mining of cleations | netieth fation Named as Rule Corpor | Reports | | | | 6613 6632 | 6485651 65737 65737 657 657 658 65826 6589661 -31, 66485 -48, 66516 6726-72 67304 |

N. B. The Sign + marked shove a name of a Member on Questions, which were orally answered, indicates that the Question was actually asked on the floor of the House by that Member.

5009

LOK SABHA

Tuesday, December 15, 1959/Agrahayana 24, 1881 (Saka).

The Lok Sabha met at Eleven of the Clock.

[Mr. SPEAKER in the Chair]

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

बीन से व्यापार

भी प्रकाक्ष बीर शास्त्री

*द७४ ्रे भी मीरारका :

श्रीहेम राज :

क्या **वाणिज्य तथा उद्योग** मंत्री यह बनाने की कुश करेंगे कि :

- (क) क्या भारत—चीन सम्बन्धो के बारे में हाल की घटनाओं के कारण दोनों देशों के व्यापार पर कुछ प्रभाव पड़ा है;
- (ख) यदि हां, तो पिछने वर्षों को प्रनेक्षा जीन ने जून, १६५६ तक भारत संद्रायात किने गये माल में कितने प्रतिज्ञत कमी की हैं: प्रौर
- (ग) क्या सरकार ने इस विक्य में चीन सरकार से कोई बातचीत चलाई है?

वाजिय तथा उद्यांग उपनंती (बी सतीत चग्र): (क) भीर (ख): दो विवरण सभा की मेज पर रखे जाते हैं जिनमें बीन को हुए निर्मात तथा चीन से हुए भाषात की तुलनात्मक जानकारी दीगयी है। शिक्षाये परिशिष्ट ३, भनुगंत्र संस्था २७] (स) जी, नहीं। भी प्रकाश बीर शास्त्री: क्या में जान सकता हूं कि इस विवाद में कुछ ऐसे स्तर के किसी मंडल की स्थापना की जायगी जो भारत और चीन का व्यापार धवाल गति से जारी रह सके?

श्री सतीक चन्द्र: माननीय सदस्य भगर विवरण को देखें तो उन श्रांकड़ों से पता चलेगा कि व्यापार जारी है भौर कोई उसमें रुकावट नहीं है।

एक माननीय सबस्य : बढ़ा है।

Shri P. R. Patel: In view of the trade difficulties in Tibet and in view of the invasion by China over our country, I want to know whether the Government propose to break off trade relations with China.

Mr. Speaker: The hon. Member wants to know whether there is a proposal to break off trade relations with China in view of the aggression.

Shri P. R. Patel: In view of the invasion of our country and the trade difficulties.....

Mr. Speaker: All that has been said.

Shri Satish Chandra: I may clarify that the statements—that have been placed on the Table of the House do not include figures of trade with Tibet. These relate to maritime trade with China which passes through ports. As regards—the traditional trade—with Tibet, it is entirely a different matter. There have been difficulties, but there is no such proposal as is being suggested by the hon. Member.

भी वाजपेशी: विवरण से यह जात होता है कि जूट से बनी हुई चीजों के निर्यात में असावारण रूप से वृद्धि हुई है तो क्या में इसका कारण जान सकता हूं।

भी सतीश अन्द्र: कुछ चीजों में वृद्धि भी होती है घौर कभी भी होती रहती है। भगर पिछले साल के भाकड़े में माननीय सदस्य के सामने रक्खं तो पता लगेगा कि पहले कोई भीर बीजें जाती थीं भीर इस वक्त कुछ भीर चीजें जाने लगी है। इससे कोई खास बात पता नहीं लगती । पिछले साल चीन ने भ्रपने मल्क में जुट के बहुत से कारखाने लगाये भीर उसकी वजह से पहले जूट का जो निर्यात होता था उसमें कमी हुई लेकिन ग्रब शायद उनके यहां अस का प्रोडक्शन बढने और अन्य चीजों की पैदाबार बढ़ने के कारण उन्हें जट कं बोरों की फिर ज्यादा जरूरत पड गयी है भीर उन्होंने फिर जट खरीदना शरू कर दिया है।

Shri Morarka: From the statements it appears that while our exports to China in the year 1959 had increased, our imports have been cut down by more than fifty per cent. May I know whether it is in the natural course, or whether there have been some restrictions imposed by the Chinese on exports to India?

Shri Satish Chandra: This may be due to the restrictions imposed by us on imports. We try to export as much as possible and try to import as little as possible—only what we require urgently.

Shri Hem Raj: In view of the fact that the relations with China have become strained, may I know whether the trade agreement with China which was there formerly will be renewed?

Mr. Speaker: It is the same question in another form, whether the trade relations will be cut off. If they would not be cut off, then the trade relations will be resumed.

सेठ गोबिन्द दास : मभी जो विवरण मंत्री जी ने समा-पटल पर रक्खा उससे यह नो मालूम हुमा कि हमारा निर्यात बढ़ा है। घव बह जो प्रयत्न हमारा निर्यात बढ़ाने का सभी देशों में हो रहा है उस प्रयत्न में, चीन में जो हमारा इस समय कुछ भगड़ा है इसके सबब से क्या उसमें कुछ बाबा पड़ी है भीर भगर वह झगड़ा न होता तो क्या चीन में हमारा निर्यात भीर बढता क्या कोई ऐसी सम्भावना थी?

भी सतीश बन्द : इस तरह के हाइपीथिटिकल सवालों का जवाब देना बहुत मुश्किल होता है। अपनी अपनी जरूरत के मुताबिक हर मुल्क चीजें लरीदता और बेचता है और हमारी कोशिश यही रहती है कि जितना भी हमारा व्यापार बाहर के मुल्कों से बढ़ भके, यह बढ़े।

Allotment of Wagons by State Trading Corporation

*876. Shri Panigrahi: Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to state:

- (a) whether it is a fact that the mining interests around Banspani are getting irregular and inadequate allotment of Railway wagons by State Trading Corporation; and
- (b) if so, what is the total demand of railway wagons in this area and what is the allotment?

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah): (a) No, Sir.

(b) Does not arise.

Shri Panigrahi: What is the actual demand of the STC or the mining interests for allotment of wagons from the Banspani area, either for export or for supplying to the steel mills?

Shri Manubhai Shah: The whole position is that so far as iron ore is concerned, it is the STC alone which does the export. As far as manganese ore is concerned, as the House is aware, it is fifty per cent. in the private sector and fifty per cent by the STC. The wagons are also sub-divided in this proportion. As far as the requirements of the steel mills are concerned, it 9.5:1 so far as Banspani area is concerned and 9:1 so far as the export is concerned.

Shri Vidya Charan Shukla: Is it a fact that those exporters who canalise their exports through the STC have

railway movement been given the quota allotted to them by the and whether the railway movement quota given to the STC is non-transferable?

Shri Manubhai Shah: As I earlier, the railway quotas are in proportion to the total quantity allotted, and it is in strict proportion to that, the allotment of wagons is made.

Shri Vidya Charan Shukla: I wanted to know whether the STC have been transferring their quota to others who canalise their exports through STC

Shri Manubhai Shah: The exporters who canalise their exports through the STC come within the STC, so that any inter se transfer does not Those who are doing independent export are given an independent allocation

Shri Vidya Charan Shukla: Their exports are independent.

Shri Tangamani: May I know actual demand in terms of railway wagons and how many have supplied?

Shri Manubhai Shah: It all depends upon the demand from time to time. As I said already, as far as the steel mills are concerned it is 7,62,000 tons movement in all the sectors.

Enquiry into Dalmia Concerns

*877. Shri Ram Krishan Gupta: Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to refer to the reply given to Starred Question No. 753 on the 24th August, 1959, and state the progress since made by the Commission of Inquiry in the investigation of the affairs of Dalmia concerns?

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah): The Commission have now completed investigation into the affairs of three important panies viz., Allen Berry & Co. (Private) Ltd., Dalmia Jain Airways Ltd., and Dalmia Jain Aviation Ltd. At

their public hearing held on the 11th December, 1959, the Commission have handed over three voluminous statements containing particulars of numerous transactions related to the above three companies in respect of which they have asked for the elucidation or explanation of Shri R. K. Dalmia, Shri Jaidayal Dalmia, Shri Shanti Prasad Jain, Shri Srivans Prasad Jain Shri Shital Prasad Jain to their Counsel in order to afford them an opportunity of answering the allegations contained in these statements. preparation of similar statements respect of the remaining seven companies is under the consideration the Commission. I may add that the copies of the statement have been made available in the Library of the House.

Shri Ram Krishan Gupta: May know whether it is a fact that the Commission have revealed in these statements that the three concerns. the investigations of which have been completed, have caused a loss of Rs. 31/2 crores to the investing public and the exchequer?

Shri Manubhai Shah: The statements are well known and are before House. I would not at this moment draw any particular inference till the whole hearing is over and we get the final decision.

Shri S. M. Baneriee: May I know whether it is a fact that the mission asked for some more concerns to be included under their investigation and, if so, whether any more concerns have been included?

Shri Manubhai Shah: As we have earlier made clear here, whatever the Commission wanted, all the concerns have been placed at their disposal for examination subject to certain conditions being satisfied.

Shri Ram Krishan Gupta: In view of the fact that this enquiry will take a long period, may I know whether there is any proposal to take over the management of these concerns with a view to safeguard the interest of the investing public?

Shri Manubhai Shah: No, Sir; that would hardly arise because each one is being looked after by a competent authority under the respective law.

Oral Answers

Advertisement of Reserved Vacancies in Newspapers

*878. { Shri Subodh Hansda; Shri R. C. Majhi:

Will the Minister of Information and Broadcasting be pleased to state:

- (a) whether any steps have been taken to advertise reserved vacancies in all the important newspapers of the fourteen languages mentioned in the Eighth Schedule of the Constitution; and
- (b) what percentage of the funds earmarked for such Government advertisements has been utilised in the year 1959 up to the end of October?

The Parliamentary Secretary to the Minister of Information and Broadcasting (Shri A. C. Joshi): (a) Advertisements in respect of reserved unreserved vacancies filled through Union Public Service Commission are at present placed in English and 6 Indian language newspapers approved by the Commission. As regards other vacancies which are of local nature, advertisements issued to suitable newspapers periodicals to secure the required regional and language coverage within the funds available. Increasing use is, however, being made of Indian language papers for these advertisements.

(b) No separate funds are earmarked for advertisements of reserved vacancies. They are advertised along with unreserved vacancies and it is therefore not possible to determine the expenditure incurred in respect of the former.

Shri Subodh Hansda: From the Estimates Committee's 48th Report for 1958-59 I find that information about reserved vacancies was published in 25 English papers and only in 5

Indian language papers. May I know why this information was not published in all the I4 Indian languages given under Eighth Schedule of the Constitution?

The Minister of Information Broadcasting (Dr. Keskar): Sir, I had explained this on the floor of the House before, that advertisements of the Public Service Commission put through by us only according to the scheme approved by the Service Commission. I had also occasion to explain that we are trying to persuade the Commission that and more languages should be used for such advertisements. When the Commission agrees, I shall be extremely glad to put these advertisements in all the possible languages.

Shri B. K. Gaikwad: Are Government aware that whatever advertisements are given in the English papers they are unseeable by the Scheduled Caste and Scheduled Tribes candidates living in villages because they cannot get English papers in the villages; if so, may I know whether Government propose to make necessary arrangements to give advertisements in the language papers which are run by the organisations of the Scheduled Castes and Scheduled Tribes so that they may be seen by the Scheduled Caste and Scheduled Tribes candidates?

Dr. Keskar: As far as advertisements directly put by Government are concerned, I shall certainly see and keep in mind what the hon. Member is saying, and as far as advertisements of the Public Service Commission are concerned I shall convey to the Commission what the hon. Member has said.

Dr. Ram Subhag Singh: May I know whether the Ministry of Information and Broadcasting has asked the language papers to publish advertisements given by the Ministry, even though such advertisements may have come from the UPSC., only in English even if the papers are in Bengali, Hindi, Tamil or any other language?

Dr. Keskar: That is a different matter; if a separate question is tabled I will be able to answer that.

Dr. Ram Subhag Singh: Sir, I rise on a point of order. This question concerns advertisements. Advertisements are given to language papers. In which language do Government want those papers to publish those advertisements?

Dr. Keskar: This question is about reserved vacancies and the number of papers in which they are published. I shall be glad to answer the hon. Member's question if separate notice is given.

Mr. Speaker: Order, order. Dr. Ram Subhag Singh himself may not be a party to it, but I have received notice and has also admitted a question of that type. The complaint was that even in the language papers—whether it is Bengali, Hindi, Tamil or any other language—they are required to publish advertisements only in English. I seem to have admitted a question of that type.

श्री बजराज सिंह: श्रमा मर्ता महोदन ने बताया कि पवितिक सरितस कमीशन अभी अपनी तीति में पितर्तन नहीं कर सका है। तो क्या इस प्रश्न को गृह मत्रालय के शृहर्द किया गया है भौर उनका दखल इस बात में चाहा गया है कि जो भारतीय भाषाओं के पत्र हैं उनके बढ़ने वालों की संख्या के हिसाब से ही समाचारपत्रों में विज्ञापन दिये जाएं, श्रीर अंग्रेजी भाषा के पत्रों में जिनको केवल १ प्रतिशत ही लोग पढ़ते हैं, एक प्रतिशत से ज्यादा विज्ञापन विष्

डां० केंसकर: कमीशन किन वजूहात से इसको कहती है, इसको सदन के सामने रखना चाहूं तो उसमें काफी समय लगेगा। लेकिन कमीशन मोटे तौर पर यह समझती हैं कि उनके धार्षिकांच जो विकापन होते हैं बहु ऐसी पोस्टों के लिए होते हैं जिनके लिए कैंग से कम से मुस्ट हीना जरूरी होता है और यह ज्यादातर प्रच्छे अंभेजी जानने वाले होने हैं और अंभेजी अच्छी जानना कमीशन की पोस्टरों के लिए जरूरी है, इसलिए वह समझते है कि अभेजी अखबारां में देना जरूरी है। मुमकान है और कारण भी हों लेकिन यह एक मुख्य कारण है।

Alkali Industry

*879. { Shri Subodh Hansda: Shri S. C. Samanta: Shri R. C. Majhi:

Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to state:

- (a) whether there is any proposal to manufacture high grade salt for Alkali Industry in our country;
- (b) if so, the steps taken to implement the proposal; and
- (c) the places where such high grade salt is available at present?

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah): (a) to (c). A statement is laid on the Table of the House.

STATEMENT

- (a) Yes, Sir.
- (b) The following schemes are under consideration:—
 - Installation of a washery plant at Sambhar Lake for production of 1,000 tons of high grade salt per day;
 - (2) Development of Mandi Mines by wet mining and installation of thermo compression plant for production of 66,000 tons of high grade salt per annum;
 - (3) Establishment of three big salt works, one each in West Bengal, Madras and Orissa or Andhra for production of high grade salt by mechanised manufacturing operations.

(c) Salt Works at Mithapur, Porbandar and Mundhra-Cutch, in the West Coast and Tuticorin in the East Coast.

Government also propose to obtain a French Expert for the modernisation of the salt industry under the T.C.M. programme. He is likely to arrive in programme, or March, 1960, for advising the Government on the modernisation of the salt industry in order to diversify and establish a production of high purity salt for different purposes including the requirements of salt-based industries.

Shri Subodh Hansda: May I know what is the impression of the expert team which went to Japan in May, 1958, to study the development of alkali and various allied chemical industries in that country? May I also know what is their opinion about the development of alkali and allied industries in our country?

Shri Manubhai Shah: No Government team went to Japan. Japan is not an importer of salt. The team went to France and other continental countries. Their report has been found very valuable.

Shri Subodh Hansda: In answer to part (b) of the question various schemes have been mentioned in the statement. Item (3) there is: "Establishment of three big salt works, one each in West Bengal, Madras and Orissa or Andhra for production of high grade salt by mechanised manufacturing operations." May I know whether these salt works will be established during the Second Five Year Plan period?

Shri Manubhal Shab: No, Sir; it will be perhaps sometime in the Third Five Year Plan.

Shri Tangamani: May I know whether the French expert who is expected in February, 1960, will visit the various sites where high grade salt is produced as in the case of Tuticorin etc?

Shri Manubhai Shah: The expert will visit as many sites as possible.

Shri S. C. Samanta: In the statement I find that the terms "high grade salt" and "high purity salt" have been used. Is there sny difference between them? Also, I should like to know how much sodium chloride content will be regarded as high grade salt?

Shri Manubhai Shah: This is not a technical term. This is the general description. It is really 99.6 per cent. of Na Cl and more.

Manufacture of Watches

Shri Amjad Ali: Shri Ram Krishan Gupta: Shri Bhakt Darshan: Shri S. M. Banerjee; Shri Panigrahi: Shri Dhanagar: Shri Sarju Pandey: Shrimati Parvathi Krishnan; Shri Nagi Reddy: *888. Shri Wartor: Shri Chuni Lai: Shri Rama Krishna Reddy: Shri Daijit Singh: Shri Ajit Singh Sarhadi: Shri Rameshwar Tantia: Shri Damani: Shri Vidya Charan Shukla: Shri D. C. Sharma: Shri N. M. Deb:

Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to refer to the reply given to Unstarred Question No. 16 on the 3rd August, 1959 and state:

- (a) whether the other schemes for the manufacture of watches in India have since been finalised; and
 - (b) if so, the details thereof?

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah): (a) and (b). As the House is aware one scheme for manufacture of watches has been already approved. The other schemes are still under consideration and one or two are likely to be finalised very shortly.

Shri Amjad Ali: Sir, on 3rd August an answer was given that other schemes for the manufacture of watches are under consideration. I want to know the names of the other firms whose schemes are under consideration. I also want to know whether the scheme of the Phoenix Watch Company has since been functioning.

Shri Manubhai Shah: Sir, it may not be very appropriate, perhaps, to give the names at this stage when they are under consideration; but I had indicated the foreign countries whose collaboration is likely to be made available.

Shri Sadhan Gupta: May I know the number of schemes received from industrialists in West Bengal and whether any of them is likely to be finalised shortly?

Shri Manubhai Shah: There is one name from West Bengal and there are other five schemes from other parts of the country.

Shri Rameshwar Tantia: May I know whether Government is aware that a considerable amount of smuggling of watches takes place which affects the established traders and results in loss to the Customs; if so, whether Government intends to import watches on a small scale until manufacture of watches is established in the country?

Shri Manubhai Shah: The two questions have no relation at all. embargo or restriction on watches and their import has not been done in order to merely foster the indigenous development. It may be a corollary to that, but it is due to extreme shortage of foreign exchange that we are restricting import of all consumer, goods as much as we can and allow import to the extent necessary. Whether there was restriction earlier or not, some smuggling has always been going on and to that extent loss will be there.

Shri Prabhat Kar: May I know whether, under these schemes, any decision has been taken about the location?

Shri Mannhai Shah: Yes, Sir. The plant under the Phoenix scheme will be somewhere in the Bombay State. They are negotiating for a proper place at Poona and roundabout, but one does not know which selection they have made so far.

भी सरजू पाण्डेय: ये जो स्कीमें सरकार के विचाराधीन हैं, क्या उनमें उत्तर प्रदेश में कोई ऐसी स्कीम हैं या नहीं?

श्री सनुभाई शाह: एक साहब देहरादून की मोच रहें हैं।

Shri S. M. Banerjee: The hon. Minister said that one scheme has been approved. I want to know the main features of the scheme. Can he give us some idea about the main features?

Shri Manubhai Shah: The features of the scheme were announced. They will manufacture about 310 thousand watches by the fifth year and they will be practically wholly indigenous. 50 per cent. of them will be ladies' watches and 50 per cent. gents' watches.

भी जांगड़ें: मैं यह जानना चाहना हूं कि अभी जिस घड़ी के कारखाने के लिए निर्णय हुआ है, उसमें कितनी सम्पत्ति लगेगी और क्या शासन का ऐसा विचार है कि किसी घड़ी के कारखाने को वह खुद चलाये?

श्री मनुभाई शाह: फिलहाल जो मन्जर किया गया है वह तो प्राईवेट संक्टर की एक फर्म को दिया गया है, जिस में पचास परसेंट फैंच कैंपिटल श्रीर पचास परसेंट इंडियन कैंपिटल होगा। जहां तक शासन का सम्बन्ध है, वह भी सोच-विचार कर रहा है?

Narimati Renuka Ray: May I know whether the major component parts of the watches will be manufactured under the scheme that has been sanctioned or which is under contemplation, or, whether some parts will have still to be imported?

Shri Manubhai Shah: This is a very important question and it has been under consideration of the Government. We want to give a big start to this industry which is a very high precision industry on the one hand and has a tremendous employment potential on the other. So, all these aspects of this industry are under consideration. We are trying to encourage as many schemes as possible for the whole watches as well as their components.

Shri D. C. Sharma: Will all the components in this watch industry be made in India, or, will some of the components be imported from abroad?

shri Manubhai Shah: The general standard will be, in the first year, 50 per cent. will be imported. Probably 10 per cent. will be reduced every year, and within five years, it will be practically wholly indigenous except for five to seven per cent.

श्री भक्त दर्शन : ग्रभी मानतीय मंत्री जी ने बतलाया कि देहरादून में भी एक घड़ी का कारलाना खोलने का विचार किया जा रहा है। मैं यह जानना चाहता हूं कि उसमें क्या प्रगति हुई हैं श्रीर कब तक उसका काम शुरू हो जायगा।

श्री मनुभाई शाह: एक सदस्य साहब ने पूछा था, तो मैंने कहा कि शायद एक पार्टी का इरादा हैं। वह कब हांगा, कितनी देर में होगा, किसके साथ होगा, यह सब बात-चीत बाद में होगी।

Delhi Shops and Establishments Act

*881. Shri Hem Barua: Will the Minister of Labour and Employment be pleased to state:

- (a) whether it is a fact that the Delhi Shops and Establishments Act has not been enforced in Kotla Mubarakpur area; and
- (b) the number of such areas in Dolhi to which this Act has not been applied?

The Deputy Minister of Labour-(Shri Abid Abi): (a) Yes.

(b) The Act has been applied to the erstwhile Municipal Committees of Delhi, New Delhi and Shahdara and the Notified Area Committees of Civil Lines, Mehrauli, Red Fort and Delhi Cantonment. It has not been applied to other areas yet.

Shri Hem Barua: May I know whether it is a fact that the employees' association of the Kotla Mubarakpur area has demanded the enforcement of this Act in that particular area and, if so, whether Government have so far received any resolution or memorandum from that association?

Shri Abid Ali: The Delhi Administration is in charge of this and it is doing the needful to apply the Act to the Kotla Mubarakpur area as well.

Shri Hem Barua: May I know the reasons behind the non-enforcement of this Act in certain areas of Delhi?

Shri Abid Ali: Formerly, as I have mentioned, they were not covered by the municipality. Now, by a notification, the Act will be applied.

Shri T. B. Vittal Rao: In the absence of the enforcement of the Shops and Establishments Act, may I know whether the Weekly Holidays Act at least is in force today?

Shri Abid Ali: That forms part of this Act. That is provided in the Act and it should be enforced.

Shri T. B. Vittal Rao: Sir, my question has not been answered.

की रामसित भाई कर्मा: क्या सरकार की यह मालूम है कि इस कार्नून का दिल्ली टाउन में अभल करने पर भी सक्बी मंदी एरिया में इसका अमल नहीं हो रहा है ?

भा प्राप्तिक भूती: जी हां, सन्ता वंदी में जो केंद्री पार तरकारियों की केंद्री है, वहां नहीं हो रहा है। 5025

Shri Radha Raman: In view of the changed conditions, namely, most of the areas falling under the Union territory are covered by the Municipal Corporation, may I know whether the Government is considering the application of the Shops and Establishments Act to all the areas covered by the Corporation, so as to create uniformity?

Shri Abid Ali: It is proposed to apply this Act to areas like Kotla Mubarakpur, Moti Nagar, Tilak Nagar, Kaka Nagar, etc. With regard to Subzi Mandi, the Act has not been applied to the market still.

Shri Prabhat Kar: In view of the fact that the Delhi Corporation has been functioning for more than a year now, and in view of the delay that has been undergone till now, may I know whether the Government will take steps to see that this Act is enforced immediately in all areas under the Corporation?

Shri Abid Ali: That is the intention. शहीवों के सिवे प्रसित्त भारतीय स्मारक

श्री मक्त वर्शन : श्री नवल प्रभाकर : श्री नवल प्रभाकर : श्री राम कृष्ण गुप्त : श्री बी० चंव शर्मा :

क्या निर्माण, भावास भीर संभरण मंत्री मित्रम्बर, १६५६ के तारांकित प्रकृत संख्या १२१८ के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या दिल्ली में स्वतन्त्रता संग्राम के शहीचों का भिक्षल मारतीय स्मारक बनाने के लिए सरकार भीर वास्तुकला विशारद के बीच करार की शतें तय हो गई हैं;
- ् (स्र) स्मारक बनाने के लिए क्या इंग्लें होंगी; भीर
 - (ग) निर्माण कार्य कब आरम्भ होगा?
- Dogger Hilliag of Works, Boundag and Supply (Shri Anil K.

- Chanda): (a) Not yet, Sir. A few comparatively minor points remain to be settled.
- (b) It will be a work of sculpture in bronze and the central theme of the memorial will be the great and determined march of the people of India towards Independence led by Mahatma Gandhi. Besides him, there will be a group of persons representing people from different parts of India and different walks of life. The statues will be of double life size.
- (c) No definite date can be indicated yet. However, the work will commence as soon as possible after conclusion of the agreement, sanction of the estimate and completion of other necessary formalities.

भी भक्त दर्जन : सन् ११५.७ में, जब कि हमने | जहीदों की शताब्दी मनाई थी, इस का निर्णय किया गया था और अभी तक इसके फार्म-स्प-अपित के बारे में ही विचार हो रहा है। अनः क्या माननी। पंत्री जी यह बताने की ग्रुपा करेंगे कि इसमें इतनी देरी क्यों हो रही हैं?

Shri Anii K. Chanda: A considerable time has been spent by the artist, who has been chosen for it, in preparing his ideas and schemes. Several discussions took place between the Government and the architect, and then, the terms of the contract also have taken a long time.

श्री भक्त बर्शन: क्या माननीय मंत्री जी यह बताने की कृपा करेंगे कि जब कभी भी काम शुरू होगा, तो इसके बनने में देर से दर कितना समय लगेगा?

Shri Anil K. Chanda: It is expected to take about six years and four months from the time the artist commences his work.

Shri D. C. Sharma: Will there be a symbolic representation in terms of the various episodes in the freedom struggle of our country, as has been done in Apkara about the revolutionary movement there?

Shri Anil K. Chanda: Obviously, this piece of sculpture will depict the heroic struggle of our people for independence. The main theme is more or less in the form of the sculpture statue which has been put up in Patna.

सेठ गोकिन्द बास: धभी मंत्री जी ने इस प्रश्न के उत्तर में जो कुछ कहा, उससे मालूम होता है कि यह स्मारक सिर्फ कुछ मूर्तियों इत्यादि वाला होगा, जिसका कार्य होगा शोभा। क्या इस पर भी विचार किया गया है कि इसके साथ ही कोई ऐसा चीज भी वहां बनाई जाये, जिसका उपयोग हो सके, जैमे पुस्तकालय, जिसमें हम शहीदों का कुछ साहित्य रख सकें, या ऐसी कोई दूसरी चीजे?

Shri Anil K. Chanda: It is not along with this scheme.

Dr. Ram Subhag Singh: May I know the expenditure incurred so far in considering these proposals and also in replying to the questions on this subject in this House?

Shri Anil K. Chanda: I am afraid I cannot answer that question. It may be just a few hundreds of rupees by way of travelling expenses of the artist.

Shri Goray: May I know the name of this sculptor?

Shri Anil K. Chanda: Shri Devi Prasad Roy Choudhuri.

Sale of Scooters in Delhi

+883. { Shri A. M. Tariq: Shri Bhakt Darshan:

Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to refer to the reply given to Starred Question No. 889 on the 28th August, 1959 and state:

(a) whether it has come to the notice of Government that the extra money deposited by the intending purchasers of scooters in Delhi has not been refunded to them so far; and

(b) if so, what action is being taken in this connection?

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah): (a) and (b). A statement is given below.

STATEMENT

As stated in reply to Starred Question No. 889 on the 28th August, 1959. Government had advised manufacturers to issue instructions to all the dealers to refund the excess amount to the persons concerned. The manufacturers acted upon this advice and instructed the dealers accordingly. However, to avoid complaints of this nature, fresh instructions have been issued to the manufacturers to the effect that hereafter no advance should be taken for registering orders for scooters, motor cycles and autocycles and that all advances taken in the past should be returned before the 31st December, 1959.

Shri A. M. Tariq: As is evident from the statement, the dealers have not taken the previous instructions very seriously. This is the fourth instruction issued in the last six months. I would like to know whether there is any proposal before the Government to take a very severe and strong action against the dealers or to ask the manufacturers to stop the quota, if the dealers do not take these instructions seriously, and further,....

Mr. Speaker: The hon. Member has put one question. No further question can be put in the same question!

Shri Manubhai Shah: I can assure the hon. Member that the dealers have taken to it more scriously. I gave an assurance to the House a few days back. Instructions have been issued. 31st December is the date that has been fixed, and practically most of the dealers will have returned the money by then. Also one more step we have taken is, we have asked them in future not to take any deposits at all.

Shri A. M. Tariq: May I know whether these instructions cover. Delhi only or the whole of India, because in other parts of India, especially in Punjab, they have not returned the advance; they have refused to do so?

Shri Manubhai Shah: It is applicable to the whole of India.

श्री भवत बर्जन: माननीय मंत्री जी के ष्यान में यह बात धाई होगी कि स्कटर कैशनेबल मोसाइटी की एक चीज हो गई है भीर अधिक से अविक लोग इसका उपयोग कर रहे हैं। ऐसी सुरत में क्या इसको प्राप्त करने के रास्ते में जो भड़चनें हैं उनको दूर करने की क्या कोई कोशिश की जा रही है भीर क्या अधिक से ग्रधिक मात्रा में इनको सप्लाई करने के लिए कोई कदम उठाए जा रहे है?

श्री मनभाई शाहः हम इसको फैशनेबल सोसाइटी का वीहिकल नहीं समझते है. वह तो यटिनिटी का वीहिकल है और उसके लिए ज्यादा से ज्यादा तवज्जह दी जा रही है।

Shrimati Ila Palchoudhuri: Is the Government aware that a number of scooters are being sold in the blackmarket after this deposit money has been paid and they are resold again? Will Government consider putting a ban on the sale of scooters for a certain period-a time bar-as they have done in the case of cars?

Shri Manubhai Shah: The scooter is a small vehicle on which a big amount of control does not seem to be very much called for. We are trying to see that production is increased and as much satisfaction of the demand takes place as possible.

Is Government Shri Mahanty: aware that the scooters are the worst possible nuisance on the road may I know whether the manufacturers will be asked to provide a silencer?

Shri Tangamani: May I know how much of the advances received by the dealers have been refunded since 23-8-59 and how much is yet to be repaid?

Shri Manubhai Shah: Orders have been passed only very recently. How can figures be collected by now?

Mr. Speaker: The hon. Minister has said that by 31st December, all the advances will be refunded and no more advances will be received. Let us wait and see.

Textile Mills Contribution to Provident Fund

*884. Shri S. M. Banerjee: Shri Tangamani: Shri Panigrahi:

Will the Minister of Labour and Employment be pleased to refer to the reply given to Starred Question No. 298 on the 11th August. 1959 and state:

- (a) what further action has been taken against the textile mills which have not paid their share of provident fund so far: and
- (b) the amount recovered so far from these textile mill-owners?

The Parliamentary Secretary to the Minister of Labour and Employment and Planning (Shri L. N. Mishra): (a) Prosecution and recovery proceedings have been instituted.

(b) Rs. 86 lakhs by the end September, 1959.

Shri S. M. Banerjee: In reply to a previous question, it was said that amount outstanding as on 31-12-1958 was Rs. 71.23 lakhs. I want to know whether after this date they have paid regularly these amounts of provident fund and if not, who are the defaulters?

Shri L. N. Mishra: There been some defaulters and there has been delay in payment also. balance comes to Rs. 193.50 lakhs.

Mr. Speaker: He wants to more particulars.

Shri L. N. Mishra: I have stated that Rs. 86 lakhs have been recovered. भी रामसिंह भाई वर्मी: नया परकार को यह मात है कि कुछ कपड़ा मिलों के ऊपर इतनी प्राविटडेंट फंड की रक्षम जमा हो गई है जितनी कि उनकी मूल कीमत भी नहीं है। ऐसी हालत में उन मिलो से प्राविडेंट फंड की रक्षम वसूल करने के लिए यदि उन्हें मीलाम किया गया भीर उसके फनस्वरूप भी कम रक्षम प्राप्त हुई हो सरकार क्या करने वाली है?

भी लं ना सिक्ष: यह बान नहीं है कि रक्ष बाकी है जीकन जो यह कहा गया है कि बहुत ज्यादा बाकी है मौर भयंकर स्थिति है, बैती बात नहीं है। यह समझ लिया जाना बाहिए कि डंड सौ करोड़ में करीब दो करोड़ बाकी है। इस तरह में ६७ परसेंट या ६८ परसेंट या १६ परसेंट या १६ जाती है। लेकिन यह भी सही है कि कुछ मिजों के जिन्मे काफी रकम बाकी है।

Shri Tangamani: During the last occasion we were told that the past accumulation is Rs. 78 lakhs and the current dues are Rs. 121 lakhs, making it nearly Rs. 2 crores. I would like to know whether still the outstanding is Rs. 2 crores after Rs. 86 lakhs have been paid or whether the current dues are being paid regularly.

Shri L. N. Mishra: The current dues are paid, but I would not say regularly. There are defaulters still. As I have said earlier, the balance still to be recovered on 30th September comes to Rs. 193:50 lakhs.

Shri T. B. Vittal Rao: An amendment of the scheme with a view to making payments to workers of the defaulting mills from the reserves of provident fund has been under consideration.

May I know at what stage is the proposal?

Shri L. N. Mishra: It is under

Shri T. B. Vittal Rao: For how long is it under consideration?

Shri L. N. Mishra: It should not take very long.

Shri S. M. Banerjee: The hon. Minister said that cases have been instituted against some of the mills. I want to know the number of millowners who have been finally punished.

Shri L. N. Mishra: All told, recovery proceedings have been launched against 4,025 units. The number of cases settled is 2,333 and the number of cases pending is 1692.

बी रामसिंह भाई वर्मा: श्रीमन्, मेरा निवेदन यह है कि कुछ मिलें ऐसी हैं जिनके ऊपर प्राविडेंट फंड की रकम इतनी श्रविक बमा ही गई है कि उन मिलों की जो कीमत श्रांकी जाती है, उससे श्रविक प्राविडेंट फंड की रकम है। कानून के अनुसार धगर उन्हें श्राज नीलाम भी किया गया तो भी रकम कम मिलेगी, ऐसी हालत में भै जानना चाहता हं कि गवनेमेंट वया सोच रही है ?

श्रम भीर रोजगार तथा योजना मंत्री (बी नन्दा): यह जो समस्या खडी हुई है यह ज्यादातर टेमटाइन मिल्म के सिलसिने में खड़ी हुई थी और उस समय खड़ी हुई थी जबिक एक पीरियड था डिप्रेगन का. कई कारखाने बन्द ही रहे थे, बन्द हए थे। उस वक्त यह सवाल हमारे सागने ग्राया कि उनके ऊपर भौर प्रामीक्यशन कर के या ग्रहेचनेंट कर के कार्खानों का चलना बन्द कर दिया गया तो फिर सैंकडों मजदूर बेकार ही जाएँगे। उस बक्त यह सवाल खड़ा हन्ना था कि ये बेकार न हों भीर अगर प्राविहेंड फंड का भीर वर्डन उनके जपर डाला गया और इसको वसूल करने की धगर कार्रवाई की गई तो उससे ज्यादा नुक्सान होगा । इसवास्ते यह वैतेंस करना

Shri S. M. Baneriee: The hon Minister said that this actually pertains to those units which were closed or facing closure. I want to know what action has been taken against those mills which were not facing any crisis, but still which did not pay the provident fund amount. What does the Government propose to do to stop the future recurrence of this?

श्री निषा: जो मैंने प्रभी कहा वह उस सवाल के जवाब में पा कि बहुत ज्यादा स्कम इकट्ठी हो गई है। बाकी यों तो करेंट जो बीज होती है, उसमें कुछ न कुछ रह ही जाता है धीर वह दो बार महीने के बाद घदा हो जाता है। इसका सबूत यह है कि जो टोटल आउट स्टेडिंग हैं, वे बढ़ नहीं रहे हैं। लाल्ट दो सालों की बात में बता रहा हू। वे कम हो रहे हैं।

Shri Tangamani: On the last occasion, we were told that from some textile mills in Madhys Pradesh, nearly Rs. 50 lakhs was outstanding. May I know whether it has increased or decreased?

Mr. Speaker: The hon. Member is going into details of the various States. The total has been given and it has been said that it is not being allowed to increase.

Shri Tangamani: From Rs. 2 crores, it has gone up to Rs. 293 lakhs.

Shri L. N. Mishra: So far as Madhya Pradesh is concerned, current outstanding amount is Rs. 9:58 lakhs and the past accumulation is Rs. 25 lakhs. So, it comes to Rs. 34 lakhs.

Shri Hem Barua: May I know whether it is a fact that the Government proposes to abandon the original idea of increasing the provident fund rates by amending the Act, because of opposition coming mainly from the employers' organisations, as that of the employers' organisation in the textile industry?

Shri Nanda: This question of raising the rates of provident fund contribution is a very different one. It is not relevant here, but I may inform the hon. Member that possibly there is going to be a discussion on this subject before the end of the session.

Stocks of Cloth with Textile Mills

*885. Shri Sadhan Gupta: Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to state:

- (a) whether stocks of cloth with Textile Mills have been gradually declining since last year;
- (b) if so, the number of bales in stock at the end of each month beginning from 30th June, 1959;
- (c) whether cloth famine is apprehended as a result of declining stocks; and
- (d) if so, the steps taken in the matter?

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah): (a) to (d). A statement is given below:

STATEMENT

- (a) Yes, Sir.
- (b) The stock position at the end of each month beginning from June, 1959 is given below:

| Unsold | Sold | Total | | | | |
|-----------------|----------------------|--|--|--|--|--|
| (In Lakh Bales) | | | | | | |
| 2.04 | 1.95 | 3.99 | | | | |
| 2.07 | 2.05 | 4.12 | | | | |
| 1 87 | 1.97 | 3.84 | | | | |
| 1.81 | 1.92 | 3 · 73 | | | | |
| 1.56 | I · 78 | 3·3 4 | | | | |
| | 2·04 2·07 1·87 | (In Lakh Bal 2.04 1.95 2.07 2.05 1.87 1.97 1.81 1.92 | | | | |

(c) and (d). There has been a progressive decline in the stocks of cloth with the mills from the commencement of the current year. However, the reports received by Government indicate no shortage of cloth supplies or apprehension of cloth famine in the country.

5035

Shri Sadhan Gupta: I find from the statement that the Government does not apprehend any cloth famine, although the stocks are gradually declining. On what is this optimism based?

Shri Manubhai Shah: The main basis is the capacity of the Indian industry in textiles to produce cloth. As the House will recall, in 1957 we had a record production of 5,317 million yards. The production in the current year is about 4,900 million yards. If more cloth is required, it will be produced as per demand.

Shri Sadhan Gupta: Is there any possibility of cloth production being restricted in order to make profits?

Shri Manubhai Shah: That does not arise because of the number of cotton textile mill units. The handloom industry is growing in great strength and the production by power-loom industry is also growing. There are more than 500 mills producing cloth and all could not be expected to join together to keep down production. Even so Government is keeping a continuous watch on this situation.

Shri Assar: May I know whether it is a fact that the production of cloth is decreasing on account of the closure of textile mills for the last six months? If so, is there any scheme to re-organise and rationalise the industry to maintain the production?

Shri Manubhai Shah: This question has been debated in this House several times. Closure would not have any direct connection with the production. While there are closures, there are new units coming up, and other units producing more than before.

Shri S. M. Banerjee: Some two or three years back there was a huge stock of medium and coarse cloth with us and we had no markets for them. What is the present condition of that stock? Are we in a position to dispose of that stock?

Shri Manubhai Shah: After the imposition of the new excise duty,

which was more rationalised to control the pattern of production, the tendency to go in more for lower medium and coarse varieties has been halted, and now it is more in line with the consumer's demand.

Shri Rameshwar Tantia: May I know whether it is a fact that the cotton position also is not sufficient and, if so, whether Government is going to import more cotton so that the mills can work an extra shift to avoid shortage of production?

Shri Manubhai Shah: The cotton position is being separately considered and necessary imports are going to be allowed from time to time.

श्री रामसिंह भाई वर्मा: क्या श्रीमान् को यह जात है कि काटन का भाव बहुत श्रीयक बढ़ जाने से कपड़े की कीमत भी बढ़ती जा रही है? यदि हा, तो काटन के दाम न बढ़ते हुए कपड़े के दाम घटें श्रीर लोगों की जरूरन पूरी हो, इस सम्बन्ध में कुछ, सोचा गया है?

श्री सनुभाई शाह: सारी कोशिश तो यही रही है कि काटन की अबे ने बिनटी जितनी अबिक बढ़ सकती है उतनी बढ़ाई जायें भी उसके दाम जो नी निम्न प्राइस है उसके आस-पास रहें।

Shri C. D. Pande: May I know whether Government is aware of the fact that the cotton textile industry is the only item of industrial production where the level of production has not gone beyond the level of 1951? If so, do Government propose to meet the market's demand by rationalising and automatising the whole process?

Shri Manubhai Shah: While I agree with the second part of the question of the hon. Member regarding the utmost need for modernisation. I would remind him of the statistics of 1951 to show that whereas the production then was only 4,076 million yards, in the current year it is 4,913 million yards, and it has gone up as much as 5,300 million yards for some time in

1957. Therefore, it would not be right to say that the industry has stagnated since 1950, though the need for modernisation and automatisation is already there.

Shri C. D. Pande: In 1957 the production was 5,400 million yards and today it is 4,900 million yards. So, even if you compare it with the 1957 figures, the production has gone down by 500 million yards.

Shri Manubhai Shah: This is another aspect—the figures for 1957. The hon. Member was earlier referring to the year 1951. In the year 1957, as the whole House is aware, the production reached the peak figure because of sudden demand from various sources. It has slightly tapered off but it is again picking up.

Shri Khimji: Are Government aware that the price of cotton has reached a high level?

Shri Manubhai Shah: This again is a separate question. We are fully aware of the cotton situation and, as the hon. Members and the House is aware, several steps have been taken by the forward Markets Commission in recent days in this matter.

Shri Khimji: What are those steps?

Shri C. R. Pattabhi Raman: What steps are the Government going to take to modernise the machinery and bring them up to date?

Shri Manubhai Shah: If you permit me, I would like to state.....

Mr. Speaker: It does not arise out of this question.

Anti-Indian Propaganda in Cairo by Chinese News Agency

*886. Shri D. C. Sharma: Will the Prime Minister be pleased to state:

(a) whether Government have any information regarding the anti-Indian propaganda carried out by the Chinese News Agency Hsinhua in Cairo; and

(b) if so, action taken in the matter?

The Parliamentary Secretary to the Minister of External Affairs (Shri Sadath All Khan): (a) Yes. The Chinese official news agency Hsinhua, at Cairo, has been issuing a daily news bulletin with effect from the September, 1959. The bulletin contained official Chinese statements about Tibet and Sino-Indian border question. The bulletin also statements of Panchen Lama and editorial comments from journals in communist countries supporting Chinese stand.

(b) About two months ago, the question of publication of some anti-Indian material in Hsinhua bulletins was taken up by our Embassy in Cairo with the Foreign Office of the United Arab Republic. We are informed that the Hsinhua representative was told, through the Chinese Embassy, that 'UAR cannot allow hostile propaganda against friendly countries, with the specific clarification that hostile propaganda against India will not be countenanced'. No anti-Indian material has since been noticed in Hsinhua bulletins.

Shri D. C. Sharma: Is the Government aware of the fact that anti-Indian propaganda is being carried on near our borders and that Chinese maps and leaflets and all kinds of things are being circulated? If that is the situation, may I know what the Government of India is doing to stop this kind of propaganda, which shows the Chinese as the liberation army and all that kind of thing?

Mr. Speaker: How does that arise out of this question? This is about Cairo.

Dr. Ram Subhag Singh: May I know whether at the time of the publication of this bulletin by the Chinese Embassy in Cairo, our Public Relations Officer, or Division of our Embassy has published anything to give a clear picture of the situation to the population of UAR?

The Prime Minister and Minister of External Affairs (Shri Jawaharia) Nehru): Our Public Relations Officers are constantly, from day to day, issuing materials towards this end. I have not personally seen them exactly but that is their daily function.

Oral Answers

सेड यो बिन्द दास : काहिरा के सिवा भारत के विरोध में क्या चीन का प्रचार कहीं भीर भी हो रहा है, भीर यदि इस प्रकार की सूचनायें भारत सरकार को मिली हैं तो क्या इस के सम्बन्ध में कुछ किया जा रहा है ?

प्रकाश महोदय : यहां या कैरो में ?

एफ मामनीय सदस्य : ग्रीर जगह ।

सेंड गोबिन्द हास : सारे संसार में ।

Mr. Speaker: I am not allowing this question, as the main question relates to anti-Indian propaganda in Cairo.

श्री रधुनाथ सिंह : मैं यह जानना चाहता .हं कि साउथ ईस्ट एशिया में जहां पर चीनी लोग और हिन्दस्तानी लोग साथ साथ रहते है भौर चीनी लोगों की ग्राबादी करीब २० प्रतिशत है, हिन्द्स्तान के दिष्टकोण को चीनी भाषा में रखने का क्या ग्रभी तक कोई प्रयास हमा है ?

ग्रह्मक महोदय : यह भी ग्रलग बार है।

श्री रचनाय सिंह : चीनी भाषा में ।

ग्राप्यक्ष महोदय : में जानता हं।

Shri Hem Barua: May I know whether it is a fact that China is concentrating all anti-Indian propaganda mainly in the countries usually known in the international parlance as 'small countries', like Egypt, Sweden, Norway. Denmark and other Scandinavian countries, where our case has gone by default due to lack of adequate prementation?

Shri Jawaharial Nohru: This is hardly a question. It is a statement containing a large number of assumptions, mostly untrue.

Shri D. C. Sharma: May I know the kind of propaganda material issued by our Embassy in UAR to counteract their propaganda-leaflets and others?

Mr. Speaker: The same question was put by another hon. Memberwhat is the counter propaganda carried on by our Embassy?

Shri Sadath Ali Khan: We issue our bulletins from time to time, presenting our viewpoint.

Regularisation of Constructions by Displaced Persons in Delhi

*887. Pandit Thakur Das Bhargava: Will the Minister of Works, Housing and Supply be pleased to state:

- (a) whether all the constructions built on land in unauthorised occupation of displaced persons in Delhi prior to the 15th August, 1950 have been regularised;
- (b) if not, the particulars of such constructions which are still awaiting regularisation;
 - (c) the reasons for the delay; and
- (d) the time by which all constructions of displaced persons in Delhi would be regularised?

The Deputy Minister of Works, Housing and Supply (Shri Anil K. Chanda): (a) to (d). A statement is placed on the Table of the House. [See Appendix III, annexure No. 28.]

Shri Vajpayee: May I know whether there is any proposal to build cheap houses for the 9,000 families that are still to be rehabilitated in Delhi?

Shri Anil K. Chanda: No, sir. The proposal is to give them alternative sites. The question of building houses for them does not arise.

Shri Tangamani: We thet 20,000 families have been provided with alternate sites. May I know the time likely to be taken for providing alternate sites to the remaining 9,000 families?

Shri Anii K. Chanda: It is a separate question. We are taking all possible steps to acquire suitable lands in the neighbourhood.

Sale of Canvas and Road Building Material to China

*889. Dr. Ram Subhag Singh:
Shri Shree Narayan Das:
Shri Rameshwar Tantia:
Shri P. C. Borooah:

Will the Prime Minister be pleased to state:

- (a) whether it is a fact that large quantities of canvas and road building implements are sold to the Chinese in Tibet by Indian businessmen; and
- (b) if so, action Government propose to take in the matter?

The Parliamentary Secretary to the Minister of External Affairs (Shri Sadath Ali Khan): (a) and (b). Demand for these items showed an increase from September onwards but since these materials are in short supply and are required for internal consumption, the Government of India have considered it expedient to control the export of these goods to Tibet.

percentage demand for canvas boots and road building implements has increased? What was the supply made by India to the Chinese or to the Tibetan region of China?

Mr. Speaker: In any particular year?

Dr. Ram Subhag Singh: Yes.

The Prime Minister and Minister of External Affairs (Shri Jawaharlal Nehru): The hon. Member has not mentioned any period or anything. Anyhow, not only can I not answer that question immediately, but I doubt if I can answer it at any other time, because no accurate particulars of the things gone in the past there

have been kept. Normal traffic was going on there. Among the things that are in short supply here at any rate are cement, steel, petrol, iron sheets, paraffin, kerosene oil, pick axes, shovels, canvas and such like things.

Dr. Ram Subhag Singh: Has it come to the notice of the Government that some Indian shovels, spades and other road building materials have reached the Chinese in the Tibetan region of China? If so, has any effort been made to inquire into the fact as to how those things reached there?

Shri Jawaharlal Nehru: They were sold in the ordinary course of trade, before their export was prohibited. They just went there. There are a large number of Indian shops in Yatung and Gyantse. They imported them from their representatives in India and sold them. There is nothing unusual about that. No enquiry is needed. But later on this has been stopped.

Shri Shree Narayan Das: May I know whether any assessment has been made as to the extent to which these restrictive or control measures have proved effective? The information, as some newspapers have published it, is that these materials as they are required for the Chinese people for such purposes are being smuggled in large quantities.

Shri Sadath Ali Khan: We have been informed by our Political Officer in Sikkim that after the ban was imposed roundabout 29th September, 1959, there has been no further smuggling of these goods. There has been a control after that.

shri P. C. Borooah: May I know whether these Indian businessmen were in Tibet long before the trouble broke out there or whether the Indian businessmen, who are directing their business, are remaining in India?

Mr. Speaker: That is a different matter altogether.

5043

Shrimati Mafida Ahmed: In view of the fact that foodstuffs are also being illegally exported from India by unscrupulous traders to feed the Chinese troops on the border, may I know whether any smuggler has been detected so far?

Mr. Speaker: That is a different matter.

Fertiliser Plant at Kothagudium

*891. Shri T. B. Vittal Rao: Shri Tangamani: Shri M. R. Krishna: Shri Madhusudan Rao:

Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to refer to the reply given to Starred Question No. 294 on the 11th August, 1959 and state:

- (a) at what stage is the proposal to set up a fertilizer plant at Kothagudium, Andhra Pradesh;
- (b) whether there is any prospect of undertaking this project during the Second Five Year Plan period; and
- (c) the nature of assistance that is being granted to the State Government in this respect?

The Deputy Minister of Commerce and Industry (Shri Satish Chandra):
(a) The proposal to establish a fertilizer facory at Kothagudium as a State Government project in the public sector has been approved by the Government of India. The responsibility for the implementation of the project rests with the State Government.

- (b) The State Government have informed us that preliminary action has been initiated and that work on the project will be taken up in the Second Five Year Plan and completed in the Third Plan period.
- (c) The State Government have been assured that foreign exchange required for the import of plant and equipment will be suitably arranged and that all possible assistance will

be extended by the Centre in the planning and execution of the project.

Shri T. B. Vittal Rao: May I know the amount of foreign exchange asked for by the State Government?

Shri Satish Chandra: Foreign exchange which may be required during the Second Plan period will not be much. It is about a crore of rupees that they have asked during the plan period.

Shri T. B. Vittal Rao: Which are the foreign firms that the State Government has so far contacted for establishing this fertiliser factory?

Shri Satish Chandra: We do not have these details. The State Government addressed several firms. But our latest information is that Sindri will be appointed as the technical consultants to this factory.

Shri Tangamani: May I know whether the Government of India will make available foreign exchange to the extent of Rs. 1 crore that the State Government have asked for out of Rs. 7 crores which they will require for the entire fertiliser plant?

Shri Satish Chandra: About Rs. 11 crores will be required for the entire plant. It is not Rs. 7 crores, but Rs. 11 crores. Rs. 1 crore may be required for preliminary expenses such as placing of orders etc. This also is not required immediately, but it might be required in a year or so. That will be made available to them.

Shri Thirumala Rao: Is the whole capital being subscribed by the State Government itself or is the Central Government also helping it to some extent?

Shri Satish Chandra: The Central Government is not participating in the share capital of the company. It is possible that the State Government might, at a later stage, come up for some loans from the National Finance Corporation. But, for the present, all the capital is being subscribed either by the Andlara Government or by the

industrialists and the peasantry of Andhra.

Shri Nagi Reddy: What is the total capacity of the plant? Is the capacity of the plant as originally estimated going to be kept at the same or is it going to be reduced?

Shri Satish Chandra: According to the technical committee's report, on the basis of which we are proceeding, the capacity is 80,000 tons of nitrogen partly to be produced partly in the form of urea and partly in the form of nitrophosphates.

Export of Manganee Ore to U.S.A.

*892. Shrimati Ila Palchoudhuri: Shri Panigrahi: Shri Mohammed Imam: Shri Achar: Shri Muhammed Elias: Shri Hem Barua: Shri S. A. Mehdi:

(Shri N. M. Deb:
Will the Minister of Commerce
and Industry be pleased to state:

- (a) whether it is a fact that India is losing her position as a traditional exporter of managanese ore to the United States of America;
- (b) if so, the causes and extent of deterioration in the export position; and
- (c) the steps taken or proposed to be taken in the matter?

The Deputy Minister of Commerce and Industry (Shri Satish Chandra):
(a) The exports had fallen in 1958. The declining trend now appears to have been arrested.

(b) and (c). Three statements are laid on the Table of the House. [See Appendix III, annexure No. 29.]

Shrimati Ila Palchoudhuri: From the statement I find that one of the steps to be taken immediately to arrest this decline is to do away with the imposition of the labour welfare cess of Rs. 2 Per ton on manganese ore. That has been done. Is there no other method of arresting the decline in exports?

Shri Satish Chandra: The hon. Member will see from the statement that a number of measures taken so far are included therein. The labour welfare cass of Rs. 2 per ton has not been given up altogether. It has been deferred for the paresent till conditions in the manganese export trade are slightly better.

Shrimati Ila Palchoudhuri: Is Government aware that exporters used to finance the manganese mines to a certain extent and the State Trading Corporation cannot do that? That is also one of the reasons for the decline in thate. Has Government any scheme to finance the small mines, because the small mines produce practically half the manganese ore?

Shri Satish Chandra: The hon. Member's question is perhaps based on the assumption that the State Trading Corporation is a monopoly exporter of manganese ore. That is not so. It is only one of the parties. The private trade is also in the field and continues to export manganese ore. The State Trading Corporation is taking all appropriate steps which are taken by other exporters to help the mine-owners

Shri Hem Barua: In view of the fact that the hon. Minister has spoken of Private traders, may I know whether the attention of the Government has been drawn to a statement made by Mr. Buskie, a member of the U.S. Trade Delegation to India, to the effect that lack of communications between the South Indian businessmen and the American market was largely responsible for this decline? If so, what steps Government have taken to improve this situation?

Shri Satish Chandra: I do not think that that statement was made in the context of the export of manganese

ore. It must have been a general observation in relation to the development of trade in various other goods which could go to the United States. As far as the manganese ore is concerned, we have been exporters to the States for a long time. The main reasons for the decline have been lower production of steel in America last year, a prolonged steel strike this year, large stocks being available in the States, development of mines in Brazil which is nearer and many other factors.

Shrimati IIa Palchoudhuri: Has the Government got any scheme to beneficiate the manganese ore as has been suggested by the Export Promotion Committee, because this, it is said, will be of great use to the export industry and will reduce space, as regards carriage also?

Shri Satish Chandra: The ferro manganese industry is also being developed in our country and now we have a large surplus of ferro manganese. It is equally difficult to find a market for it. We have got good manganese ore and poor quality manganese ore. Steps for beneficiation could certainly be taken if there is a demand.

Shri Panigrahi: According to the statement, it has been stated that the U.S. Government have revised the specifications for manganese ore and ferro-manganese. According to the revised specifications, it excludes 42 per cent. manganese ore and also ferro-manganese. What steps is the Government taking to find other markets for ferro-manganese and 42 per cent. manganese ore which have been excluded from U.S. trade?

Shri Satish Chandra: We are still trying to persuade the Commodity Credit Corporation that our low grade manganese ore and ferro-manganese, even though it has a slightly higher phospherous percentage, will be good enough for their market. The matter is still under discussion.

Mr. Speaker: The question-hour is over.

SHORT NOTICE QUESTION

दिल्ली हिन्दुस्तान स्टेन्डर्ड

मत्य सुचना प्रदन संख्या ७. श्री अवत दर्शन : क्या सूचना भी: सारण संत्री यह बताने की कृपा करने कि :

- (क) क्या उन का ध्यान दिनांक ४ दिसम्बर, १६५६ को नवभारत टाइम्स में प्रकाशित दिल्ली हिन्दुस्तान स्टेन्डर्ड कर्मचारी संघ के मंत्री के एक वक्तच्य की ग्रोर दिलाया गया है कि कमचारियों ने उस समाचार-पत्र के नाम ग्रादि के बारे में कोई विशेष मांग नहीं की ग्रीर कर्मचारी संघ ने प्रेस रजिस्ट्रार या जिला मजिस्ट्रेट को कोई पत्र नहीं लिखा ग्रांर दिल्ली हिन्दुस्तान स्टेन्डर्ड का प्रकाशन कर्मचारियों द्वारा नहीं किया जाता है;
- (ल) यदि हां, तो कभैचारी संघ के मंत्री का वक्तव्य कहां तक माननीय मंत्री द्वारा २ दिसम्बर, १६५६ को लोक-सभा में दिये गये वक्तव्य के प्रनुस्प हैं; ग्रीर
- (ग) क्या इस बारे में वास्तविक स्थिति संब्द की जायेगी ?

The Minister of Information and Broadcasting (Dr. Keskar): May I read the reply in English so that there is no misunderstanding.

Mr. Speaker: Very Well.

Dr. Keskar: (a) Yes, Sir.

(b) and (c). The facts of the case are as follows. The printer, publisher and editor of the proposed paper "Delhi Hindustan Standard" had made a formal request for allowing it to be registered as a separate paper. A dispute arose on this question between the proprietors on the one hand and

Hindustan Standard Workers Union and the Delhi Union of Journalists on the other and it was referred to a national tribunal.

Both the parties, i.e. the proprietors on the one hand and the Hindustan Standard Workers Union Delhi Union of Journalists other, arrived at a settlement on the 29th of June, 1958, mutually satisfactory to both.

Some Representatives Of the workers and Working Journalists saw the Press Registrar and later met me also and gave a copy of the agreement arrived at between both the parties. It was represented by them that in view of the agreement arrived at between both the parties and in view of the possibility of considerable unemployment if the paper had to close down the title of the paper as proposed might be permitted.

In view of the agreement and more especially of the possibility of some unemployment resulting, it was decided to advise the acceptance of title. In my statement in Parliament on December 2, it is nowhere stated that the Union wrote a formal letter to the Press Registrar or the Government, but it is a fact that some representatives of the workers did see the Registrar and also myself immediately after the signing of the agreement.

In the statement made on December 2, I did not say that the workers managing the paper. that the workers said was are carrying on the paper, by which it was meant that the same workers are continuing to carry on the paper, meaning thereby that no one is being thrown out. I am sorry the absence of the word "same" has led to this misunderstanding.

Any advice to be tendered to District Magistrate regarding title is the responsibility of the Registrar. my statement I had only outlined the reasons which had then inclined us to give advice as tendered in this particular case. As I said in my reply, we later felt that its implications many and this need not be permitted again.

श्री भ≢ः दर्शाः । मानतीय मंत्री जी के जत्तर से यह स्पष्ट है कि एक प्रकार से गलतफहमी के प्राधार पर यह ग्राखें िकेशन किया गया था और दिन्ती हिन्दस्तान स्टेंडई का नाम रखने की इजाजत दी गयी थी। तेसो स्थिति में क्या सम्बन्धित श्रवितियम के ग्रन्तर्गत वह ग्रंपने ग्रधिकारों का उपयोग कर के नये सिरं से इस प्रदन पर विचार करने की तैयार है। या ग्रगर उस ग्रधिनयम में ऐसी सुविधा नहीं है तो क्या वह ग्रधिनियम की सविधाओं को बाही बाजे का कियार करेंगे ?

डा॰ कंसफर: ऐसा नहीं है कि गलती हुई है। किसी प्रकार का टाइटिल देने का ु उमको मलाह देने का ग्राधिकार रजिस्टार या गवर्नमेंट को है। इस प्रकार की सलाह देना सब बातों को प्यान में रखने हुए उचित था या नहीं, यह प्रश्न ग्रवण्य है। लेक्टिन में इसको ग ती मानने को तैयार नहीं है।

श्री भंकर दर्शन : जहां तक मूझ को जात है, उस समय दिल्ली हिन्दस्तान स्टेन्डई के कर्मचारियों ने इस बात से इसलिये ग्रपनी शहमति प्रकट की थी कि उनको जो बेरन क्रम बा॰ श्रेणी के पत्रों को मिलना चाहिये मिलता रहेगा । लेकिन बाद में उनके मालिकों ते प्रपने उस ग्राश्वासन को भंग किया । तो क्या भव माननीय मंत्री जी इस बारे में भदाखिलत करके उनको वह वेतन कम दिलाने की कपा करेंगे ?

डा० केसकर : यह बात अवश्य है कि उस वक्त यनियन भीर दिल्ली हिन्द्स्तान स्टेंडर्ड के प्रोपराइटर्स के बीच में जो समझीता हो गया उसी के कारण मुख्यतः हम ने सहमति दे दी क्योंकि हम नहीं चाहते ये कि काफी अरनेलिस्ट बगैरह बेरोजगार हो जायें। सब भगर इस समय कोई झगडा उन दोनों के

बीच में हो तो उसमें गवनमेंट जो कुछकर सकती है उसको करने के लिये में भवक्य लेबर मिनिस्टर से कहना।

Shri Joachim Alva: We have two types of cases. Here is one case of journalists thrown out of a daily wanting to run their own paper to keep the paper going. We see the other case in Madras where the Journalists are struggling to start a daily paper on co-operative lines. I want to ask the hon. Minister one bit of information. Does he sit with folded hands and see the struggling journalists start a paper, import machinery and try to collect moneys? On the other hand, we have a few press owners who could get credit to the extent of Rs. 50 lakhs from Bank when their affairs are under investigation. What aid is the Government giving to the struggling journalists to start a paper on co-operative lines? When their affairs are under investigation, they get credit. I want to know this specifically from the hon. The hon. Minster must Minister. give a reply.

Mr. Speaker: Does it arise out of this question?

Shri Joachim Alva: Yes, Sir. I will tell you how it arises. We have a case in Delhi where journalists are struggling to start a daily when the paper was closed down. The other day....

Mr. Speaker: I shall avoid further discussion. The hon. Minister.

Dr. Keskar: I submit this does not arise out of the question.

Mr. Speaker: The question is whether they are entitled to use the same name or not.

Shri C. K. Bhattacharya: Will the hon. Minister lay on the Table the application of the Delhi Hindustan

Standard for a title and the letter sent, to which he referred in the discussion on the Press Registrar's report on the 24th November, from the original owners of the paper consenting to the grant of the title, any letter that he might have written to the Law Ministry for opinion that exception could be made under the proviso to section 6 of the Press and Books Registration Act, the opinion that the Law Ministry might have given that the exception is warranted by the Act and the evidence tendered by Ananda Bazaar Patrika Ltd. regarding Hindustan Standard, Delhi, before the Wage Committee at Calcutta? These five things I require to be laid on the Table of the House before this thing can be made clear.

Mr. Speaker: I cannot ask any hon. Minister to give an assurance on the floor of the House. If the hon, Member puts down a request, I will pass it on to the hon. Minister to consider it more leisurely.

Dr. Keskar: As far as the question whether any such permission given is legal or not, that can always be challenged and settled according to legal methods. Whatever we did we did after careful consideration. For practical reasons we thought we should not do it in future, that is all, but we have taken whatever advice we felt necessary. Any such confidential things in the file of Government, I may submit, cannot be laid on the Table of the House.

Shri C. K. Bhattacharya: May I submit that the evidence tendered before the Wage Committee in Calcutta was tendered openly? That is not a confidential document, and that is necessary in this connection because the statement that the Minister on December 2, made clarifying his previous statement on the 24th November is inconsistent with the original

statement. In the original statement he stated that the title was granted because consent was obtained from the original owners of the goodwill and in the clarifying statement he says the title was granted because the workers came to him representing that it was a workers' paper. two things do not tally. Which one of them is correct?

Dr. Keskar: I may say that both the things are correct. Of course, I did not mention the question of the consent of the owner because the owners have given a formal consent, but to me that was not an important thing, because it is possible that an owner might sell his goodwill in something for a considerable sum of money. us that is not a very important factor. but in this case the owner has given m formal consent also. I said that what inclined us to give our consent, was or rather permission, to have this title accepted was mainly the reason that an agreement had been arrived at between the union and the owners and probably some people might be thrown out of employment if we did not give the permission.

Shri C. K. Bhattacharya: One question more, Sir. As the presiding authority over this House, you are the custodian of its rights and privileges.

Mr. Speaker: What is it that he wants?

Shri C. K. Bhattacharva: I want to know whether the Ministers have the right to over-ride the legislation that is passed by this House. The proviso to section 6 gives Ministers no power to make an exception. advised him that this exception could be made, and how did he make the exception under the proviso? As an eminent lawyer, Sir, you can go into the proviso and find for yourself whether it is warranted.

Mr. Speaker: There is no point of order in this. All that I can say is that I am sure, and the hon. Minister will also agree, that no Minister will just disobey or go contrary to the provisions of any law that is passed here. but possibly he may say that it does not arise out of this law. I cannot help it.

Shri C. K. Bhattacharya: Sir, you have made an assumption in his favour!

WRITTEN ANSWERS TO QUESTIONS

Indian Trade Centre at Beirut

*888. Shri Pangarkar: Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to refer to the reply given given to Starred Question No. 184 oz the 6th August, 1959 and state:

- (a) whether Government have since decided to open a trade centre at Beirut; and
 - (b) if so, when?

The Deputy Minister of Commerce and Industry (Shri Satish Chandra): (a) The proposal has been dropped for the present.

(b) Does not rise.

Ambar Charkha

*890. Shri Bibhuti Mishra: Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to state:

- (a) whether Government are aware that the Khadi and Village Industries Commission have restricted the supply of Ambar Charkha to users: and
 - (b) if so, the reasons therefor?

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah): (a) and (b). No. The Commission has, however, imposed more stringent conditions on the distribution of charkhas to trained spinners in order to reduce the number of idle charkhas to the minimum.

Land for Adivasis in Dandakaranya Arca

*893. Shri Sanganna: Will the Minister of Rehabilitation and Minority Affairs be pleased to refer to the reply given to Starred Question No. 1151 on the 4th September, 1959 in respect of Dandakaranya Project and state:

- (a) whether any land has since been allotted to the Adivasis; and
- (b) if so, to what extent and in which localities?

The Minister of Rehabilitation and Minority Affairs (Shri Mehr Chand Khanna): (a) and (b). 203 acres in Bastar District of Madhya Pradesh have been earmarked and placed at the disposal of the District Authorities for allotment to Adiyasis.

Rehabilitation Wing of the Indian High Commission at Karachi

*894. Shri Ajit Singh Sarhadi: Shrimati Ila Palchoudhurl: Shri Rameshwar Tantis Shri Muhammed Elise

Will the Minister of Rehabilitation and Minority Affairs be pleased to state:

- (a) whether the Rehabilitation Wing of the Indian High Commission at Karachi has been closed down recently; and
 - (b) if so, the reasons therefor?

The Minister of Rehabilitation and Minority Affairs (Shri Mehr Chand Khanna): (a) Yes,

(b) Due to the staff having practically no work on account of the virtual non-implementation of the Movable Property Agreement by the Government of Pakistan.

Tar Distillation Plant at Durgapur

*895. Shri Aurobindo Ghosai:
Shri Subiman Ghose:

Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to state:

- (a) whether it is a fact that the Government of West Bengal have approached the Central Government for permission to instal a tar distillation plant at Durgapur; and
- (b) if so, whether permission has been given?

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah): (a) and (b). Yes, Sir

Chinese Competition in Export Trade

*896. Shri Vidya Charan Shukia: Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to refer to the reply given to Starred Question No. 1460 on the 22nd September, 1958 and state:

- (a) whether the situation arising out of China's severe competition with our export trade has since been assessed; and
- (b) if so, what are the conclusions arrived at?

The Deputy Minister of Commerce and Industry (Shri Satish Chandra): (a) Yes. Sir.

(b) A statement is given below.

STATEMENT

- 1. China's competition with ndian articles in overseas sales has been noticed in the case of textiles, coal, engineering goods, and vegetable oils.
- 2. This competition was evident mostly in South East Asian Countries in 1958.
- China achieved a substantial increase in its quantum of trade with South East Asian countries.

4. It is apparent that the Chinese have been unable to sustain their export drive in 1959.

Provident Fund Benefits to 1.1.S. Co. Workers

- *897. Shrimati Renu Chakravartty: Will the Minister of Labour and Employment be pleased to state:
- (a) whether the majority of workers lifting ore for Indian Iron and Steel Company, Gua are deprived of provident fund benefits: and
- (b) whether the benefits are proposed to cover all workers doing work of a permanent nature even if they are working under contractors?

The Deputy Minister of Lahour (Shri Abid Ali): (a) No.

(b) All workers, including those employed by contractors, who are directly connected with the manufacturing process carried on in the establishment and who fulfil the requisite conditions, are entitled to provident fund benefit.

Restrictions on Foreign Traders in Indonesia

*898. Shri Rameshwar Tantia: Will the Prime Minister be pleased to state:

- (a) whether it is a fact that the Government of Indonesia have placed certain restrictions on the retail trade by foreigners;
- (b) if so, how many Indians have been affected by these restrictions;and
- (c) what steps have been taken to safeguard the interests of Indian traders in that country?

The Parliamentary Secretary to the Minister of External Affairs (Shri Sadath Ali Khan): (a) Yes. By a decree issued on the 20th May, 1959, the Government of Indonesia have announced the withdrawal, with effect from the 1st January 1960, of licences and other facilities from all foreigners

for running retail shops and restaurants in rural areas. The decree does not apply to similar businesses in the larger towns.

- (b) About 200 Indian families are likely to be affected. More precise information is not at present available.
- (c) Instructions have been issued to the Indian Embassy in Indonesia to watch the situation and to assist, as far as possible, the resettlement of the affected families in the larger towns to which the decree is not applicable.

Corporation for Fertilizers Factories

*899 Shri Daljit Singh: Shri P. C. Borooah: Shri Rameshwar Tantia;

Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to state:

- (a) whether Government have a proposal to bring all the fertilizer factories in the Public Sector under a Corporation: and
 - (b) if so, the details of the proposal?

The Deputy Minister of Commerce and Industry (Shri Satish Chandra):
(a) and (b). It has been decided to bring the fertilizer units under the administrative control of the Ministry of Commerce and Industry under a single National Chemicals and Fertilizers Corporation. The details regarding the amalgamation of the Hindustan Chemicals and Fertilizers Ltd., which controls the Nangal and the Trombay projects and the Sindri Fertilizers and Chemicals Ltd., are yet to be worked out.

Uranium Deposits in Salem District

*900. Shri Narasimhan: Will the Prime Minister be pleased to refer to the reply given to Starred Question No. 315 on the 11th August, 1959 and State:

- (a) whether any further reports regarding uranium deposits occurring in Salem district have been received; and
 - (b) if so, the nature thereof?

The Parliamentary Secretary to the Minister of External Affairs (Shri Sadath Ali Khan): (a) and (b). In addition to the exploratory drilling which is in progress, some prospecting work by trenching at the surface has been carried out and some quantity of radioactive material has been collected for necessary tests. A thorough investigation is, however, necessary for determining the quality of the ore and also whether the occurrence is economically workable. The work is still continuing.

Exports to West Germany

- *901. Shri S. A. Mehdi: Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to state:
- (a) whether Government are aware that West Germany has imposed restrictions on Indian products like cotton textiles, coir products, and sewing machines; and
- (b) if so, the action taken in the matter?

The Deputy Minister of Commerce and Industry (Shri Satish Chandra):
(a) No fresh restrictions have been imposed but the restrictions in force in recent years have not yet been fully relaxed.

(b) Representations have been made to the Government of the Federal Republic of Germany and the matter has also been taken in the GATT forum. The Indian Government Trade Delegation to Western Europe also discussed the removal of these restrictions with the German authorities.

Textile Automatic Looms:

*902. Shri Tangamani: Shri Panigrahi:

Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to state:

- (a) whether it is a fact that Government have granted licences for the manufacture of textile automatic looms in India to five new units, who in their term will enlist foreign technical collaboration;
- (b) if so, the names of Indian and foreign firms who are co-operating in the scheme; and
- (c) how much foreign exchange will be saved if these five units start production?

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah): (a) to (c). A statement is laid on the Table of the House. [See Appendix III, annexure No. 30].

Manufacture of Bicycles

*903. Shri Nagi Reddy: Shrimati Parvathi Krishnan;

Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to state:

- (a) whether it is a fact that the manufacturers of bicycles with foreign collaboration have some definite territorial limitations in marketing their products outside the country; and
- (b) if so, what are the specified markets for export for different brands?

The Minister of Industry (Shri. Manubhai Shah); (a) Yes, Sir.

(b) A statement is given below:

STATEMENT

Name of Firm Brands of cycles manufac. Names of countries to which they tured. can market their products outside India. M/s. T. I. Cycles of India, Hercules and Phillips Pakistan, Nepal, Egypt, Burma Madras. and East European countries. M/s. Sen-Raleigh Industries, Raleigh, Rudgo, Robinhood, Pakistan, Nepal, Bhutan, Burma Calcutta. Whitworth and Humber. and East European countries. M/s. Hindustan Vehicles, Ltd., Hudson and Sunbeam. None. Patna. M/s. Wcarwell Cycle Co. of Wearwell Pakistan. India Ltd., Faridabad.

'India 1958' Exhibition

*904. Shri P. G. Deb: Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to refer to the reply given to Starred Question No. 23 on the 3rd August, 1959 and state:

- (a) whether private firms have preferred claims for compensation in respect of goods supplied and exhibited by them for the exhibition organised in connection with the Polish Trade Delegation in the 'India 1958' Exhibition grounds which were destroyed by fire in April, 1959;
- (b) the total amount of claims so preferred;
- (c) the amount of claims already settled; and
- (d) the period by which the remaining claims are to be settled?

The Deputy Minister of Commerce and Industry (Shri Satish Chandra): (a) Yes, Sir.

- (b) Rs. 56160.52.
- (c) Nil.
- (d) The question is under examination in consultation with the Ministry of Law.

Manipur Cement Control Order

*905. Shri L. Achaw Singh: Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to state:

- (a) whether it is a fact that Manipur Cement Control Order has been issued since November 11, 1959, whereby sale, purchase and stocking of cement has been put under control by the Manipur Administration;
- (b) whether before the promulgation of the above order cement was freely available at controlled rate in Manipur;
- (c) if the reply to part (b) above be in the affirmative, reasons for enforcing the Control Order; and
- (d) whether attention of Government has been drawn to the fact that after the issue of the Control Order stocks of cement have gone into the black market?

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah): (a) to (d). A statement is laid on the Table of the House. [See Appendix III, annexure No. 31].

President Nasser's Visit to India

*906. Shri Ram Krishan Gupta: Shri Rameshwar Tantia:

Will the Prime Minister be pleased to refer to the reply given to Starred Question No. 306 on the 11th August, 1959 and state:

- (a) whether the dates for the visit of President Nasser to India have been fixed; and
 - (b) if so, what are they?

The Parliamentary Secretary to the Minister of External Affairs Sadath Ali Khan): (a) and (b). No definite dates have yet been fixed. We are hoping, however, that President Nasser will find it possible to visit India early in April next.

Reclamation of Land in Dandakaranya Area

Shri Panigrahi: Shri S. M. Banerjee: Shri D. C. Sharma: *907.
∠ Shri Aurobindo Ghosal: Shri Haider: Shrimati Renu Chakravartty Shri Kistaiya:

Will the Minister of Rehabilitation and Minority Affairs be pleased to refer to the reply given to Starred Question No. 587 on the 20th August, 1959 and state:

- (a) whether any further progress has been achieved in the reclamation of land in Dandakaranya area;
- (b) if so, the total acreage of land reclaimed by now;
- (c) whether the reclaimed have been distributed amongst displaced persons; and
 - (d) if so, the details thereof?

The Minister of Rehabilitation and Minority Affairs (Shri Mehr Chand Khanna): (a) and (b). Land reclamation work in the Umarkote zone was started on October 29, 1959. 1,300 acres have since been reclaimed.

Work in the Paralkote region is expected to start during this month.

(c) and (d). Out of 2,000 acres of land reclaimed near Pharasgaon during the last operational season, 120 agriculturists displaced families have been allotted an area of 7 acres each. Another 203 acres have been placed at the disposal of the District Authorities of Bastar (Madhya Pradesh) for resettlement of Tribals Adivasis.

Fabrication of Complete Sugar Plants

Shri Subodh Hansda: *908. Shri S. C. Samanta: Shri R. C. Mahji:

Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to state:

- (a) the total number of sugar plants manufactured in the country so far;
- (b) the cost of production of each plant; and
- (c) how it compares with foreign made plant?

The Minister of Industry Manubhai Shah): (a) Complete sugar plants are at present being fabricated in the country. The two consortiums of manufacturers of sugar mill machinery have started the manufacture of complete plants, and 4 plants are expected to be manufactured and supplied by them ready for operation by January 1961.

- (b) The ex-works price of one complete plant of 1000/1250 tons capacity is about Rs. 84 lakhs.
- (c) Taking all relevant aspects into consideration, the price of the indigenous plant would compare favourably, with that of the imported plant.

Film on Mahatma Gandhi

*909. Shri S. M. Banerjee:
Shri Panigrahi:
Shri D. C. Sharma:

Will the Minister of Information and Broadcasting be pleased to refer to the reply given to Starred Question No. 1015 on the 1st September, 1959 and state the further progress made in the production of a full-length film on Mahatma Gandhi?

The Minister of Information and Broadcasting (Dr. Keskar): The available material has been sorted out and arranged in chronological order. After this has been scrutinised, production work will be taken up.

Portuguese Case in the International Court

Shri D. C. Sharma:
Shri Shree Narayan Das:
Shri S. M. Banerjee:
Shri Hem Barua:
*910.
Shri Bibhuti Mishra:
Shri Hem Raj:
Shri Tangamani:
Shri Aurobindo Ghosal:
Shri Halder:

Will the Prime Minister be pleased to refer to the reply given to Starred Question No. 291 on the 11th August, 1959 and state the latest position with regard to the Portuguese complaint to the International Court regarding Nagar-Hayeli and Dadra?

The Parliamentary Secretary to the Minister of External Affairs (Shri Sadath Ali Khan): The oral hearings which began at The Hague on the 21st September this year concluded on the 6th November. The Court's Judgment is now awaited.

Jammu and Kashmir Property in West Pakistan

Shri A. M. Tariq:
Dr. Ram Subhag Singh:
Shri Prakash Vir Shastri:
Shrimati Mafida Ahmed:
Shri S. A. Mehdi:

Will the **Prime Minister** be pleased to state:

(a) whether it is a fact that the Government of Pakistan have decided to auction the immovable properties of the Jammu and Kashmir State situated in West Pakistan; and

(b) if so, what steps have been taken by Government in the matter?

The Parliamentary Secretary to the Minister of External Affairs (Shri Sadath All Khan): (a) and (b). The subject is dealt with in a letter dated November 12, 1959 addressed by India's Permanent Representative in the U.N. to the President of the Security Council, copy of which is laid on the Table of the House. [See Appendix III, annexure No. 32].

This letter was circulated to members of the Security Council and issued as a Security Council document.

Bhopal Capital Project

*912. Shri Vidya Charan Shukla: Will the Minister of Planning be pleased to state the result of Government's consideration of the question of outlay for the Bhopal Capital Project for which a Committee was appointed by Government in December, 1958?

The Deputy Minister of Planning (Shri S. N. Mishra): The report of the Working Group has been received recently and is under consideration.

हिन्दी किन्तं

*११३. श्री भक्त दर्शन : क्या सूचना ग्रीर प्रसारण मंत्री १६ नवम्बर, १६५६ के तारांकित प्रश्न संस्था १४६ के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) उन्होंने केन्द्रीय फिल्म में ससर (विवाचन) बोर्ड के सभापित और सदस्यों से बातचीत के समय हिन्दी की फिल्मों के किन दोर्थों और किमयों की घोर उनका घ्यान ग्राक्षित किया था; ग्रीर
- (ख) उन के मुझावों के ध्रनुसार केन्द्रीय फिल्म सेंसर (विवाचन) बोर्ड का क्या कार्यवाही करने का विचार है ?

सूचना मोर प्रसारण मंत्री (डा० केसफर):
(क) मौर (ख). माम तौर से उन खराबियों
भौर मापत्तिजनक बातों को जो फिल्मों में पार्ड

जाती हैं सरकार ने भपनी हिंदायत (Direction)में बताया है। बोर्ड के साथ जो बातचीत हुई उसमें विस्तार से इस बात पर विचार किया गया कि सेंसर की निगाइ से कोई प्रापत्तिजनक बात छुटने न पाये। बातचीत केवल हिन्दी फिल्मों तक ही सीमित नहीं थी।

Export of Films

*914. Shri Tangamani: Shri Panigrahi:

Will the Minister of Information and Broadcasting be pleased to state:

- (a) whether any Committee been formed to explore the possibilities of export of Indian Films to foreign countries:
- (b) whether any suggestions have been made by these Committees in this regard; and
 - (c) if so, what are the suggestions?

The Minister of Information and Broadcasting (Dr. Keskra): (a) Yes, Sir.

(b) and (c). Attention is invited to the reply given to Unstarred Question No. 808 in the Lok Sabha on 2nd December, 1959 which gives the details of the action taken to stimulate the export of Indian films on the suggestions made by the Export Promotion Committee for Films.

T. V. Sets

*915. Shri S. M. Banerjee:

*915. Shri Panigrahi:

Shri K. B. Malvia:

Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to state:

- (a) whether Television sets have been made available in the market for sale;
 - (b) if so, the price of each set; and
- (c) the number of such sets sold in the country so far?

The Minister of Industry Manubhai Shah): (a) to (c). Television sets are not manufactured in the country and imports are not allowed. A few sets were imported for the Industries Fair 1957. Detailed information on the other points is not available.

Zinc and Lead Smelters at Zawar

*916, Shri Vidya Charan Shukia: Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to refer to the reply given to a supplementary on Starred Question No. 195 on the 13th February, 1959 and state:

- (a) what is the result of Government's consideration of the proposals received by them for establishment of zinc smelter;
- (b) by what time the indigenous lead smelter at Zawar in Rajastnan is expected to be established; and
- (c) whether any efforts are being made to step up the output of the lead and zinc from the Zawar mines?

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah): (a) to (c). A statement is given below:

STATEMENT

Government have approved, in principle, the proposal of the Metal Corporation of India to set up a Zinc Smeiter with an initial installed annual capacity of 15,000 tons of Zinc near Udaipur (Rajasthan) based on the ore deposits of the Zawar Mines. The proposal also envisages stepping up of ore production at Zawar Mines to 1,500 tons a day.

The Metal Corporation of India already own a lead smelter situated at Tundoo (Bihar). Its present capacity is 6,000 tons per annum. In view of the proposed increase in ore production at Zawar (the Zawar deposits are zinc-lead ore combined) the proposal of the Corporation to increase capacity of their existing lead smelter from 6,000 tons to about 8,500 tons per annum has also been approved.

The Zinc Smelter is expected to be established during the Third Plan period and the expansion of the Lead Smelter will also take place simultaneously.

P.T.I.

*917. Shri Panigrahi: Shri S. M. Banerjee: Shri Narayanankutty Menon:

Will the Minister of Labour and Employment be pleased to state:

- (a) whether Government made an effort to bring about a meeting between the Federation of Press Trust of India Employees' Union and the management of Press Trust of India to arrive at a bilateral agreement before referring the matter to adjudication on the 21st November, 1959;
- (b) whether any of the parties asked for adjudication; and
- (c) whether the Federation and the Management have accepted the code of discipline in the Industry?

The Deputy Minister of Labour (Shri Abid Ali): (a) Government held informal discussions with the parties separately.

- (b) No.
- (e) The Press Trust of India, Limited, has not so far accepted the Code of Discipline. The Federation of the PTI Employees' Unions has already accepted the Code.

Prohibition of Documents Misrepresenting Indian Frontiers

*918, Shri A. M. Tariq: Will the Prime Minister be pleased to state:

- (a) whether it is a fact that Government have prohibited the entry of any book, periodical, pamphlet, lenflet or other document containing any words, signs or visible representations which directly or indirectly question the frontiers of India;
 - (b) if so, the reasons therefor;

- (c) whether a copy of the orders will be laid on the Table:
- (d) whether these orders also apply to such publications as are already in circulation in various educational centres and public institutions in the country; and
- (e) if so, how it will affect the smooth running of these institutions?

The Parliamentary Secretary to the Minister of External Affairs (Shri Sadath Ali Khan): (a) to (c). In order to prevent the entry into India of publications etc. which question our frontiers, Government have issued a Notification to this effect. The Notification has since been published in the Gazette of India on the 26th November, 1959.

(d) and (e). It is not at present proposed to apply it to publications already in India, except in any particular case where this is considered necessary.

Indian Traders in Tibet

*919. Shri Ram Krishan Gupta: Will the Prime Minister be pleased to state:

- (a) whether it is a fact that Indian Trade Agent in Western Tibet has submitted a report on the results of the trading season which ended with the onset of winter:
- (b) if so, whether it is also a fact that in his report he has given detailed account of the various regulations and orders passed with the object of putting an end to this trade;
- (c) if so, nature of new restrictions imposed; and
- (d) the steps taken or proposed to be taken to safeguard the interests of Indian merchants?

The Parliamentary Secretary to the Minister of External Affairs (Shri Sadath Ali Khan): (a) to (d). As is usual, the I.T.A. Western Tibet, has submitted a report on his recent tour, but it would not be appropriate to disclose the substance of its report.

507I

It is, however, a fact that traders in Western Tibet this year had considerable difficulty in selling goods and in barter of their merchardise. The attention of the Chinese Government has already been drawn to these difficulties, particularly in the note presented by the Ministry to the Chinese Embassy in India on the 26th October, 1959, and published subsequently in White Paper II.

South Patel Nagar, New Delhi

1405. Shri Ram Krishan Gupta: Will the Minister of Works, Housing and Supply be pleased to state the details and numbers of blocks and houses in South Patel Nagar, New Delhi, which were damaged owing to their construction in the low-land area?

The Minister of Works, Housing and Supply (Shri K. C. Reddy): There has been no damage to quarters constructed in the low-land area in South Patel Nagar.

Export of Manganese Ore

1406. Shri Ram Krishan Gupta: Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to state:

- (a) the present policy for canalising the export of manganese ore;
- (b) whether there is any proposal to canalise the export of manganese ore entirely through the State Trading Corporation;
- (c) if not, the present share of State Trading Corporation and the private sector; and
- (d) the total quantity of manganese ore exported by each of them during 1958-59 and 1959-60 so far?

The Deputy Minister of Commerce and Industry (Shri Satish Chandra):
(a) In the current policy there is no provision for canalising manganese ore exports through any agency.

(b) No, Sir.

(c) The share of each is determined on 50:50 basis.

| (d) | (d) STC | | Total | |
|---|----------|----------|----------|--|
| | Tons | Tons | Tons | |
| 1958-59 (July— June) | 3,55,928 | 5,65,615 | 9,21,543 | |
| 1959-60 (July August, 1959 only.) | 1,10,752 | *41,418 | 1 52,170 | |

*Provisional

Migration of Indians from Tibet

1407. Shri Ram Krishan Gupta: Will the Prime Minister be pleased to state the number of Indians who have migrated from Tibet to India since the outbreak of trouble there?

The Prime Minister and Minister of External Affairs (Shri Jawaharlal Nehru): According to our information about 100 Ladakhi Lamas have so far returned to India. This is apart from those Indian traders who were on short term visits to the Tibetan markets and who have come back to India either in the normal course or because of the decline in Indo-Tibetan trade and the difficulties facing the continuance of customary trade.

Development of Oil Mills

1408. Shri Pangarkar: Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to refer to the reply given to Unstarred Question No. 2431 on the 9th September, 1959 and state the further progress since made regarding the development of oil mills in India?

The Minister of Industry (Shri Manubhal Shah): Two more units for the crushing of cottonseeds have been approved by the Government for licensing under the Industries (Development and Regulation) Act, 1951. Final licences have not yet been issued

the parties have not yet communiated the acceptance of the terms and onditions proposed to be attached to the licence.

Sericulture Industry in Kashmir

1409. Shri Pangarkar: Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to state:

- (a) whether the sericulture industry in Kashmir has made any progress in the production of raw silk; and
- (b) whether the money allotted for the industry during the last three years has been fully utilised?

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah): (a). No, Sir. There has been a small decline in production of ra_W silk during the last two years due to adverse seasonal conditions.

(b). No, Sir.

Ex-Employees of United Press of India 1410. Shri C. K. Bhattacharya: Will the Minister of Labour and Employment be pleased to state:

- (a) whether his attention has been drawn to the fact (i) that full payment of Provident Fund money has not yet been made to the ex-employees of the United Press of India now under liquidation; (ii) that no steps have been taken by the Provident Fund Commissioner to realise the balance of Provident Fund money from the assets of the Company though this should receive the first priority under liquidation; and
- (b) if so, the steps taken in this regard?

The Deputy Minister of Labour (Shri Abid Ali): (a) (i). Yes.

(a) (ii) and (b):

A formal claim for payment of provident fund arrears was made to the Official Liquidator and the same has since been admitted.

313 (Ai) LSD-3,

Compensation to Displaced Persons

- 1411. Shri D. C. Sharma: Will the Minister of Rehabilitation and Minority Affairs be pleased to state:
- (a) the total amount of compensation paid to displaced persons in India upto 1st December, 1959;
- (b) the number of persons who have been paid compensation during 1959 (upto the end of November, 1959); and
- (c) the amount of rehabilitation grants so far paid?

The Minister of Rehabilitation and Minority Affairs (Shri Mehr Chand Khanna): (a) The total amount of compensation paid upto 30th November, 1959 is as follows:

| (i) By Cash. | 55,91,30,774 |
|---------------------------------|--------------------------|
| (ii) By transfer of p | roper- . 49,22,22,545 |
| (iii) By adjustment public dues | of . 19,84,45,027 |
| TOTAL | 124,97,98,346 |

(b) and (c). The number of persons who have been paid compensation during the period 1st January, 1959 to 30th November, 1959 is 1,20,222. (This includes 16,036 claimants who have been issued Statements of Account, 17,649, who were paid interim compensation and have now received final instalment and 4,203 who were paid rehabilitation grants under rule 95 and 96).

Employment Exchanges

- 1412. Shri D. C. Sharma: Will the Minister of Labour and Employment be pleased to state!
- (a) the total number of persons registered with the Employment Exchanges during the year 1959 (as on 30th October, 1959), State-wise:

- ; (b) the total number of vacancies actified to the Employment Exchanges during the same period, state-wise:
- (c) the total number of persons who actually got jobs during the above period, state-wise:
- (d) the number out of these to whom service was provided in States, at the Centre, in Semi-Government and private firms; and
- (e) whether any change in the occupational distribution of employment seekers has been noticed?

The Deputy Minister of Labour (Shri Abid Ali): (a) to (d). A statement giving the information is laid on the Table. [See Appendix III, annexure No. 33].

(c) The percentage distribution of the number of applicants on the Live Register by broad occupational groups at the end of October, 1958 and October, 1959 is given below, for comparison.

| Occupational group | | | Percentage distribution of Live Register as on | | |
|--------------------|----------|--|---|----------|----------|
| | | | | 31-10-58 | 31-10-59 |
| | (1) | ······································ | | (2) | (3) |
| Industrial | - | | | 0.8 | 0.0 |
| Skilled & | Semi-ski | lled | | 7:5 | 7 . 1 |
| Clerical | | | | 26.5 | 25.4 |
| Education | æi. | | | 5.3 | 5.4 |
| Domestic | Service | | | 3.7 | 3.6 |
| Unskilled | | | | 51-6 | 52 . 7 |
| Others | | | | 4.6 | 4.9 |
| | TOTAL | | | 100.0 | 100.0 |

Handicrafts Centres in Punjab

1413. Shri D. C. Sharma: Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to state:

- (a) whether it is a fact that the Central Government have sanctioned a few more centres of handicrafts in Punjab State during 1959 so far; and
- (b) if so, the amount granted for this purpose during the above period?

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah): (a) and (b), Besides 15 schemes being continued from the last year by the Punjab Government, with financial assistance from the Central Government, three new schemes have been sanctioned during the current year for development of handicrafts in that State. A grant of Rs. 4 lakh₃ and a loan of Rs. 6-30 lakh have been allocated for these schemes for the year 1959-60.

Manufacture of Bicycles in Punish

1414. Shri D. C. Sharma: Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to state:

- (a) how many ancillary units are functioning in Punjab State for the manufacture of bicycles;
- (b) what is the annual output of these units; and
- (c) the amount of financial assistance given to them by the Central Government upto the 30th November, 1959?

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah): (a) to (c). The information is being collected and it will be laid on the Table of the House in due course.

Razakars from Pakistan

1415. Shri D. C. Sharma: Will the Prime Minister be pleased to refer to the reply given to Unstarred Question No. 1923 on the 1st September, 1959 and state the latest position with regard to the note sent to the Pakistan Government in connection with the Razakar entry into India on the 18th October, 1957?

The Prime Minister and Minister of External Affairs (Shri Jawaharial Nehru); A reply from the Pakistan Government is still awaited.

Indians in Malaya

1416. Shri D. C. Sharma: Will the Prime Minister be pleased to state:

- (a) the number of Indian nationals engaged as plantation labourers in Malaya;
- (b) the service conditions of these **Indian** nationals; and
- (c) the number of Indian nationals employed in other industries there and the service conditions thereof?

The Prime Minister and Minister of External Affairs (Shri Jawaharlal Nehru): (a) to (c). As on 31st July, 1958, 163,190 persons of Indian origin were engaged as plantation labourers and 8,420 persons in other industries. Precise figures showing how many of these are Indian nationals and how many have acquired Malayan citizenship are not available. Details of service conditions, both in plantations and other industries, are also not available but are known to be on the whole satisfactory.

Labour Co-operative Societies in Himachal Pradesh

- 1417. Shri D. C. Sharma: Will the Minister of Works, Housing and Supply be pleased to state:
- (a) the number of Labour Co-operative Societies registered so far in the Union Territory of Himachal Pradesh; and
- (b) how many of them were awarded minor works of construction by the C.P.W.D. without calling for tenders?

Minister of Works. The Deputy Housing and Supply (Shrl Anil Chanda): (a) and (b). All public works in the Union Territory Himachal Pradesh are executed by the P.W.D. of the Administration. The C.P.W.D. do not function there and so there is no question of their awarding any work to any labour co-operative society. For the same reason, Government do not maintain any information about the number of such societies in the territory.

Educated Unemployed in Punjab

5078

1418. Shri D. C. Sharma: Will the Minister of Labour and Employment be pleased to state the number of unemplified graduates, intermediates and matriculates on the Live registers of the Employment Exchanges in Punjab on the 30th November, 1959?

The Deputy Minister of Labour (Shri Abid Ali): The information as on the 30th November, 1959 is not available. The position on the 30th September, 1959 is given below:

| Category | | | Number on the Live Register as on 30th Septem- her, 1959 | | |
|--|--|--|---|--|--|
| (1) | | | (2) | | |
| Graduates . Intermediates Matriculates | | | 1,90g 1,330 22,203 | | |
| Total | | | 25,436 | | |

Youth Employment and Vocational Guidance Sections

- 1419. Shri D. C. Sharma: Will the Minister of Labour and Employment be pleased to state:
- (a) whether the Youth Employment and Vocational Guidance Sections have been opened in any Employment Exchange in Delhi;
 - (b) if so, the number thereof:
 - (c) their locations; and
 - (d) the results achieved so far?

The Deputy Minister of Lakour (Shri Abid Ali): (a) Yes.

- (b) One.
- (c) Regional Employment Exchange 14, Daryaganj, Delhi.
- (d) During the period January, 1958 to October, 1959, 10,478 applica-

cants were given guidance in groups, 960 applicants were guided individually and 1,422 applicants were placed in technical institutions.

Transport Facilities in Dandakaranya Area

- 1420. Shri Panigrahi: Will the Minister of Rehabilitation and Minority Affairs be pleased to state:
- (a) whether adequate transport facilities have been introduced in Dandakaranya area by now;
- (b) the extent to which road mileage has been improved; and
- (c) the roads which have been newly constructed by now?

The Minister of Rehabilitation and Minority Affairs: (Shri Mehr Chand Khanna): (a) Yes.

(b) and (c). Attention of the Hon'ble Member is invited to the reply given by me on 10th December, 1959 to Unstarred Question No. 1263.

Paper Factory in Kalyansingpur (Orissa)

- 1421. Shri Panigrahi: Will the Minister of Communice and Industry be pleased to state:
- (a) whether M/s Straw Products Ltd. have been given a licence to start a paper factory in Kalyansingpur in the Koraput district of Orissa;
- (b) if so, whether the construction work of the factory has started; and
- (c) when the factory is expected to go into production?

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah): (a) Yes, Sir.

(b) and (c). Preliminary steps are being taken by the firm and the factory is expected to go into production in 1962-63.

Export of Manganese Ore

1422. Shri Panigrahi: Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to state:

- (a) whether India has made any export of Manganese ore during the period from June to November, 1959; and
- (b) if so, the quantity exported (country-wise)?

The Deputy Minister of Commerce and Industry (Shri Satish Chandra):
(a) and (b). A statement giving the information from June to September, 1959 is laid on Table [See Appendix III, annexure No. 34]. Figures for subsequent months are not yet available.

Salt Production in Orissa

- 1423. Shri Panigrahi: Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to state:
- (a) the total quantity of salt produced in Orissa during the years 1957-58 and 1958-59 separately;
- (b) the factory-wise production of Salt during these two years separately;
- (c) the amount of financial assistance given to the different factories during these two years for increasing salt production;
- (d) whether any financial assistance has been extended to Orissa for improving road communication in the salt producing areas of Orissa, such as Astarang, Huma and Sumadi; and
 - (e) if so, the amount of aid given?

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah):

Maunds
(a) 1957-58 . . . 14 07,000
1958-59 . . . 19,92.000

- (b) A statement giving the information desired is given below.
- (c) No direct financial assistance has been given to individual factories, but substantial assistance in the form of execution of development works which

benefit a number of sait works colfactively has been rendered by the Salt Department.

- (d) Yes. Sir.
- (e) About Rs. 84,500.

Statement showing the production of salt in Orissa (including unlicensed production) for the years 1957-58 and 1959-59.

21. Mame of the Pactory 1057-58 1058-50

| Na | (Production in 1,000 maunds) | | |
|-------------------------------|------------------------------|-------|--|
| z. Oanjam Salt Factory | 591 | 602 | |
| s. Sumadi Salt Pactory . | 137 | 568 | |
| 3. Surla Salt Pactory . | 263 | 319 | |
| 4. Astrang Salt Factory | 89 | 99 | |
| 5. Goka Sait Factory . | 209 | 260 | |
| 6. Sahadabadi Salt Pactory | 11 | 14 | |
| 7. Model Salt Factory . | 5 | 22 | |
| 8. Unlicensed production | 102 | 108 | |
| TOTAL . | 1,407 | 1,992 | |

Central Committee en Employment

Shri Ram Krishan Gupta: 1424. Shri S. M. Banerjee: Dr. Ram Subhag Singh:

Will the Minister of Labour and Employment be pleased to refer to the reply given to Starred Question No. 898 on 28th August, 1959 and stata:

- (a) the nature of steps taken so far to implement the recommendations of the Central Committee on Employment with special reference to:
 - (1) employment aspects of planing in general and the employment opportunities in the village industries:
 - (ii) remodelling of State Employment Advisory Committee on the lines of the Central Committee on Employment;
 - (iii) undertaking of pilot project in one district of every State employment to discover potential:

- (b) whether Government have examined the other recommendations:
 - (c) if so, the results thereof?

The Deputy Minister of Labour (Shri Abid Ali); (a) (i) The Study Groups may take a year more to formulate their proposals.

- (a) (ii) and (iii). State Governments are doing the needful.
- (b) and (c). Yes; it is too early to assess the results.

Inquiry into Kerala Plantation Strike

1425, Shri Ram Krishan Gunta: Will the Minister of Labour and Employment be pleased to refer to the reply given to Unstarred Question No. 1933 on the 1st September, 1959 and state whether the inquiry into the Kerala plantation strike has been completed?

The Deputy Minister of Labour (Shri Abid Ali): The Enquiry has not yet started as a statement regarding the strike and the names of witnesses are still awaited from the A.I.T.U.C. affiliated union.

Punjab Circuit House in Delhi

1426, Shri Ram Krishan Gupta; Will the Minister of Works, Housing and Supply be pleased to refer to the reply given to Unstarred Question No. 1391 on the 24th August, 1959 and state the nature of decision taken for releasing some land in Delhi formerly owned by the Nabha State for the construction of a Circuit House in Delhi for the Punjab Government?

The Minister of Works, Housing and Supply (Shri K. C. Boddy); The question of releasing a portion of the Nabha Plot' required by the Punjab Government will be considered when alternative accommodation for the occupants staying in the hutments at the site has been found. Efforts are being made in that direction.

Social Security Scheme for Industrial Workers

1427. Shri Ram Krishan Gupta: Shri D. C. Sharma:

Will the Minister of Labour and Employment be pleased to refer to the reply given to Unstarred Question No. 536 on the 11th August, 1959 and state:

- (a) whether Government have since examined the report of the Study Group appointed to formulate a comprehensive social security scheme for industrial workers; and
- (b) if so, the devisions taken thereon?

The Deputy Minister of Labour (Shri Abid Ali): (a) and (b). Copies of the Report of the Study Group were circulated to the interests concerned. Comments are still awaited from some of them. In the meantime, the replies so far received are being examined.

Heavy Foundry Forge Plant

↑ Shri Ram Krishan Gupta: 1428. ⟨ Shri Muhammed Elias: | Shri Ajit Singh Sarbadi:

Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to refer to the reply given to Unstarred Question No. 2172 on the 4th September, 1959 and state the progress made so far in the finalisation of the Heavy Foundry Forge Plant?

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah): The Detailed Project Report for the Foundry/Forge Plant has been received on the 21st November, and is under consideration. Preparatory work is in progress regarding acquisition of land, levelling and dressing of the plant site and construction of buildings etc.

Machinery for Mineral Oil Industry

1429. Shri Ram Krishan Gupta:
Shri Vidya Charan Shukla:

Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to refer to the reply given to Unstarred Question No. 808 on the 14th August, 1859 and state the nature of progress made in establishing a factory to manufacture the machinery for Mineral Oil Industry with Soviet assistance?

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah): The Heavy Machine Building Plant being set up at Hatia near Ranchi envisages the production of oil drilling rigs in the second stage. The extent to which the manufacturing programme of the Plant could include machinery required for mineral oil industry is under consideration. It is proposed to accelerate the programme of this corporation as much as possible.

Survey of the Carpet Industry

1430. Shri Ram Krishan Gupta: Shri Ajit Singh Sarhadi: Shri Sarju Pandey: Shri Karni Singhji:

Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to refer to the reply given to Unstarred Question No. 12 on the 3rd August, 1959 and state:

- (a) whether survey of the carpet industry in India has since been completed; and
- (b) if so, the details of the survey report?

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah): (a) and (b). Besides Jammu and Kashmir. Uttar Pradesh and Delhi, the survey of the carpet industry has since been conducted in the Punjab State. The survey in the rest of the States is expected to be completed by the end of March, 1960. The report will be compiled on the completion of the survey in all the States.

Import of Water Coolers

Shri Ram Krishan Gupta: .1431. Shri Ajit Singh Sarhadi: Sardar Igbal Singh:

Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to state:

- (a) whether it is a fact that restriction has been placed on the import of water coolers:
- (b) if so, the alternative measures adopted for the supply of water coolers:
- (c) whether there is any proposal to manufacture water coolers in India: and
 - (d) if so, the details thereof?

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah): (a) Import of water coolers is banned since October 1957-March 1958 licensing period.

(b) to (d). Water coolers are already being manufactured in the country. Six firms have been licensed under the Industries (Development and Regulation) Act, 1951, for the manufacture of water coolers. Their combined installed capacity is 4,130 Nos. of water coolers per annum. The production during January-October, 1959 was 1.711 numbers.

Khadi Industry

1482. Shri Ram Krishan Gupta: Shri Hem Raj:

Will the Minister of Commerce and industry be pleased to refer to the reply given to Starred Question No. 721 on the 24th August, 1959 and state:

- (a) whether Government have received the report of the working group for Khadi Industry;
- (b) if so, the main recommendations therein; and
- (c) the details of the recommendations accepted by the Government after examining them?

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah): (a) No. Sir.

(b) and (c). Do not arise.

Salt Industry in West Bengal

1433. Shri S. C. Samanta: Shri Subodh Hansda:

Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to state what steps have been taken to improve and expand the salt industry in West Bengal?

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah): A scheme for the establishment of a training-cumproduction centre at Sisirgani in West Bengal for demonstration of simple and scientific methods of salt manufacture has been sanctioned and the Centre will be set up as soon as the land required is made available. The State Government is also contemplating the establishment of a big salt washery in West Bengal with the help of private manufacturers of salt.

Working Group on Social Welfare

1434. Shri Subodh Hansda: Shri S. C. Samanta: Shri B. C. Majhi:

Will the Minister of Planning be pleased to state:

- (a) whether the final report of the Working Group on Social Welfare for inclusion of schemes in the Third Five Year Plan has been submitted: and
 - (b) if so, the details thereof?

The Deputy Minister of Planning (Shri S. N. Mishra): (a) No, Sir.

(b) Does not arise.

Technical Survey of Glass Industry

Shri S. C. Samanta: 1435. Shri Subodh Hansda: Shri R. C. Majhi:

Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to refer to the reply given to Unstarred Question No. 1137 on the 20th August, 1959 and state:

- (a) whether the Technical Survey team for the glass industry has since submitted its report;
- (b) if so, its main recommendations;and
- (c) whether the report has been considered and decision taken?

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah): (a) No, Sir. The report of the Technical Survey team for the Glass Industry is still awaited. It is, however, expected to be finalised very shortly.

(b) and (c). Do not arise.

Study of Plastic Industry Abroad

1436. Shri S. C. Samanta:
Shri Subodh Hansda:

Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to refer to the reply given to Unstarred Question No. 2467 on the 9th September, 1959 and state:

- (a) whether all the Members of the Productivity Team sent abroad to study the Plastic Industry have come back and whether they have submitted their report; and
- (b) if so, what action has been taken in the matter?

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah): (a) Yes, Sir. The Team is expected to submit its report to the National Productivity Council shortly.

(b) Does not arise.

Slum Clearance in Kanpur

1437. { Shri S. M. Banerjee: Shri Panigrahi:

Will the Minister of Works, Housing and Supply be pleased to state:

(a) whether any amount has been sanctioned for Kanpur in connection with the slum clearance scheme; and

(b) if so, the amount sanctioned in 1959?

The Deputy Minister of Works, Housing and Supply (Shri Anil K. Chanda): (a) Slum clearance projects of the approved cost of Rs. 1.21 crores have so far been sanctioned in Kanpur City.

(b) A sum of Rs. 40 lakhs is proposed to be released by the U.P. Government for the implementation of the slum clearance projects in Kanpur during 1959-60.

Employees' State Insurance Scheme

1438. Shri S. M. Banerjee: Shri Tangamani: Shri Panigrahi:

Will the Minister of Labour and Employment be pleased to state:

- (a) whether a conference of the Labour and Health Ministers of States was held to discuss the various aspects of Employees' State Insurance Scheme; and
- (b) if so, what decisions were taken at the conference?

The Deputy Minister of Labour (Shri Abid Ali): (a) No.

(b) Does not arise.

Violation of Safety Rules by Collieries

1439. Shri S. M. Banerjee: Shri Panigrahi:

Will the Minister of Labour and Employment be pleased to state:

- (a) the number of times the safety rules have been violated by various collieries in the country during the period from 1st January, 1958 to 15th October, 1959; and
 - (b) action taken against them?

The Deputy Minister of Labour (Shri Abid Ali): (a) About 7,000 inspections of mines are made every year. During these inspections the

number of violations noticed vary between one to twenty-five.

(b) Every case of a violation is brought to the notice of the management and is followed up till the violation is remedied. In cases of repeated violations or serious violations or in cases of habitual offenders, appropriate action is taken according to Law.

Demarcation of Indo-Pakistan Border

1440. Shri D. C. Sharma: Will the Prime Minister be pleased to refer to the reply given to Starred Question No. 1049 on the 1st September, 1959 and state the detailed particulars and figures which have been collected in respect of transfer of territories under the Bagge Award?

The Prime Minister and Minister of External Affairs (Shri Jawaharlal Nehru): Firm figures are still awaited from the West Bengal Government, and will be placed on the Table of the House when received.

Manufacture of Lathes by Hindustan Machine Tools

1441. Shri Pangarkar: Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to state:

- (a) whether it is a fact that cheaper type of lathes are now being manufactured in Hindustan Machine Tools Ltd., Bangalore; and
- (b) if so, whether these are exported to the neighbouring countries?

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah): (a) Yes, Sir.

(b) It is too early to expect exports of these items.

Export of Handloom Textiles

1442. Shri Kodiyan: Shri Madhusudan Rao:

Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to state:

- (a) what steps have been taken by Government to increase the export of handloom textiles to U.S.A.;
- (b) whether as a result of these steps export to America has increased in recent years; and
 - (c) if so, to what extent?

The Minister of Commerce (Shri Kanungo): (a) to (c). A statement is laid on the Table. [See Appendix III, annexure No. 35.]

स्माक

१४४३. श्री श्रीनागयग दातः क्या वागित्रय तथा उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेगे कि :

- (क) रुद्राक्ष के आयात का कोटा पांच प्रतिशत से बढ़ा कर दस प्रतिशत करने के निर्णय में सरकार ने किन बातों पर ध्यान दिया है;
- (स्त) यह वस्तु किन-किन कामों में लाई जाती है और पिछले पांच वर्षों में इस के ग्रायात का क्या परिणाम रहा है;
- (ग) क्या रुद्राक्ष का उत्पादन हमारे देश में होता है; श्रीर
- (घ) यदि हां, तो यह पिछले पांच वर्षों में कितना हुया ?

वाणिज्य मंत्री (श्री कानूनगो): (क) देश में इस वस्तु की कमी होने का समाचार मिलने के कारण इसका कोटा बढ़ा दिया गया है।

(ख) रुद्राक्ष के मनकों की ग्रावश्यकता रुद्राक्ष की मालायें बनाने के लिये होती है, जिनका साधू तथा ग्रन्य धर्मपरायण लोग भगवद् भजन के लिये व्यापक रूप से प्रयोग करते हैं। रुद्राक्ष के मनकों से ब्रैसलेट तथा ग्राभूषण भी बनाये जाते हैं। इसके वास्तविक ग्रायात के ग्रांकड़े उपलब्ध नहीं हैं क्योंकि इस. वस्तु को देश के आयात स्थापार के वर्गीकरण से विशिष्ट रूप से नहीं दिलाया जाता ।

(ग) भीर (भ). ठीक ठीक जानकारी उपसब्ध नहीं है।

Radio Licence Fees for Lahaul and Spiti Areas

1444. Shri Hem Raj: Will the Minister of Information and Broadcasting be pleased to state:

- (a) whether it is a fact that Punjab Tribes Advisory Council has recommended for the exemption of Lahaul and Spiti Tribal areas from Radio licence fees: and
 - (b) if so, the action taken thereon?

The Minister of Information and Broadcasting (Dr. Keskar): (a) and (b). The Punjab Tribes Advisory Council had recommended that Lahaul area may be exempted from the payment of radio licence fee. The matter is under consideration.

Kerala Plantations

1445. Shri Narayanankutty
Menon:
Shri Punnoose:

Will the Minister of Labour and Employment be pleased to state:

- (a) whether the Board of Arbitration constituted to settle the bonus dispute in the Kerala plantations has submitted its report;
- (b) if so, what are the recommendetions made:
- (c) what action Government have taken on the report; and
- (d) whether any party in the Arbitration Board non-cooperated with the arbitration proceedings?

The Deputy Minister of Labour (Shri Abid Ali); (a) Yes. It was a

Board of Conciliation and not a Board of Arbitration.

- (b) The Board has reported that a settlement of the dispute could not be arrived at.
- (c) Discussions between the parties were arranged by the State Government during the last month to explore possibilities of a settlement but agreement was not reached.
- (d) One member resigned from the Board.

Mandya National Paper Mills

Shri Nagi Beddy: Shri Warior: Shrimati Parvathi Krishnan:

Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to state:

- (a) whether it is a fact that the Mandya National Paper Mills will be manufacturing paper from Bagasse; and
- (b) if so, whether Government are satisfied that the process of manufacture of paper from Bagasse is economical?

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah): (a) and (b). Yes, Sir

Imports and Exports

Shri D. C. Sharma:
Shri Ram Krishan Gupta:
Shri Pangarkar:
Shri Naval Prabhakar:
Shri Bhakt Darshan:
Shri Hem Raj:
Shri Kodiyan:

Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to lay a statement showing:

- (a) the import and export trade position of India since 1st July, 1959;
- (b) the total value of exports and imports made during this period;

- (c) whether there is any shortfall in the value of exports during period:
- (d) if so, which of the commodities are mainly responsible for the shortfall: and
- (e): the names of the countries with which India is having an adverse trade balance during the above period?

The Deputy Minister of Commerce and Industry (Shri Satish Chandra): (a) to (e). A statement is given helow:

STATEMENT

(a) Statistics relating to export of merchandise (commodity-wise) are available upto September, Imports and exports in July-September, 1959 were as follows:

Lakhs of Rupees

Imports--19,063. Exports-17.027.

- (b) The total value of exports and imports in July-September, 1959 was Rs. 36,090 lakhs.
 - (c) No. Sir.
- (d) Does not arise.
- (e) Country-wise trade statistics are available upto August, 1959. In July-August 1959. India had adverse balance of trade mainly with West Germany, U.S.A. Canada, France. Rhodesia (North and South), Italy, Kenya, Malaya, Switzerland, Iran, Saudi Arabia, Sweden, Mozambique, Belgium, Zanzibar and Pemba. Burma and Belgium Congo.

New Industrial Units in Punjab

Shri Hem Raj: 1448. { Shri Ram Krishan Gupta: Shri D. C. Sharma:

Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to state:

(a) whether Government have Chief received a letter from the

Minister. Punjab, in September for the location of factories for the manufacture of drugs, pharmaceutical products, surgical instruments, photographic and X-Ray films and paper. a unit for the manufacture of machinery and other heavy industries in the Punjab during the remaining period of the Second Five Year Plan or during the Third Plan period; and

(b) if so, the nature of decision taken thereon?

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah): (a) and (b). The Chief Minister of Punjab has been informed that the report of the Drug Projects Location Committee was under active consideration of the Government. In this connection # reference is also invited to the reply given to Unstarred Question No. 2216 on the floor of the House on 4th September, 1959.

Automobile Tyres

1449. Shri V. P. Nayar: Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to state the retail prices of Automobile tyres of the common sizes in India as also in Ceylon and U.K.?

The Minister of Industry (Shri Mahubhai Shah): The retail prices of Automobile tyres of the common sizes in India are as given below;

| | Sige | Pty | Last price |
|-----------------|-----------|-----|---------------|
| | | | Rs. |
| Giant Tyres: . | 7 50-20 | 10 | 346.50 |
| | 7.5020 | 12 | 398 - 50 |
| | 8 - 25 20 | 10 | 384.25 |
| | 8.25 ~ 20 | 12 | 441.50 |
| | 9.0020 | 10 | 441.50 |
| | 9.0020 | 12 | 507 - 75 |
| Motorcar tyres: | | | |
| | | | Rs. |
| | 5.00 16 | 6 | 87-25 |
| | 5.25-16 | 6 | 92.50 |
| | 5.75,6.00 | 6 | 118.75 |
| | 5 · 5015 | 6 | 103.00 |

Information relating to the retail prices of automobile tyres in Ceylon and is U.K. not available.

Circulation of Indian Newspapers and Periodicals Abreed

2005 Written Answers

1456. Shri Ramoshwar Tantia: Will the Prime Minister be pleased to state whether it is a fact that Indian newspapers and periodicals are prohibited from circulation in a number of foreign countries?

The Prime Minister and Minister of External Affairs (Shri Jawaharial Nehru): Yes. A few Indian newspapers and periodicals are reported to have been prohibited from circulating in some foreign countries.

Sugar Plant

1451. Shri Ailt Singh Sarbadi: Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to refer to the reply given to Starred Question No. 619 on the 20th August, 1959 and state the location of the Plant to be set up by Mis. Indian Sugar and General Engineering Corporation, Yamunanagar?

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah): The first sugar plant manufactured by Mis. Indian Sugar and General Engineering Corporation, Yamunanagar, will be supplied to the Palakole Co-operative Agricultural and Industrial Society Ltd., Palakole, Andhra Pradesh, a co-operative sugar factory in Andhra.

Gurumukhi Typewriters

1452, Shri Ajit Singh Sazhadi: Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to state whether any facilities are being provided or any company being encouraged for the manufacture of typewriters with Gurumukhi script?

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah): The existing manufacturers are free to produce typewriters with key-boards of any script, including Gurumukhi, within their licensed capacities. One of them viz. Mis. Remington Rand of India Ltd., Calcutta, have already commenced production of typewriters with kerheard in Gurumukhi script.

Sports Goods

1452, Shri Alt Sinch Sarhadi: WIR the Minister of Commerce and Indiantry be pleased to state:

- (a) whether there has been may appreciable increase in the export of sports goods after introduction of the Export Incentive Scheme: and
 - (b) if so, to what extent?

The Deputy Minister of Committees and Industry (Shri Satish Chandra): (a) Yes, Sir.

(b) Exports of sports goods during April-September 1969 have higher than for the corresponding period of 1958 by Rs. 15:63 lakhs.

Hosiery and Rug Sectors

1454, Shri Ajit Singh Sarhadi: Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to refer to the reply given to Unstarred Question No. 1145 on the 20th August, 1959 and state:

- (a) whether decision has since been taken in regard to sending abroad of delegations for Organised Mill and Hosiery Sector and carpets and rugs: and
- (b) if so, whether any person from hosiery industry in Punjab will be included in such delegations?

The Minister of Industry (Ehrl Kazungo): (a) and (b). It has been decided that a delegation consisting of 5 Members representing the Organised Mill and Hosiery Sector should be sent abroad. The names of the persons to be included in the delegation have not yet been finally decided. The question for sending abroad a delegation representing the carpets and rugs industries is under consideration.

State Aid to Industries

1455. Shri Ram Krishan Gupta: Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to refer to the reply given to Sterred Question No. 586 on the 20th Austrat, 1989 and state at what stage is the proposal for further singlification of rules and liberalisation of procedure for State aid to industries?

Manubhai Shah): The report of the Working Group has been sent to the State Governments for taking necessary action as they would consider suitable.

Imported Cars

Shri V. P. Nayar: 1456. Shri Warior: Shri Kediyan:

Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to state;

- (a) whether the attention of Government has been drawn to the fact that large number of latest models of imported cars are offered for sale in the country; and
- (b) if so, whether Government have exercised any check on such high profit making sales?

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah): (a) No, Sir. There is no possibility of latest models of imported cars being offered for sale as import of built-up cars has not been allowed for the last several years except as personal baggage. Even cars imported as personal baggage are not generally allowed to be sold before they have been used for a minimum period of two or three years.

(b) Does not arise.

Import of Dyes and Chemicals

| Shri V. P. Nayar: | Shri Warior: | Shri Kediyan:

Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to state:

(a) the percentage of imports of dyes and chemicals handled by

M/s. Imperial Chemicals Industries Ltd. in India's total imports of these materials;

- (b) the first five topmost in the list of importers of these materials for the last three years; and
- (c) the tool value of imports allowed to each?

The Minister of Commorce (Shri Rannago): (a) to (c). The firm-wise statistics of actual imports are not maintained. It is, therefore, not possible to state the percentage of imports effected by Mis. Imperish Chemical Industries Ltd. in India's total imports of dyes and chemicals made during a particular period. An attempt is, however, being made to collect the amount of licensing done to I.C.I. and five topmost firms in the field of dyes and chemicals during 1956—58 and the information will be laid on the Table of the Sabha as early as possible.

Non-ferrous Metals

1458. Shri Warier:
Shri Kodiyan:
Shri V. P. Nayar:

Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to state:

- (a) the latest position in regard to the capacity of the country to meet the requirement of non-ferrous metals by indigenous production:
- (b) the latest position regarding the rolling and re-rolling capacity in the country for non-ferrous metals; and
- (c) the total value of import of (i) non-ferrous metals as raw material for rolling and (ii) finished products?

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah): (a) The present installed capacity for manufacture of non-ferrous metals is approximately as follows:

Aluminium Ingots-17,508 tons per annum.

Copper Ingots-7,500 tons per annum.

Lead (Virgin)-6,000 tons per annum.

Antimony-800 tons per annum.

(b) The present installed capacity for rolling of non-ferrous metals is estimated as under:

Aluminium Sheets/circles

1000 Written Answers

17/18,000 tons per annum.

Brace/Copper sheets. - circles and strips.

45/50.000 tons per annum.

Aluminium wire reds for A.S.C.R.

рег 6.000 tons annum on single shift basis.

Copper wire rods for copper conductor wires 15,000 tons p. a. on single shift hasis

Zinc sheets/strips Lead sheets

5,700 tons p.a. 1,092 tons p.a.

(c) Total value of import of nonferrous metals as raw material for rolling is not separately available. Total value, however, of import of non-ferrous metals for all purposes and total value of import of finished products of non-ferrous matals available in the "Monthly Statistics of the Foreign Trade of India" a publication of the Department of Commercial Intelligence and Statistics, Calcutta.

Labour in High Range Estates in Kerala

Shri Kodiyan: 1459. Shri Narayanankutty Menon:

Will the Minister of Labour and Employment be pleased to state:

- (a) whether it is a fact that the Committee appointed by the Kerala State Government in 1957 to enquire into the system and working of labour in Estates in the High Ranges have submitted their final report; and
- (b) if so, whether a copy of the preport will be laid on the Table?

The Deputy Minister of Labour (Shri Abid Ali): (a) The Committee appointed by the Government of Kerala in 1957 to go into the question

of wages and bonus in the plantation industry, has submitted its report.

(b) No.

Land Acquisition Development Scheme

1460. Shrimati Ila Palchoudhuri: Will the Minister of Works, Housing and Supply be pleased to state:

- (a) whether the Government of India have received replies from the State Governments indicating their requirements of funds for implementing the Land Acquisition and Development Scheme introduced recently:
- (b) if so, the nature of replies together with the name of the States from which they have been received; and
- (c) the allocations made by the Central Government to each of the States during the current year?

The Deputy Minister of Works, Housing and Supply (Shri Anii K. Chanda): (a) No reply has so far been received from any State Government except Punjab.

- (b) The Government of Puniab have requested for the allotment of a sum of Rs. 25 lakhs for the remaining period of the Second Plan.
- (c) No allocations have yet been made.

Production of Liquid Gold

- 4

Shri Karni Singhji: Shri Bhanja Deo:

Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to state:

- (a) whether the production liquid gold has declined in 1958; and
 - (b) if so, the reasons therefor?

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah): (a) No, Sir. The production of liquid gold has, in fact, increased from 1,27,729 ozs., in 1957 to 1,52,500 ozs. during 1958.

(b) Does not arise.

Manganese Ore Trade

1462. Shri Vidya Charan Shukia: Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to state:

- ; (a) whether the sub-committee appointed by the Committee for promotion of manganese ore trade to made recommendations for reducing the cost of Indian manganese ore by improving mining methods, providing adequate facilities for transport of ore etc., has submitted its report;
- (b) if so, the nature of recommendations made; and
 - (c) the action taken thereon?

The Minister of Commerce (Shri Kanango): (a) Not yet.

(b) and (c). Do not arise.

Japanese Handicrafts Design Export

1463. Shri Ramakrishna Reddy: Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to state:

- (a) whether in view of the opinion of the Japanese Handicraft design expert Indian Government intends modernising Indian handicraft industry by simplifying the designs and mechanising techniques of production; and
- (b) to what extent Japanese handieraft industry will help India to nationalise and modernise the Indian industry?

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah): (a) and (b). A formal report from the Japanese Handicrafts expert who visited India recently, is still awaited. His suggestions for the development of handicraft industry will be considered on receipt of the report.

Synthetic Dyes

1464. Shri Aurobindo Ghesal: Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to state:

(a) the total indigenous production

of synthetic dyes during 1957-58 and 1958-59 in the country; and

(b) the quantity used in manufacturing lip-sticks during the same period?

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah): (a) The total production of synthetic dyes in the country during 1957 and 1958 was as follows:

1957 8-8 million lbs.

(b) No pricise information is available about the colours and dyes used in the manufacture of lip-sticks.

Import of Tractors and Bulidescra

1465. Shri N. R. Muniswamy: Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to state:

- (a) the number of tractors and bulldozers imported into India during the years 1957-58 and 1958-59;
- (b) the landed cost thereof, the import duty realised and the retail prices (average) at which they have been supplied to the users; and
- (c) what percentage of these has been supplied to the agriculturists and businessmen, separately?

The Minister of Industry (Shri Manubhal Shah): (a) 4,797 Nos. of tractors of all types and 129 Nos. of buildozers of all types were imported during the year 1957-58; the corresponding figures for the year 1958-59 are 3,245 Nos. and 42 Nos. respectively.

(b) and (c). A variety of tractora of different sizes and types are being imported into the country by Established Importers and their landed cost varies according to the types and sizes of such tractors. Except for some imports arranged by the State Trading Corporation from the East European Countries on rupee payment basis, tractors and buildozers are generally imported through the normal

trade channels. Government do not exercise any control over the distribution and prices of tractors and fulldozers imported through the trade. On account of this and the large varieties and types involved, it is not possible to furnish information about the retail prices at which tractors and bulldozers, imported through the trade, are sold to the aftimate users.

For the same reasons, the personage of such machines purchased by the agriculturists and businessmen separately cannot be furnished.

However, the landed cost and retail prices of some types of tractors imported through the State Trading Corporation are given below:

| Type of tractor | Country of origin | Landed cost | Retail price |
|-----------------------|-------------------|----------------|--|
| DT-14B (14 H.P.) . | . U.S.S.R. | Ra.: 4,000 | Rs. 5030 ex-main Indian Ports. *(Inclusive of desiers commission of 10% and servicing charges). |
| Zetor 25A (25 H. P.) | . Czechoslovakia | 6,600 | Rs. 8,500 ex-main Indian Posts. (as at *above.) |
| Byelarus (40-45 H.P.) | , U.S.S.R | 9,050 | Rs. 11,250 ex-main Indian Ports. (as at *above). |

Agricultural tractors are imported duty-free whereas tractors for other these are assessable to import duty at the Standard rate of 10 per cent. ad salorem.

Rehabilitation Grants to Rural Displaced Persons

1466. Shri S. M. Banerjee:
Shri Ajit Singh Sarhadi:

Will the Minister of Rehabilitation and Minority Affairs be pleased to state:

- (a) whether the detailed policy about the disposal of the rehabilitation grant applications filed by displaced persons under Rule 97 of the Displaced Persons (Compensation and Rehabilitation) Rules, 1955 has been announced and some target date fixed 300 their disposal; and
- (b) the action taken on such applications filed by rural Displaced Persons so far?

The Minister of Rehabilitation and Minority Affairs (Shri Mehr Chand Khanna): A decision has just been taken to apply the same scales of payment in these applications as in the case of claims under the Compensation Scheme. The necessary rules etc. in this regard are being formulated. The number of applications is over 6,000. The payments can only be made after the scrutiny to ascertain that the land allotted to the applicants have actually been cancelled. This process is likely to take some time. Actual payments should start after a month or two.

Industrial Estates in Andhra Pradech

- 1467. Shri Madhusudan Rec: Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to state:
- (a) how many Industrial Estates have been established in Andhra Pradesh (giving names of the phone where established) during 1903-06; and

(b) what is the total amount spent by the Government of India in this regard?

The Minister of Indistry (Shri Manubhai Shah): (a) and (b). During 1958-59 two Industrial Estates namely one each at Nandyal and Warangal have been established in Andhra Pradesh in addition to the Industrial Estates at Sanatnagar, Vishakhapatnam, Vijayawada and Samalkot established in 1957-58. In 1958-59 the Government of India sanctioned a loan of Rs. 19:57 lakhs to the State Government for all their Industrial Estates schemes.

Industrial Estate at Siliguri (West Bengal)

1468. Shri Manaen: Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to state:

- (a) when was the sanction for Industrial Estate in Siliguri (West Bengal) given;
- (b) whether the area allotted for Siliguri Industrial Estate is within the Sub-division of Siliguri; and
- (c) the progress made in the Siliguri Industrial Estate so far?

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah): (a) to (c). Though the location of the Industrial Estate Siliguri in West Bengal was approved by Government of India in 1957, technical approval for the scheme has not yet been issued as its details have not been received from the State Government. The place selected for the location of this estate is four miles away from the Siliguri town but is within the Sadar Subdivision of Julpaiguri District. Land acquisition proceedings for the scheme have been finalised and possession of land will be taken by the State Government shortly.

Industrial Expansion in Delhi

1469. Shri Ram Krishan Gupta: Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to state:

313(Ai) LSD-4.

- (a) whether it is a fact that Government are considering a proposal to stop further industrial expansion in Delhi; and
 - (b) if so, the reasons therefor?

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah): (a) and (b). No, Sir. The location of industrics in and around Delhi has however been examined by the Town Planning Organization. The report of the Organization is under examination. The intention generally is to avoid overcrowding as far as possible by suitably dispersing industrial units in the near vicinity of Delhi.

Power Projects

1470. Shri Ram Krishan Gupta: Will the Minister of Planning be pleased to state:

- (a) whether it is a fact that the Planning Commission have cleared some power projects earlier excluded from the 'core' of plan because of foreign exchange shortage, for implementation in next year; and
- (b) if so, the number of additional power projects to be taken up again?

The Deputy Minister of Planning (Shri S. N. Mishra): (a) Yes, Sir.

(b) Seventeen.

Dandakaranya Scheme

- 1471. Shri Sanganna: Will the Minister of Rehabilitation and Minority Affairs be pleased to state:
- (a) what is the number of heavy motor vehicles supplied so far to the Dandakaranya Project;
- (b) what is the number of cars supplied so far;
- (c) what is average mileage done by earch vehicle in a month; and
- (d) the average quantity of petrol or diesel oil consumed in a month under each category of the vehicles?

5107

The Minister of Rehabilitation and Minority Affairs (Shri Mehr Chand Khanna): (a) and (b). A statement is given below.

(c) and (d). As the number of vehicles is large, the time and labour involved in the collection of the required information will not be commensurate with the results likely to be achieved.

STATEMENT

| SI. No. | | | | | | |
|------------|-----------|-----|-------|---|-----|--|
| Heavy | Vehicles. | | | | | |
| ı. Tru | | 100 | | | | |
| | | | TOTAL | | 100 | |
| Cars. | | | | | | |
| 1. Dod | ge Suburt | oan | | | 3 | |
| 2. Amb | assador | | | | 1 | |
| 3. Stati | on Wagor | 18 | | | 7 | |
| 4. Land | Rover | | | | I | |
| 5. Jeep | s . | | • | • | 78 | |
| | | | TOTAL | | 90 | |

रेडियो संगीत सम्मेलन

१४७२. श्री भवत दर्गतः क्या सूचना भौर प्रसारण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या यह सच है कि दिल्ली के सम्रू हाउस में, जहां हाल में भ्राकाशवाणी की ब्रोर से रेडियो संगीत सम्मेलन का भ्रायोजन किया गया था, बहुत से स्थान खाली पड़े रहे थे :
- (ख) यदि हां, तो क्या इतनी कम उपस्थिति के कारणों का पता लगाया गया है; भौर
- (ग) ऐसे समारोहों में धवः भश्चिक लोगों को ब्राकवित करने के लिए क्या कार्यवाही की जा रही है?

सूचना और प्रसारण मंत्री (डा॰ केसकर): (क) धीर (ख): जो सम्मेलन दिल्ली के सबू हाउस में होते हैं उनमें हमेशा अच्छी उपस्थिति होती है। यह सम्भव हो सकता है कि किसी किसी दिन जब कार्यकम इतना महत्वपूर्ण धीर धाकर्षक न हो, कुछ स्थान खाली रहें।

(ग) पिछले मनुभव के माधार पर इस बात का लास ध्यान रखा जाता है कि हाल में जितने स्थान हैं उससे मधिक निमंत्रण पत्र न भेजे जाएं। इस बात को स्थाल में रखते हुए कि कुछ लोग निमंत्रण स्वीकार करने पर भी नहीं माते दो वर्ष तक हाल के स्थानों से १० से १४ प्रतिशत तक मधिक निमंत्रण पत्र भेजे गये थे, इस का नतीजा मच्छा नहीं हुआ। इससे न केवल भीड़-भाइ मौर गड़बड़ ही हुई, बल्कि लोग नाराक भी हुए क्योंकि कुछ लोगों को हाल में प्रवेश न मिल सका।

इस मनुभव के बाद यह निक्रचय किया गया कि चाहे कुछ स्थान साली रहें, निमंत्रण पत्र उतने ही दिये जायें जितनी बैठने की जगह हो।

तिम्बती शरणायीं

१४७३ श्री भक्त दर्जन : क्या प्रयान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या यह सच है कि १ नवम्बर, १६५६ के बाद कुछ तिब्बती शरणार्थी उत्तर प्रदेश में गढ़वाल जिले के माना दर्रे से होकर भारत ग्राये हैं;
- (ख) यदि हां, तो उनकी संस्था कितनी है ; भौर
- (ग) उनके पुनर्वास के लिए क्या व्यवस्था की गई है ?

प्रवात मंत्री तया वैदेशिक-कार्य मंत्री (भी कवाहरलास नेहक): (क) से (ग)- देश धनत्वर १६५६ को ४४ तिब्बती घरणार्थी गढ़वाल जिले के माना वर्रे से होकर भारत में धुस भाए। इनमें देव भिक्षु (मांक्स), ४ मजदूर, २ श्रीरतें भीर ४ खोटे बच्चे हैं। श्रा जाने पर उन्होंने यह इच्छा व्यक्त की कि वे दलाई लामा से मिलेंगे श्रीर फिर गया, सारनाय, वाराणसी, सांची श्रीर रावरसल की तीर्थयाता वरें।

माना श्रीर जोशीमठ में उनके श्रावास के दौरान में उन्हें हरेक सम्भव सहायता दी गई। गरीब शरणार्थियों को मुक्त राशन दिया गया श्रीर कुछ धन की सहायता भी दी गई। वे सब सीमान्त क्षेत्रों से मसूरी श्रीर तीर्थस्थानों के लिए रवाना हो गए हैं।

Foot-wear for Coal-miners

1474. Shrimati IIa Palchoudhuri: Will the Minister of Labour and Employment be pleased to state:

- (a) whether the Committee set up by the Ministry of Labour and Employment to investigate the possibility of evolving a suitable and standard pattern of foot-wear for coalminers has submitted its report;
- (b) if so, the details of its recommendations;
- (c) whether they have been accepted; and
- (d) if so, the nature of steps taken to implement them?

The Deputy Minister of Labour (Shri Abid Ali): (a). No.

(b) to (d). Do not arise.

Export of Chilly and Tamarind

1475. Shri Subblah Ambalam: Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to state:

(a) whether any representations from Madras Government have been received to ban further export of chilly and tamarind;

- (b) if so, what steps have been taken by the Government in this regard; and
- (c) the quantity of each of these commodities exported during 1957, 1958 and the current year so far?

The Deputy Minister of Commerce and Industry (Shri Satish Chandra): (a) No. Sir.

(b) Does not arise.

(c)

Qty. in Cwts.

1957 1958 1959 (Jan.-Sept.)*

Chillies . 56,023 1,02,871 17,290

Tamarind 149,615 1,43,203 1,06,015

*Information regarding exports later than September 1959 is not available.

Certificate of Eligibility for Allotment of Accommodation

1476. Shri Nath Pai: Shri S. M. Banerjee;

Will the Minister of Works, Housing and Supply be pleased to state:

- (a) the composition of the Committee appointed by Government to consider applications for the grant of certificate of eligibility of residential accommodation by the Directorate of Estates to those Central Government officers whose fathers own house(s) in New Delhi/Delhi;
- (b) the periodicity of the meetings of the Committee;
- (c) the number of applications received so far during the current year, and the number of cases in which certificates of eligibility have been issued; and
- (d) the normal time lag between the receipt of application for a certificate of eligibility and the disposal of the application?

The Deputy Minister of Works, Housing and Supply (Shri Anii K. Chanda): (a) The Committee consists of:

> Joint Secretary and Deputy Secretary, Ministry of Works,

SIII

Housing and Supply, Director of Estates and the Assistant Financial Adviser.

- (b) The Committee meets are often as necessary; in fact, recently it has been meeting once a fortnight or even oftener.
- (c) 42 applications were received during the current year. Out of these, 13 officers have been declared as eligible for Government accommodation.
- (d) A case normally takes three to four weeks for disposal but at times longer periods are involved if the information furnished by the officer is not complete or if the Committee desires to have certain particulars not previously furnished by the officers.

Accommodation for Government Employees

1477. Shri Nath Pai: Shri S. M. Banerjee:

Will the Minister of Works, Housing and Supply be pleased to state the number of Central Government Officers in Class I. Class II and Class III posts who either themselves or whose parents or any dependent relations own houses in New Delhi/ Delhi, but who are occupying accommodation allotted by the Directorate of Estates, Government of India in New Delhi/Delhi, Class-wise and Ministry-wise?

The Minister of Works, Housing and Supply (Shri K. C. Reddy): A statement showing the required information (Ministry-wise and Classwise) is laid on the Table of the House. [See Appendix III, annexure No. 36].

Unauthorised Constructions in fugee Markets in Delhi

1478. Shri Ram Krishan Gupta:
Shri N. M. Deb:

Will the Minister of Rehabilitation and Minority Affairs be pleased to state the nature of steps taken or proposed to be taken against the shop-keepers who have made unauthorised constructions in Khanna Market, Shankar Market and other refugee markets of Delhi?

The Minister of Rehabilitation and Minority Affairs (Shri Mehr Chand Khanna): This is a matter which concerns the Local Administration or the local body concerned. The position in Delhi is no different than in any other State.

Strike at Bombay Port

1479. Shri P. G. Deb: Will the Minister of Labour and Employment be pleased to state:

- (a) whether any strike took place at Bombay Port on the 27th October, 1959; and
 - (b) if so, the reasons therefor?

The Deputy Minister of (Shri Abid Ali): (a) Yes.

(b). The strike was reported to be a protest against the alleged delay in the settlement of certain made on behalf of the workmen of the Bombay Port Trust.

Handicrafts Museum in New Delhi

1480. Shri P. G. Deb: Will Minister of Commerce and Industry be pleased to state:

- (a) whether a Handicrafts Museum is to be established in New Delhi; and
- (b) if so, what is the total amount to be spent?

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah): (a) and (b). The All India Handicrafts Board is already running a Handicrafts Museum in New Delhi since the year 1954. The Museum is, at present, housed in a private rented building at Janpath. An expenditure of about Rs. 3,05,090 has been incurred so far on purchase of exhibits and equipments etc. for the Museum.

Precision Tool Factory

1481. Shri P. G. Deb: the Will Minister of Commerce and Industry Be pleased to state:

- delegation has (a) whether any been sent to France for Precision Dol Factory:
- (b) if so, the names of the members of the deleation; and
- (c) when it is likely to be put in.o operation?

(Shri The Minister of Industry Manubhai Shah): (a) to (c). A statement is given below.

STATEMENT

A delegation consisting of the following have left for France for discussions regarding setting up, with French assistance, of a Prototype Production and Training Centre at Guindy, Madras:

- 1. Shri Nagendra Bahadur, Joint Leader Secretary to the Government of India, Ministry of Commerce and Industry.
- 2. Shri T.K. Palaniappan, Director of Industries & Commerce, Madras.
- 3. Shri P.C. Basu, Managing Director, The National Small Indus-tries Corporation, New Delhi.
- 4. Shri A. D. Bohra, Director, Indo-German Prototype Production and Training Centre, The National Small Industries Corporation, New Delhi.

No agreement has yet been finalised between the French Government and the Government of India, and as such no firm date for its being set up can be indicated.

Bonus to Workers in Hindustan Antibiotics Ltd.

1482, Shri P. G. Deb: Will Minister of Commerce and Industry be pleased to state:

(a) whether any scheme regarding production bonus has been adopted in the Hindustan Antibiotics Ltd., Pimpri;

- (b) if so, hew much amount has been paid to workers so far: and
- (c) what are the main features of the scheme?

Minister of Industry The Manubhai Shah): (a) and (c). There is no "production bonus scheme".

Antibiotics (b) The Hindustan Limited, Pimpri have made ad boc production incentive awards in cash to the extent of Rs. 1-10 lakhs and Rs. 1.33 lakhs to their workers and staff in respect of the working of the in the years 1957-58 Factory 1958-59 respectively.

Withdrawal of Labour Dispute Cases from Courts

1483. Shri Anthony Piliai:
Shri L. Achaw Singh:

Will the Minister of Labour Employment be pleased to state how many cases were withdrawn from the Supreme Court and the High Courts by either the employers or workers after the code of discipline was accepted by Tripartite Conference?

The Deputy Minister of Labour (Shri Abid Ali): Twenty.

Grants to Sir Gangaram Hospital

1484. Shri S. A. Mehdi: Will Minister of Rehabilitation and Minority Affairs be pleased to state:

- (a) whether the grant for Sir Gangaram Hospital, New Delhi has been stopped recently;
- (b) if so, the reasons for the same and the total grant given so far; and
- (c) what alternative arrangement has been made to help this hospital?

The Minister of Rehabilitation and Minority Affairs (Shri Mehr Chand Rhanna): (a) to (c). There is no commitment on the part of this Ministry to give any grant to the institution. However, a sum of Rs. 10,75,000 has so far been given as grant to he Hospital.

Import of Cloves

1485. Shri S. A. Mehdi: Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to state:

- (a) whether there is any proposal to import cloves from Zanzibar; and
- (b) if so, the total quantity to be imported?

The Deputy Minister of Commerce and Industry (Shri Satish Chandra):
(a) and (b). Imports of cloves from Zanzibar take place under the current import policy. The present quota for established importers for the period October, 1959 to March 1960 is 10 per cent.

Unsold Handloom Goods in Andhra Pradesh

1486. Shri Madhusudan Rao: William Minister of Commerce and Industry be pleased to state:

- (a) the present stock of unsold handloom goods in regard to co-operative Sector in Andhra Pradesh; and
- (b) what steps Government has taken to dispose of this stock?

The Minister of Commerce (Shri Kanungo): (a) and (b). The information is being collected and will be laid on the Table of the House.

Development of Hilly Regions of Punjab

1487. { Shri Hem Raj: Shri Daljit Singh:

Will the Minister of Planning be pleased to refer to the reply given to Unstarred Question No. 48 on the 16th November, 1959 and state:

- (a) whether the Programme Advisor has since discussed the proposals for the development of hilly regions of the Punjab with the State Government;
 - (b) if so, the result thereof;

- (c) whether it is a fact that the elected representatives of these regions have represented to the Planning Commission for setting up of a Special Development Council and setting apart of special funds for their development; and
 - (d) if so, the action taken thereon?

The Deputy Minister of Planning (Shri S. N. Mishra); (a) Yes.

- (b) The Adviser's report is under preparation.
 - (c) Yes.
- (d) For 1960-61 separate financial provisions are being made for the development programmes of hilly areas. The proposal for the constitution of an Advisory Committee for the development of hilly areas is under study.

Bhotiyas

1488. Shri P. C. Borooah: Will the Prime Minister be pleased to state:

(a) whether it is a fact that the Secretary of the Indo-Tibetan Burder Legislators' Association has sent a memorandum to Government detailing the difficulties of the 40,000 Bhotiyas who used to trade in Tibet formerly; and

(b) if so, action taken thereon?

The Prime Minister and Minister of External Affairs (Shri Jawaharla) Nehru): (a) and (b). A copy of the Memorandum, which is addressed to the U. P. Government, has recently been received by the Government of India. As is well-known, the Government of India have been giving substantial assistance for the development of the border areas. They have recently addressed the U.P. Government to consider measures to alleviate economic distress which may be caused amongst the border people as a result of the dislocation of the trade with Tibet.

Shepe-cum-fiats in Kidwai Nagar Delhi

1489. Shri Muhammed Elias: Will the Minister of Works, Housing and Supply be pleased to state:

- (a) whether it is a fact that shopscum-flats have been constructed and completed in Kidwai Nagar, Delhi;
- (b) if so, number of shops and flats constructed:
 - (c) the number of them allotted;
- (d) if not, the stall holders of which road berm will be allotted these shops and flats in Kidwai Nagar:
- (e) the authority responsible for allotting these slops and flats; and
- (f) when will these shops and flats be allotted?

The Minister of Works, Housing and Supply (Shri K. C. Reddy): (a) Yes.

- (b) 98 shops and 16 flats.
- (c) None so far; steps are being taken to allot them.
- (d) to (f). No decision has yet been taken.

Export of Onions

1490. Shri Jadhav: Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to state what quota was allotted to the Private Merchants and the Co-operative Societies and allied bodies to export onions in the year 1958-59 and 1959-60 so far?

The Deputy Minister of Commerce and Industry (Shri Satish Chandra):

| Trade | Co- |
|-------|----------|
| | operativ |
| | Societie |
| | |

| 1958-59 | | | Tons 60,150 | Licensed freely. |
|---------|---|---|----------------|---------------------|
| 1959-60 | ٠ | • | ?4,000 | Licensed freely. |

Indianisation of Foreign Firms

1491. Shri Ram Krishan Gupta: Shri Basumatari:

Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to refer to the reply given to Unstarred Question No. 11 on the 3rd August, 1959 and state:

- (a) whether the discussions with the representatives of foreign firms for Indianisation of those firms and plantations has been concluded; and
 - (b) if so, the result thereof?

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah): (a) and (b). Further discussions with the Associated Chambers of Commerce have taken place. Certain proposals and views have been put forward and some further data have also been supplied. These are under consideration.

12.15 hrs.

PAPERS LAID ON THE TABLE

TREATMENT OF INDIAN POLICE PATROL
PARTY CAPTURED BY CHINESE TROOPS

The Prime Minister and Minister of External Affairs (Shri Jawaharlal Nehru): I had promised to lay on the Table certain papers in connection with the treatment of Indian prisoners by the Chinese authorities in Ladakh.

I beg to lay on the Table a copy of each of the following papers exchanged between the Governments of India and China regarding the treatment of the Indian police patrol party captured by the Chinese troops at Chang Chenmo Valley on the 21st October, 1959.

- Unofficial memorandum of the Chinese Government, 14th November, 1959.
- (2) Note of the Indian Government, 24th November, 1959.
- (3) Note of the Chimese Government, 28th November, 1959.

[Shri Jawaharlal Nehru.]

(4) Note of the Indian Government, 13th December, 1959 along with Statement of Shri Karam Singh. (Placed in Library, See No. LT-1791/59.)

Shri Vajpayee (Balrampur): May I point out that the papers now laid on the Table by the hon. Prime Minister do not include the Chinese reply to his letter of the 16th November, 1959? A month has passed. How long are we going to wait for their reply?

Shri Jawaharial Nehru: We are dealing with the question of the treatment of Indian prisoners. These are the only papers in relation to that that I had promised to place, and I have placed them. As for the reply, I cannot place a reply on the Table of the House when I have not received it.

Discussion on State Trading Corporation Report

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah): On behalf of Shri Kanungo, I beg to lay on the Table a copy of statement correcting the information given on the 11th September, 1959, in reply to the point raised by Shri V. P. Nayar during the discussion on the Report of the State Trading Corporation of India Limited regarding the association of the Directors of the Corporation with private firms. [See Appendix III, Annexure No. 37].

Annual Report of Hindustan Antibiotics Limited

Shri Manubhai Shah: I beg to lay on the Table, under sub-section (1) of Section 639 of the Companies Act, 1956, a copy of the Annual Report of the Hindustan Antibiotics Limited for the year 1958-59 along with the Audited Accounts and comments of the Comptroller and Auditor-General thereon. [Placed in Library, See No. LT-1793/59.]

12.17 hrs.

CALLING ATTENTION TO MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE

MINORITY COMMUNITY IN EAST PAKISTAN

Shrimati Ila Palchoudhuri (Nabadwip): Under Rule 197, I beg to call the attention of the Prime Minister to the following matter of urgent public importance and I request that he may make a statement thereon:

"The restrictions reported to have been imposed by the Government of East Pakistan on members of minority community in the matter of renewal of their passports."

The Deputy Minister of External Affairs (Shrimati Lakshmi Menon): Government of India have, during the last few months, seen reports in the Press that no fresh passports were being issued to the minority community in East Pakistan, that the passports presented for renewal were being seized and that the applicants for India-Pakistan passports were being asked to pay a security deposit of Rs. 100.

From enquiries, it has been ascertained that the Government of East Pakistan have:

- (i) undertaken a rigorous check of the antecedents of passport holders, particularly those belonging to the minority community, as a part of the drive against smuggling and large numbers of passports are held up with the district authorities pending the conclusion of necessary enquiries;
- (ii) directed that those applying for new India-Pakistan passports should deposit Rs. 100 before issue of the passport and those who already hold a passport should deposit Rs. 100 before undertaking travel to India; and

(iii) issued instructions that the members of the minority community should be asked to give detailed information about their income, taxes paid, the members of their family living outside Pakistan, remittances made etc.

These measures taken by the Government of East Pakistan and the consequent delays in the renewal of old passports and the issue of new passports have been causing serious hardship to the members of the minority community in East Pakistan. This, in some measure, explains the monthly average figures of migration which have gone up from 411 in 1958 to 609 during the first ten months of 1959.

Our representatives at Dacca and Karachi had taken up this matter with the Pakistan authorities concerned. The Government of East Pakistan have blot our representative that the scrutiny of antecedents of passport holders has been undertaken with a view to check smuggling and to detect forged passports, large numbers of which have been in circulation. As regards the deposit, the Pakistan authorities have stated that deposits have been asked for to enable the East Pakistan Government, in case of need, to arrange for repatriation of their nationals who have travelled to India and that larger deposits have been asked for from those applying for passport facilities to travel to countries other than India. As regards the detailed information about income, taxes paid etc., the East Pakistan authorities have stated that these enquiries are being made with a view to check illicit transfer of funds in violation of foreign exchange regulations. Pakistan authorities also informed our High Commissioner in Karachi that the measures taken by them apply to all Pakistan nationals and that there is no basis for the allegation that there is any discrimination against members of the minority community in Pakistan.

When this matter was raised informally at the last meeting of the Chief Sec. claries of the Eastern zone held in Calcutta in August, 1959, the East Pakistan authorities promised to issue instructions to expedite the enquiries and relieve the hardship caused by the delay in the renewal or issue of passports. Our representatives at Dacca and Karachi are following up this matter with the authorities concerned in pursuance of this assurance given at the conference of Chief Secretaries.

Shrimati Renu Chakravartty (Basirhat): This is one of the points covered by the Nehru-Liaqat Agreement. Actually besides this, there are other clauses also in the Nehru-Liaqat Agreement, and in recent times many of them are being by-passed by the Pakistan Government. Is there any method of taking up these issues further by discussion at the level of the Secretaries, or is it to be taken up in the normal course going through the Pakistan High Commissioner?

Shrimati Lakshmi Menon: Certain procedures were laid down in the Minister-level conference and then the Chief Secretaries' Conference. I think these are the only ways in which these things can be implemented.

Shrimati Renu Chakravartty: At the level of the Chief Secretaries' conference. some discussions had taken place recently. Are these conferences at the Chief Secretaries' level going to take place at periodcal intervals, so that we can forward these violations of the Nehru-Liagat agreement to them and they could take them up? If so, at what intervals will these Chief Secretaries' conferences take place?

Shrimati Lakshmi Menon: That depends upon the urgency of the question and also the agreement between the two Governments as to the need for holding such conferences. I cannot give any kind of assurance in that respect.

Shri Panigrahi (Puri): Recently, we were told that migration has not in-

[Shri Panigrahi.]

creased from East Pakistan to India. and if it has increased, it may be due to other reasons such as economic conditions. But the statement made reveals that it is because of the hardships imposed on the minority community that the migration increased. And the Pakistan Government have given some explanation. I would like to know whether the Government of India are satisfied with the explanation offered by the East Pakistan authorities, and if not, what other steps are going to be taken order to pursue this matter so that our citizens there do not suffer from these hardships?

The Minister of Rehabilitation and Minority Affairs (Shri Mehr Chand Khanna): They are the citizens Pakistan, they are not our citizens.

Shri Panigrahi: I stand corrected What steps are going to be taken to pursue this matter so that the minorities there do not suffer from these hardships?

Shrimati Lakshmi Menon: I have nothing more to say.

Shrimati Ila Palchoudhuri: May I seck a clarification? The Deputy Minister was pleased to state that there was a meeting in August, 1959. will be observed from the statement laid on the Table of the House only the other day, I think, on the December, 1959, that between September, 1959, and October, 1959, has been a sudden influx, particularly, into West Bengal. It has also been reported to us that there is a sense of a great deal of insecurity amongst the minority community in East Pakistan. Is there any way of settling this issue? What do the Government of India intend to do about this?

Shrimati Lakshmi Menon: have stated already, whatever the

Government of India have to say is included in the statement. I have nothing more to add.

Shri Panigrahi: Are Government satisfied with the answer? That is what we would like to know.

Mr. Speaker: The hon. Deputy Minister has made a statement. And hon. Members have asked some questions. If the Government of India are .atisfied, they will take further action. But, on this statement, I am going to allow further questions.

12:23 hrs

ADMINISTRATION OF EVACUEE PROPERTY (AMENDMENT) BILL'

The Minister of Rehabilitation and Minority Affairs (Shri Mehr Chand Khanna): I beg to move for leave to introduce a Bill further to amend the Administration of Evacuee Property Act. 1950.

Mr. Speaker: The question is:

"That leave be granted to introduce a Bill further to amend the Administration of Evacuee Property Act, 1950".

The motion was adopted.

Shri Mehr Chand Khanna: I introduce the Bill.

12.234 hrs.

(COM-DISPLACED PERSONS PENSATION AND REHABILITAT-SECOND AMENDMENT ION) BILL*

The Minister of Rehabilitation and Minority Affairs (Shri Mehr Chand Khanna): I beg to move for leave to introduce a Bill further to amend the Displaced Persons (Compensation and Rehabilitation) Act, 1954.

*Published in the Gazette of India Extraordinary Part II-Section 2, dated 15-12-1959.

Mr. Speaker: The question is:

"That leave be granted to introduce a Bill further to amend the Displaced Persons (Compensation and Rehabilitation) Act, 1954."

The motion was adopted.

Shri Mehr Chand Khanna: I introduce the Bill.

12:24 hrs.

APPROPRIATION (NO. 8) BILL

The Deputy Minister of Finance (Shrimati Tarkeshwari Sinha): On behalf of Shri Morarji Desai, I beg to move:

"That the Bill to authorise payment and appropriation of certain further sums from and out of the Consolidated Fund of India for the services of the financial year 1959-60 be taken into consideration."

Mr. Speaker: The question is:

"That the Bill to authorise payment and appropriation of certain further sums from and out of the Consolidated Fund of India for the services of the financial year 1959-60 be taken into consideration."

The motion was adopted.

Mr. Speaker: The question is:

"That clauses 1 to 3, the Schedule, the Enacting Formula and the Long Title stand part of the Bill".

The motion was adopted.

Clauses 1 to 3, the Schedule, the Enacting Formula and the Long Title were added to the Bill.

Shrimati Tarkeshwari Sinha: I beg to move:

"That the Bill be passed".

Mr. Speaker: The question is:

"That the Bill be passed".

The motion was adopted.

12:25 hrs.

TRIPURA LAND REVENUE AND LAND REFORMS BILL-contd.

Mr. Speaker: The House will now take up further consideration of the following motion moved by Datar on the 11th December, namely:—

1959

"That the Bill to consolidate and amend the law relating to land revenue in the Union Territory of Tripura and to provide for the acquisition of estates and for certain other measures of land reform be referred to a Joint Committee of the Houses consisting of 30 Members; 20 from this House, namely, Shri Bangshi Thakur, Shri Rungsung Suisa, Shri Dharanidhar Basumatari, Shri Etikala Madhusudan Rao, Shri Ghanshyamlal Oza, Shri Bibhuti Mishra, Major Raja Bahadur Birendra Bahadur Singh, Shri M. Gulam Mohideen, Shri Shobha Ram, Shri Raja Ram Misra, Shri J. B. S. Bist, Shri N. B. Maiti, Shri H. Siddananjappa, Shri Dasaratha Deb, Shri Laisram Achaw Singh, Shri Pramathanath Banerjee, Shri Tridib Kumar Chaudhuri, Shri Ram Chandra Majhi, Shri Bijaya Chandrasingh Prodhan and Shri B. N. Datar, and 10 members from Rajya Sabha;

that in order to constitute a sitting of the Joint Committee the quorum shall be one-third of the total number of Members of the Joint Committee:

^{*}Mover with the recommendation of the President.

[Mr. Speaker]

5127

that the Committee shall make a report to this House by the first day of the next session:

that in other respects the Rules of Procedure of this House relating to Parliamentary Committees will apply with such variations and modifications as the Speaker may make; and

that this House recommends to Rajya Sabha that Rajya do join the said Joint Committee and communicate to this House the names of Members to appointed by Raiva Sabha to the Joint Committee."

Shri Radhelal Vyas, who was possession of the House, may continue his speech now.

An Hon, Member: What is the time allotted for this Bill?

Mr. Speaker: The time originally allotted was 3 hours: the time taken so far is 2 hours and 45 minutes. Only 15 minutes now remain. The time taken by the hon. Member Radhelal Vyas already is 17 minutes. Does he want to take the rest of the fifteen minutes himself?

Shri Radhelal Vyas (Ujjain): I have a few sugestions to make.

Mr. Speaker: All right; he may take three more minutes.

Shri Radhelal Vyas: If necessary, you may be kindly pleased to extend the time by a few minutes.

Mr. Speaker: Is it so necessary? Anyhow, we shall see.

Shri Radhelal Vyas: I have dealt up to clause 62 already; now, I come to clause 63 which provides for processes for the recovery of arrears of land revenue. I would like suggest for the consideration of the Joint Committee

Mr. Speaker: At this stage. do not go into the clause-by-clause consideration

Shri Radhelal Vyas: But some suggestions will have to be given for the consideration of the Joint Committee.

Mr. Speaker: That is all right, but suggestions need not be made clause-by-clause. The hon, Member may state only the general at this stage, and say whether Bill is one which has to be considered or not. Or, he may generally that these are the main points, these are the weak points and so on. He ought not to deal with it clause-byclause and say that this clause quires some amendment in this manner and so on.

The Minister of State in the Ministry of Home Affairs (Shri That is what he has been doing.

Mr. Speaker: If there is an enormous question of principle involved in it, then I have no objection if a reference to the clause is made. Otherwise, to say that the composition of a committee should be five members, or the period of two years may be reduced to one year or increased three years, the rate of compensation may be something else, and so would mean going into details. There may be different views on these things, but these are all details which will have to be looked into Joint Committee, Hon, Members who want to make suggestions can send those suggestions to the Members of the Committee, and they will all be placed before the Joint Committee and circulated to the Members thereof; I shall certainly do so. And if the hon. Members have time to attend the meetings of the Joint Committee they can all attend, without any restriction: they can place their viewpoints before the Joint Committee, though they cannot vote. That is already there in the rules.

Shri Radhelal Vyas: For recovery of arrears, one of the processes should be to hand over the land to some receiver or to give it in lease to some other person. This can also be one of the ways of recovering the arrears, so that the landowner may be saved from parting with his land.

As regards appeal, that is a verv important question. In clause 96, it has been stated that 'an appeal shall lie against every original order passed under this Act'. If every order is to be appealed against, then it will prolong the litigation, and the decision will be very much delayed. the appeal should be against the final order of the competent authority, or in particular cases. against interim orders against which an appeal should be specially provided for in the Bill itself, as has been done in the Civil Procedure Code. Every order should not be made appealable. I hope the Joint Committee will consider point and would recommend that an appeal shall lie against the final order or such interim orders against which appeal would be provided for in the Act itself.

As regards limitation for appeals, it has been provided in the Bill that the time taken for obtaining a certifled copy shall be excluded. But there might be cases where it would be very necessary to extend the limitation as it has been provided in the law of limitation. So the general provision for extension of time as is made in the law of limitation should be made applicable to appeals against this Bill also

Wherever there is a question of right between two private persons, it has been provided that the aggrieved person can go to a civil court to question any order of the competent authority, but where there is a dispute between a private person and Government, the jurisdiction of the civil court has been barred. You such kindly refer to clause 99. In cases also, even in review cases. where a competent authority or any revenue officer comes to know

some mistake has occurred, if he wants to review the order, he should have the power to do so even if it be a dispute between Government and a private person.

As regards rules, the Administrator has been given power to frame issue rules. I would like to submit that the rule-making power be with the Administrator, but should exercise it only with the previous approval and sanction of Government. As regards surrender the land, it has been said that if the raivat wants to surrender his holding. he must do so by giving three months notice. This should not be necessary. He should be able to surrender land at any time and Government should take possession of it. Why should there be a time-limit or notice necessary for this? As regards rent received by the raivat if no receipt is issued for the same, it is not made punishable. There should be a provision to the effect that if the landholder fails to issue a receipt for rent received, it is an offence lighte punishment.

Regarding eviction of a tenant of a landholder under disability, a period of five years has been mentioned. He will not be evicted after a lapse five years from the date the disabled person ceases to be under disability. The period of five years is too long; it should not be more than years. If he had been under disability for a number of years and if the disability is removed, within the next three years the person who ceases to be under disability must have right to evict the person concerned. So the period of five years should be reduced to three years.

Similarly, a person taking possession for personal cultivation under the order of a court and failing to cultivate within four years will surrender his land to the original tenant. But I would like to submit that four years are a very short period. If he fails to cultivate within the next twelve years, then he should be made liable to return the land to the tenant from whom it was given over to him.

[Shri Radhelal Vyas]

As regards option to purchase a land which is disposed of by a raiyat under clause 134, a reasonable price is to be determined, if there is a dispute with regard to it, by the competent authority. The basis for such determination is the average price prevailing during the ten years preceding the sale of the land. The price of land varies from year to year and to fix the reasonable price on the basis of the prices that prevailed during the previous ten years is not equitable.

Shri Ranga (Tenali): It is too long a period.

Shri Radhelal Vyas: It is too long. I would, therefore, submit that the fair price or reasonable price prevailing at the time the land is sought to be transferred....

Shri Ranga: That is right.

Shri Radhelal Vyas:or, at the most, the average of the prices prevailing during the preceding three years, should form the basis of the transaction. In no case should it go beyond three years. Lastly, I would invite attention to clause 185.

"Any transfer, partition or lease of land made in contravention of the provisions of this Chapter shall be void".

This is all right. I have nothing say about it. But I am opposed sub-clauses (2) and (3). These relate to the registration of deeds. If the transfer etc. is void, even if it is registered, it will have no effect. But to make a provision in the law that the Registrar shall not register if the transaction has been effected in contravention of the provisions of the Chapter is not proper. How is Registrar to go into all these things and make an inquiry? As soon as document is presented to for registration, he has to register it. is not his duty or within the scope of his duty to go behind it, to record evidence and find out whether

transfer is contrary to or in contravention of the provisions of this Chapter. It is unnecessary. It is enough that the transfer, partition or lease is presented; the competent court or the competent authority shall declare it void, if it is void, even if the document is registered. So I would submit that sub-clauses (2) and (3) should be deleted.

Shri Datar: I am obliged to Members of this House because they have welcomed a number of Droposals. Even my hon, friend, Shri Ranga, had to concede that there were a number of salutary provisions this Bill. May I also add that a number of suggestions have been made by hon. Members so far as the different clauses are concerned? I would assure them that the Joint Committee would go into all these provisions and make such improvements, if any, they consider necessary. I would only reply in a general way to certain points raised by hon. Members.

Shri Radhelal Vyas and a number of other hon. Members made a reference to the earlier part of this Bill in which have been laid down provisions regarding the land revenue administration. Possibly they are not aware that there are exactly similar provisions in some of the land codes which have stood the test of May I point out in this connection that we have the Land Revenue Code which has been in use for, I believe, a very number of years and the provisions of which have, on the whole, been found very satisfactory? Similarly, we have a Land Revenue Code in Madhya Pradesh. A large number of provisions in this Bill concerning the land revenue administration is taken these two codes amongst others. Under the circumstances, I would submit to this House that when provisions have been found by experience to be satisfactory, we ought to apply them to Tripura also. the hon. Members seen that there are similar provisions in these land revenue codes about sales, about record of rights, correction of boundaries, preparation of maps etc., they would not have made the comments that they did. I believe that they thought that these were new provisions. They are exactly the same provisions. Under the Land Revenue Codes a number of matters have to be decided by the land revenue authorities.

One hon. Member was struck by a provision that all the property owned by an owner vests in Government. That is one of the fundamental principles on which the right land is based. If any particular land is owned by a private person different considerations arise. Otherwise, as under section 37 of the Bombay Land Revenue Code provisions have to be made because you cannot think of any property without any owner. And here, you will agree that Government, on behalf of the people have to hold these lands. That is the reason why such a provision has been made.

Execution sales under the Land Revenue Act have also to be provided for. Appeals have to be provided for; and it would not be correct to say that these provisions have to be taken over from the Code of Civil Procedure or from some other legislation. The Land Revenue Code has to complete in itself. In this territory of Tripura it was found that there were a number of Acts; but they were not up to date; they were not complete. That is why in this Bill have introduced in the earlier part all the provisions regarding revenue administration.

Then, certain objections were raised regarding the principles that we have followed in making certain land reform proposals. In this connection I may add that we have got the Second Five Year Plan where the whole question has been discussed in all its aspects and general lines have been laid down on which every State Government is expected to proceed.

In this connection I would like to invite the attention of the House to Chapter IX where the whole question has been considered in all details. If hon. Members will go through the provisions of this Chapter they will find that in the Bill we have generally followed all those principles. That is why I stated that the present Bill was a model Bill. To a large extent, wherever there was any need, any State Government may follow it provided they find that it is necessary.

In respect of land reforms this Second Five Year Plan has suggested that immediate steps ought to For example, they point out that there ought to be, as early possible, the abolition of intermediaries. They refer to some of the States where such intermediaries have been abolished and they have pointed out that it ought to be done so far as Tripura was concerned. The State of Tripura was specifically mentioned and that is the reason why we have. to a large extent, naturally borrowed from the principles laid down in the Second Five Year Plan.

If these two items are taken into account, namely, the Land Revenue Codes in the various States for land revenue administration and the principles laid down in the Second Five Year Plan for introducing reforms on a number of points, then, possibly a large volume of the criticism which has been made here will have disappeared.

I would not like to go very deeply into the various provisions. A number of hon. Members have pointed them out. I would also point out that these questions will be considered. But, when certain general questions are raised, then, one has to reply at least to a certain extent.

A point was made out that unauthorised occupation should be regularised by bringing it down almost to the date of the Bill itself. That would not be a proper matter. So far as unauthorised occupation is concerned, it is to be provided against except where [Shri Datar]

5135

in the interests of the people it can be regularised. That point also has to be taken into account.

Another point was made that if a tenant or a person in possession did not cultivate the land properly ought not to be evicted immediately. I was surprised at my hon, friend Shri Vyas contending that even if the land was not cultivated for 12 years no action should be taken within That is not the correct attivears. tude to take. In this connection we shall also understand that while the interests of the agriculturists have to be fully provided for we have also to take into account the larger public interests of the country; and the larger interests of the country that no land should remain uncultivated because, as you are aware. the question of foodgrains is a very portant one. Therefore, the larger question of the interests of the people at large and the question guarding the rights of the cultivators have to go together. That is reason why it has been pointed out that a land shall not be allowed remain uncultivated for long in the interests of society.

An objection was raised that the tenant should not be evicted at all. "May I point out that it is a very wide assertion? Whenever land is not properly looked after, and especially the land becomes the subject-matter of what is known in the Law of Torts as active waste—I can understand hon. Members contending that if there is passive waste the tenant or the occupant should be held liable—whenever acts of positive waste are committed, naturally, that ought to constitute a ground for eviction.

It is open to him to cultivate the land properly, to reap its advantages and to satisfy the obligations that will be thrown upon him by the law. But to go further and damage the land, to use it in an improper way so as to make it almost permanently unfit for cultivation is an act which cannot be

tolerated in the interests of society. That is the reason why it has been laid down that whenever there is an act of active waste it ought to be provided against.

A number of hon. Members tended that even if the rent is not paid the tenant ought not to be evicted. That again, you will find, is not a proper assertion. Α period has After the rent been given to him. becomes due, within 3 months he has to pay. Even after that a certain further concession has been given. But a tenant has to know that he has to reap the fruits of his cultivation subject to his obligation to pay rent. As you will have seen, we have taken all proper steps to see that the rent that is fixed is a reasonable rent, not arbitrary rent, not extortionate rent. Secondly, in such cases you will have seen that whenever a tenant is allowed to be in possession he will continue for a period of five years together unless the land owner or the raivat requires the land to the extent of his personal cultivation.

A number of hon. Members have complained about the definition 'personal cultivation'. The Second Five Year Plan has pointed out that personal cultivation includes his being resident on or as near the land 88 possible because unless the man there he cannot carry on either that kind of cultivation or that kind supervision. These are the points which require that whenever purports to cultivate land personally he bught to reside on or near the land or as near as possible. What would be 'as near as possible' would be considered and described by the Sometimes it may be within a mile; sometimes it may be more. It all depends upon the particular where the land is situate. That is the reason why a rule will be made regarding the place where a man can reside without going against the provisions and principle of personal cultivation. We have laid down a certain date. That was the date OD

which this Bill was originally published. It was considered and then it was found that some changes necessary in the Bill that was published. That was the reason why that particular date has been put here. My friend Shri Ranga complained that no restriction should be placed on the right of alienation. wish he had known the conditions in Delhi, how attempts are being made to by-pass a law that the Government are going to make and how the prices are rising. It is of great inconvenience to the people if the prices allowed to go beyond reasonable levels and people are allowed to take advantage of the intentions of Government, after the intentions are made known.

shri Ranga: My point is whether the Government's intentions in regard to the fixation of ceiling and their ejection to the transfer of lands even among the members of their families were made known by tom tom in the villages in Tripura State in 1957. It was not so. Is the Government contemplating to put any restriction on the people's right to transfer their houses if they possess a large number of houses in the towns or other places, merely because the prices are rising?

Shri Datar: The Bill was published according to the usual procedures. Copies of the Bills were available everywhere, even in the village offices.

Shri Ranga: Was it done in 1957?

Shri Datar: In these circumstances, may I point out that it would not be open to any person to claim ignorance of law? Here in this case the Bill was published for public information and therefore, it should be taken that every man understood that such a Bill was published.

Shri Ranga: Was it published in 1957 in this form?

Shri Datar: The hon. Member has not understood me. This Bill was first published in 1957. It was given wide publicity according to the usual rules. Thereafter it was found that 313 (Ai) LSD—5.

certain changes ought to be They are not very material changes. That is the reason why the date of the publication of the Bill has been considered as an important and critical date. Whatever is being done after that date will be disregarded, vided they are against the principles of this Bill. Otherwise, it will continue as it is. That is the reason why this date has been purposely fixed. Otherwise, immediately the Government makes a declaration of their proposals, people will not be wanting to take recourse to certain bogus transactions and give it the colour of proper and bona fide transaction for the purpose of defeating the provisions of the Bill itself. That is why in all such cases a previous date has to be mentioned. Even in the case of Delhi that has got to be mentioned. Otherwise you will find that the price will rise and the purpose of the Act will be defeated.

When the Government takes over the land, how is it to be distributed? That question was asked rightly. That question will be fully considered and to the extent it is possible, priorities will also be laid down. Another hon. Member suggested that importance should not be given to co-operative societies. To the extent possible, if would be better to encourage co-operation among the cultivators among the others as well. A contention was put forward against the provision restricting the transfer of lands of the Scheduled Tribe peoples among themselves but allowing such transfers in favour of a co-operative society. If something by way of further restriction were to be laid down, it would be inconvenient to the members of the tribal communities themselves because sometimes they would like to money for the purpose of developing the land or for certain other purposés and in such cases it ought to be open to them to mortgage or pledge the said properties to a bona fide co-operative society. In the interest of the tribal people themselves this provision by way of exemption from the rule has **DECEMBER 15, 1989**

(Shri Bater)

been faid down there. Great care has Miso been taken to see that the rent is neither very high nor very low. Provisions have been made regarding permissible limits, ceilings, etc. My hon. friend. Shri Ranga, raised the general duestion of ceiling. This has been considered for a number of years and the broad principles have been laid down. It is not necessary at this stage for me to reply to the general question as to why no ceiling has been laid down in respect of the other incomes. In respect of the celling on lands, there are some special considerations. On account of the historical circumstances. the persons who cultivated the lands were not unfortunately in possession thereof and we have a large class of persons who are agriculturists landless. We are also anxious that the position of the agriculturist is improved as much as the hon. Member wants it. (Interruptions.) criterion the hon. Member laid down yesterday was that they ought to come to the standard of the higher middle class. These are all the objects that we have kept in view. But we have to rise gradually to the objectives. It is in this connection that there ought to be a ceiling on lands as I have stated for a variety of reasons so that rom these lands more foodgrains should be available and secondly more persons could have at least some land to grow crops upon.

Shri Ranga: What about the homeless people?

Shri Datar: It is difficult to answer his running commentary which I could not even follow. I would submit to my hon. friend that it would not be proper to raise the general question here because there are special circumstances so far as the agriculturists are concerned. Their need is the most pressing. It is naturally for this reason that lands have to be singled out for a proper ceiling.

We have made certain gradations so far as the family is concerned. A fairly large and wide definition of the . word 'family' has been given and it

consists of the father and motiver. Children are also included and I may add that even grand-children are included. If all the heirs on this or that side, however distant they may be, are Put in, it would defeat the purpose We have in view ultimately. 25 acres have been laid down as a family whit for a family of about five persons. If there are more, they are entitled to more but we have also to lay down a maximum of 50 acres for a family. These are the principles that have been laid down. Something has got to be done because the agriculturists are the class that need the greatest measure of help in this respect by way legislation, especially on the social side, on land reforms, etc. Otherwise, he is aware of the great hardship under which the landless labourers _ have cultivated their lands. They give all their labour but get little. They do not ownership rights at all. These things have continued for centuries together, and the earliest we go to their aid the better. By the earliest time possible we should give them substantial rights. rights of ownership wherever that is possible. If they are tenants under the new Bill they must have, what is called, security of tenure, security of rent. There should not be racket, any extortion as far as rent is concerned. That also has been provided for.

13 hrs.

A question was raised about intermediaries. Intermediaries as a class will disappear. But if, for example, the intermediaries are anxious to have some land for their cultivation, according to the limit laid down, why should not their cases be considered? They will also become "raiyats", nothing more. They will also be placed on the same footing as others who are getting lands. There also we have laid down a humber of limits. There is basic unit, the family unit and the permissible limit which have all been fixed. So far as these intermediaries are concerned, they were in possession of lands for a number of years.

they did very little but they reaped steet the benefit of the land. They, as a class, the intermediaries, have to be abolished. If, for example, they are prepared to have some land according to our rules for the purpose of personal cultivation—that ought to be noted—they should not be excluded. That is the reason why this principle also has been laid down, and I would request the hon. Member to note what

has been done in this respect.

Other politis were raised including the question of surrender. Unfortunatély, we know that the agriculturists as a class are still highly illiterate and to a large extent they are helpless. Oftentimes, whenever there are such surrenders they are found to be bogus; in any case, they are far from voluntary. That is the reason why a certain restriction has been laid down, that a surrender to be considered bona fide has to satisfy certain conditions. The Government authority has to be satisfied that it was a bong fide and voluntary surrender; otherwise would not be called a surrender at all. A surrender would be losing of one's own right by one's own act, what you call self-denial. Therefore, the questions to be considered would be whether it is a case of self-denial and the party concerned is really surrendermg the lands. To that extent, provisions have been laid down for testing the form, the voluntary nature of such surrenders whenever they come to the notice of the authorities. That is the reason why a special provision had to be made about surrender.

I think, Sir, I have dealt with most of the points. Lastly, I assure the hon. Members that the Joint Committee will be considering all these matters, and I am confident they will give us a report which will be fully acceptable to the hon. Members.

mr. Speaker: The question is:

"That the Bill to consolidate and amerid the law relating to land revenue in the Union Territory of Tripitra and to provide for the actualition of estates and for certain other measures of land reform be referred to a Joint Com-

mittee of the Houses consisting of 30 members; 20 from this House, namely:—

Shri Bangshi Thakur. Rungsung Suisa, Shri Dharanidhar Basumatari, Shri Etikala Madhusudari Rao, Shri Chartshvamlal Oza. Bibhuti Shri Mishra, Major Raja Bahadur Birendra Bahadur Singh, Shri M. Gulam Mohideen Shri Shobha Ram, Shri Raja Ram Misra, Shri J. B. S. Bist. Shri N. B. Maiti. Siddananiappa. Shri H. Dasaratha Deb, Shri Laisram Achaw Singh, Shri Pramathanath Baneriee, Shri Tridib Kumar Chaudhuri Shri Ram Chandra Majhi, Shri Bijaya Chandrasingh Prodhan and Shri B. N. Datar and 10 Members from Raiya Sabha:

that in order to constitute a sitting of the Joint Committee the quorum shall be one-third of the total number of members of the Joint Committee:

that the Committee shall make a report to this House by the first day of the next session:

that in other respects the Rules of Procedure of this House relating to Parliamentary Committées will apply with such variations and modifications as the Speaker may make; and

that this House recommends to Rajya Sabha that Rajya Sabha do join the said Joint Committée and communicate to this House the names of members to be appointed by Rajya Sabha to the Joint Committee."

The motion was adopted.

13.05 hrs.

MOTION RE: SUSPENSION OF RULE

Mr. Speaker: Shri Datar may now move his motion regarding suspension of rule.

The Minister of State in the Ministry of Home Affairs (Shri Datar): Sir, I beg to move:

"That the first proviso to Rule 74 of the Rules of Procedure and [Shri Datar]

Conduct of Business in Lok Sabha in its application to the motion for reference of the Manipur Land Revenue and Land Reforms Bill, 1959, to a Joint Committee of the Houses be suspended."

Sir, I have pointed out. when moved a similar motion in connection with the Tripura Land Revenue and Land Reforms Bill, that it would be in the interests of the people at large and it would be better, for the purpose of meeting the provisions of this Bill, that the matter be referred to a Joint Committee. According to the rules such a matter has to be taken up here, but it is open to the House to suspend the provisions of Rule 74. That is the reason why the House accepted a similar motion regarding the Tripura Land Revenue and Land Reforms Bill. I am making the same motion regarding the Manipur Bill.

Mr. Speaker: What is it that he wants, I have not been able to follow?

Shri D. C. Sharma (Gurdaspur): Sir, the Rules of the House are sacrosanct. Why should the hon. Home Minister come up every time for suspension of a Rule?

Shri Datar: It is in the interest of the hon. Members, because the Joint Committee will be considering all the points contained in the Bill.

Dr. M. S. Aney (Nagpur): Are you referring it to the same Joint Committee?

Shri Datar: I shall explain that The provisions are more or less the same.

Mr. Speaker: Order, order. I have understood the position. Under the Rules, no financial Bill can be referred to a Joint Committee of both the Houses. The hon. Minister wants suspension of this Rule. It is not the money question that is so much important here as the various other provisions relating to land reforms, survey, land revenue, divisions, ceilings etc. Therefore, this question of finance

is only incidental. We have been suspending this Rule so as to enable a Joint Committee of both the Houses to consider similar matters on previous occasions. I shall now put the motion to the vote of the House. The question is:

5144

"That the first proviso to Rule 74 of the Rules of procedure and Conduct of Business in Lok Sabha in its application to the motion for reference of the Manipur Land Revenue and Land Reforms Bill, 1959, to a Joint Committee of the Houses be suspended."

The motion was adopted.

13.07 hrs.

MANIPUR LAND REVENUE AND LAND REFORMS BILL

The Minister of State in the Ministry of Home Affairs (Shri Datar): Sir, 1 beg to move:

"That the Bill to consolidate and amend the law relating to land revenue in the Union territory of Manipur and to provide for certain measures of land reform be referred to a Joint Committee of the Houses consisting of 30 members: 20 from this House, namely:—

Bangshi Thakur, Shri Shri Rungsung Suisa, Shri Dharanidhar Basumatari, Shri Etikala Madhusudan Rao, Shri Ghanshyamlal Oza, Shri Bibhuti Mishra, Major Raja Bahadur Birndra Bahadur Singh, Shri M. Gulam Mohideen, Shri Shobha Ram, Shri Raja Ram Misra, Shri J. B. S. Bist, Shri N. B. Maiti, Shri H. Siddananjappa, Shri Dasaratha Deb, Shri Laisram Achaw Singh, Shri Pramathanath Banerjee, Shri Tridib Chaudhuri, Shri Ram Chandra Maihi, Shri Bijaya Chandrasingh Prodhan, and the mover

and 10 members from Raiva Sabha:

that in order to constitute a sitting of the Joint Committee the quorum shall be one-third of the total number of members of the Joint Committee:

that the Committee shall make a report to this House by the first day of the next session:

that in other respects of the of Rules of Procedure House relating to Parliamentary Committees will apply with such variations and modifications the Speaker may make; and

that this House recommends to Rajya Sabha that Rajya Sabha do join the said Joint Committee and communicate to this House the names of members to be appointed by Rajya Sabha to the Joint Committee."

Sir, so far as the provisions of this Bill are concerned my task is considerably lightened because a number of provisions are almost of the same nature. In the first place, as in the Tripura Land Revenue and Land Reforms Bill, we have the provisions for a perfect and modern land revenue administration. There are two parts. In Part II, we have dealt with same provisions that have been included in the Tripura Land Revenue and Land Reforms Bill. There were different measures and they were not of a uniform nature, and so provisions have been made to have uniform legislation. The House is aware that Manipur, like Tripura, was one of the several princely States, and they had certain rules which required to brought up-to-date. The whole question had to be considered because we were anxious to introduce land reforms of a substantial nature and in both these territories. Therefore, it was considered advisable that both in Tripura and Manipur there ought to be a complete and efficient land revenue administration system. That is the reason why similar provisions have been made in this Bill also. I confident that the House will agree that the points that have been made

and the provision that have been incorporated in this Part of the Bill are of the same nature, with some modifications required by local conditions, as those in the Tripura Bill and are also similar to those in the Bombay and Madhya Pradesh land revenue codes. As I pointed out just now, the land revenue system has to be quite up-to-date, and the land revenue jurisdiction, and the number of questions relating to the rights between the parties inter se and the parties and the Government have to be decided. Land has to be properly measured; a survey has to be carried out and the land has to be settled with respect to the proper holders. Questions such as the proper persons who are entitled to own the land and those who are to exercise certain rights like gage, etc., have to be decided.

May I point out that according to the modern system, if the land revenue administration and settlement is quite competent, it would be easy for Government to carry on the work so far as land is concerned. It would also be open to the people to understand who is the owner of the land, and if it is a private land, what are the rights vested in the owner and what are the rights vesting in others. etc. Again, proper maps will have to be drawn as regards the lands boundaries will have to be fixed. I have stated oftentimes, it is necessary to take further steps for the purpose of finding out the land revenue to be paid to Government by the person in possession of the land, and proper assessment has to be made in this regard. Then, certain matters like the recovery of land revenue have also to be decid-Whenever land revenue is recovered, or when there are similar circumstances when land revenue is not paid, the property will have to be brought to sale or auctioned. sales will have to be provided for. That is the reason why in this Bill also similar provisions have been laid down.

Now, the task of providing for land revenue, etc., is to a certain extent lighter in the case of this Bill than in the case of Tripura. In the case

[Shri Datar]

5147

of Tripura, as I had pointed out, there was a large class of intermediaries who had to be abolished. Fortunately, in this case, we have no intermediaries as such. We have a common system known as ryotwari system in whole of India and certain rights have been fixed. Though the area, in this case, under cultivation is not so large, a proper provision has to be made. The area under cultivation is not very large in Manipur. Paddy is the principal crop, but to the extent that there is such a land, it has to be very properly provided for. That is the reason why land revenue administration has to be introduced in these areas, especially when there are hilly areas as well as valley areas. Proper provision has to be made in respect of both these areas. That has also been provided for in the earlier part of the Bill.

So far as the question of survey and settlement is concerned, as in the case of Tripura it has to be dealt with and survey and settlement has to be carried out as early as possible and in an effialready cient manner. As I have pointed out in the case of Tripura, the work has already been there. Similarly, in the case of Manipur, Government have undertaken a seven-year programme at a cost Rs. 27 lakhs. The period is from 1958 to the end of 1966. This work is proceeding fast and it is necessary that it ought to be finished soon so that the other reforms also can be simultaneously, and on as wide a scale as possible, introduced in the territory Manipur.

Then we have got the ordinary class of landowners known as pattadars and they rent the land to tenants-at-will. It is necessary to make proper arrangements so far as the rights of these persons are concerned. That is the reason why in this particular case the Government thought it necessary to undertake a long-term measure of land reforms, and in undertaking it, what they did was the stay of eject-

ments as on 6th March, 1956. Before the present Bill was introduced, they had introduced certain other pieces of legislation, one from Madras and the other from Bombay. When the South Kanara Act from Madras was applied to this State, and when it was later found that the Vidarbha Act from Bombay would be of a more beneficial nature, the latter measure was adopted here. The date of stay of ejectment is an important date that has to be taken into account.

So far as the rights of owners are concerned, naturally the owners will be given full rights of ownership; their rights would be permanent and heritable and the lands can also be transferred. In this measure also, principles to which I made a reference when dealing with Tripura have been introduced. The question of personal cultivation has also been taken into consideration, because, unless the land is confined to those who carry personal cultivation, excess land will not be available at all. A limit has been placed so far as personal cultivation is concerned in respect of persons except in the case of those who are known as disabled persons. I have made a reference to the definition of this class of persons while dealing with the Tripura Bill, and we are having the same definition in this Bill also.

As regards basic holding, it was not necessary in this Bill to lay down what is known as a standard acre. Here, we have stated that the basic holding should be 2.5 acres. This is more or less common in Manipur. It is not necessary to have any variants in order to fix a standard acre as such. The family holding has been fixed at 7.5 acres. So far as transfers of land after 6-3-1956 are concerned, they will not be valid, because the people had been informed that the Government wanted to carry out land reforms; and therefore, if any section of the people wanted to take advantage wanted to by-pass this, then naturally a check ought to be placed. That is

the resear why it has been stated that any transfers after this date are to be disregarded so far as the purposes of the present Bill are concerned.

Then I may also point out that it will be open to a landlord to let his land provided he gives certain substantial rights under the law to his tenants. That is also made clear in the Bill. He can resume only what is essential for personal cultivation and the limits on such personal cultivation have also been laid down.

Mr. Speaker: We have had an elaborate discussion on these matters regarding the other Bill. This Bill seems to follow the other Bill. Therefore, instead of referring once again to those provisions which have already been made on a par with the other Bill, I may suggest to the hon. Minister that he need only refer to those points where this Bill differs from the other Bill.

Shri Datar: Yes; I am merely pointing out the principles of rent,—

Mr. Speaker: What is the holding here?

Shri Datar: As I said just now, the basic holding is 2.5 acres. In the other Bill it was different; it was two standard acres, because the holding had to be considered according to the nature of the land, hill or slope, etc. Here, the actual acres are to be taken into account because that is found to be more suitable.

Mr. Speaker: What is the ceiling here?

Shri Datar: 25 acres. That is the same. So far as the rents are concerned, the principles are the same.

Shri Panigrahi: 25 acres for a family of five.

Mr. Speaker: Is there no difference between wet lands and dry lands? Shri Datar: There was some difference in Tripura land, but here it was found that it would be better to treat all the lands alike.

Sandar Hukam Singh (Bhatinda): A standard acre takes into account the income from the land. A unit of land that gives a certain amount of income is considered to be a standard acre. So, whether the land is wet or dry, all these things are considered when the area is put down as a standard acre.

Shri Datar: As the Deputy-Speaker has rightly pointed out, the different lands in different areas were to be taken into account in Tripura and so it was necessary to lay down a standard acre, as in the case of Delhi. But in regard to Manipur, it was found that it was not necessary at all.

Mr. Speaker: This seems to be somewhat different. In Tripura, the definition of standard acre is, one acre of 'lunga' or 'nal' or two acres of 'tilla' land.

Shri Datar: That is what I explained yesterday.

Sardar Hukam Singh: Two acres of dry land are equal to one acre of wet land.

Shri Ranga (Tenali): So far as Manipur is concerned, there is no distinction.

Shri Datar: There some distinction had to be made between 'lunga' or 'nal' on the one hand and 'tilla' on the other. 'Tilla' lands are highlands and so, 2 acres are considered as a standard acre. In respect of others, it was considered that one acre would be sufficient.

Mr. Speaker: So, the maximum is 50 acres of dry land or 25 acres of wet land.

Shri Ranga: That is in regard to Tripura; in regard to Manipur, there is no difference. It is an ordinary acre of land. Shri Datar: In this case no distinction is necessary.

As you have rightly pointed out, I need not go over all the points again. For the purpose of economy of effort, because the same ground has to be gone over to a large extent, I have proposed for the Joint Committee for the Manipur Bill the same personnel as in the Joint Committee for the Tripura Bill. So, though technically there are two committees, they are really one and they will cover the whole ground.

Sir, I move that the Bill be referred to the Joint Committee.

Mr. Speaker: Motion moved:

"That the Bill to consolidate and amend the law relating to land revenue in the Union territory of Manipur and to provide for certain measures of land reform be referred to a Joint Committee of the Houses consisting of 30 members; 20 from this House, namely,-Shri Bangshi Thakur, Shri Rungsung Suisa, Shri Dharanidhar Basumatari, Shri Etikala Madhusudan Rao, Shri Ghanshvamlal Oza, Shri Bibhuti Mishra, Major Raja Bahadur Birendra Bahadur Singh, Shri M. Gulam Mohideen, Shri Shobha Ram, Shri Raja Ram Misra, Shri J. B. S. Bist, Shri N. B. Maiti, Shri H. Siddananjappa, Shri Dasaratha Deb. Shri Laisram Achaw Singh, Shri Pramathanath Banerjee, Tridib Kumar Chaudhuri, Shri Ram Chandra Majhi, Shri Bijaya Chandrasingh Prodhan; and Shri B. N. Datar and 10 members from Rajya Sabha:

that in order to constitute a siting of the Joint Committee the quorum shall be one-third of the total number of members of the Joint Committee;

that the Committee shall make a report to this House by the first day of the next session; that in other respects the Rules of Procedure of this House relating to Parliamentary Committees will apply with such variations and modifications as the Speaker may make; and

that this House recommends to Rajya Sabha that Rajya Sabha do join the said Joint Committee and communicate to this House the names of members to be appointed by Rajya Sabha to the Joint Committee."

There is a motion for circulation, but Shri Naldurgker is not here. Hon. Members who have spoken on the other Bill will wait; I will first give opportunities to those who have not spoken on the other Bill and who want to speak on this Bill. Let them stand up in their seats. I find five hon. Members rising. Shri Ranga is the only person who has spoken on that Bill and who wants to speak on this Bill also. So, in all there are six hon. Members.

Shri Radha Raman (Chandra Chowk): What is the time allotted for this?

Mr. Speaker: No time has been allotted. Let us have two hours. Let hon. Members refer only to those points of difference between this Bill and the other Bill, unless they think that there is any special point which has to be emphasised. Shri Achaw Singh.

Shri L. Achaw Singh (Inner Manipur): Sir, this legislation is a very important one concerning the agriculturists and the peasantry in Manipur. This is the first time such a legislation has been brought before this House. The passing of this Bill, I am sure, will be a landmark in the history of Manipur. We of the Socialist Party of Manipur have long felt that such a legislation was long overdue. We had no legislature in Manipur, but in every State in India, legislations have been passed regarding land reforms. In the Union Territory of Manipur,

several Acts from Assam, Madras and Bombay have been extended from time to time, but most of these Acts have been found unsuited to the local conditions here. So, we welcome this Bill and we congratulate the hon. Minister on introducing this Bill. It should be appreciated that the insecurity as a result of delay in the introduction of such measures has created some instability in the rural economy and it has also adversely affected the agricultural production in that part of the country.

13.27 hrs.

[MR. DEPUTY-SPEAKER in the Chair.]

I would like to make a few observations regarding the tenancy system and the state of agriculture. Out of 8,638 square miles-the total area of the Union Territory-7,950 square miles are hills inhabited by the tribal people. They practise shifting cultivation or ihooming cultivation. This area has never been surveyed and it will not be surveyed in future also because it is a very difficult terrain and the legislation is not also going to be introduced so soon in these parts. The valley portion comprises 688 square miles or 4,40,320 acres. of this, 2,75,000 acres are under cultivation. Now 75,000 acres are available for cultivation, which are wastelands. The valley portion is situated in the centre surrounded by hills on all sides and the silt deposits brought down by the streams from the hills create a very favourable soil for cultivation. So, they have bumper crops in the valley.

The average yield of rice is 2,500 lbs. per acre. According to the 1951 census, the population of Manipur is 5,77,635 and 90 per cent of the people depend on agriculture. There is no industry there and most of them have to depend on agriculture for their livelihood. They live on rice, which is the main produce. So, the pressure on land is very heavy there and only a little land is available for cultivation and for distribution to the landless agriculturists here.

A number of proposals have been incorporated in this Bill, but I find many of them do not suit the local conditions here. They might be good for all-India purposes. They have, of course, been recommended by the Planning Commission, but some of them—I do not say all—are very much unsuited to the local conditions there.

It was suggested by some hon. Members here during the discussion on the Tripura Bill that a comprehensive legislation for all the Union territories would serve the purpose. I disagree from that view, because conditions differ from Union territory to Union territory as conditions differ from State to State. So, I welcome the introduction of a separate Bill.

The tenancy right in Manipur was governed by customs and usages which were prevailing there during the Maharajah's regime, and he used to frame rules regarding revenue administration, regulation of rent and other matters relating to land. In 1950 the Assam Land Revenue Regulation was extended to the Union territory of Manipur just after its integration. We have found from our experience that is not suitable for Manipur, though we find that many of the provisions of that Act are incorporated in this Bill

Many of the provisions in this Bill are based on presumptions and inadequate data. The valley area has not been cadastrally surveyed, the revenue records do not show the names of the tenants or persons in possession of those lands, and the rent payable by those tenants. According to one estimate the tenants cultivate about 60 per cent of the cultivable area. There are no accurate statistics regarding the holdings. The census figures are also very much misleading. I wonder how the figures for payment of compensation have been arrived at. A sum of Rs. 5,40,000 is to be paid as compensation for lands to be taken over by Government. Even on this basis, the land to be distributed is only 30,000

DECEMBER 15, 1959

[Shri L. Achaw Singh]

acres. So, the reform measure or planning in the matter of lands, as in other fields, is very much unrelated to the facts and we have to grope in the dark regarding facts, figures and data. The number of landless agriculturists, owner-cultivators, landlerds owning lands above the ceiling limit, cultivable waste land, forests and fisheries, they are not accurately known to any one.

Due to the pressure of population, land hunger is very strong and there is no land fit for cultivation. It is a very difficult task to satisfy the land hunger. I am sure the basic principles of land reforms in India are social justice and efficiency in agricultural production. As a princely State, the feudal system prevails in Manipur and though a ceiling limit of 25 acres has been fixed by the Maharajah, the rule has not been observed properly. It was rather observed in its breach. and concentration of holdings in a few hands still prevails. The moneylenders and land owners have been purchasing lands from poor peasants and distress sales have been going on. So, the number of landless agriculturists has increased. Then again, the depression in agricultural during the last few years in the Union territory of Manipur has impoverished them.

I do not know how this Bill will render them effective relief. But I feel that it will go a long way towards the achievement of the above objectives. I am, however, afraid that some of the provisions of the Bill, including the one relating to the resumption rights by the owners, will work against the real peasants, who are landless tenants. They may be practically robbed of their cultivated area.

Chapter XI deals with ceilings on land holdings. This is a very controversial section. Here the land ceiling is fixed at 25 acres for a family of five members or less. The maximum family holding has been fixed at 20 acres. These figures may suit

other States in India but I do not think this is proper or reasonable for Manipur. As I have stated on several occasions, the net return per acre there is as high as 2,624 lbs. on the average, whereas it is very low in other parts of India. We are now practising extensive methods. where there is scope for further production. If we practise intensive cultivation. the production will increase still further. So, the economic holding for such a family must be fixed at a lower limit for Manipur. It may be possible to fix it at about 12; acres, and that will enable the owner to maintain a reasonable standard of living. From the point of view of promoting social justice also, I feel that the ceiling should be lowered down. In that case, some excess land would be available for distribution among the landless agriculturists.

As I have stated, only 30,000 acres are available and that can benefit only 14,000 families, because the permissible limit of family holding has been fixed at 7.5 acres. I hope the Joint Committee will look into this aspect of the problem, with particular reference to the conditions prevailing in Manipur.

Then, the exemptions provided clause 153 of the Bill are very impracticable. I feel that this create unnecessary trouble. am told these are the recommendations of the Planning Commission. they have been bodily brought into the Bill. I do not think that would be of any use, because there are no tea plantations, coffee plantations or rubber plantations or sugar growing areas there. I am of the opinion that this should be removed. I am afraid, these exemption clauses will only encourage the landed interests to reserve more and more lands from the operation of the ceilings. If this provision is there, I feel that this legislation will not be so effective and it will not fulfil the purpose for which we have brought it here.

Sub-clause (2) of clause 142 says that any land transferred after the 15th of January, 1959 will be not be taken into account in determining the ceiling limit. Different dates have been fixed for determination of the excess limit, ceiling limit and so on. I do not understand why these dates are different. It is very unjust because it will definitely work against the agriculturists. Since 1950 or so, after the integration and after land reforms like the Assam Land Revenue Manual, the Vidharbha Act and the South Kanara Act have been introduced, the land-owners have felt that some ceiling will be fixed, and anticipation of fixation of such ceilings they have started transferring their lands to their friends and relatives. For the determination of excess of land, for ceiling on land and also the permissible limit for resumption, the same formula should used; in other words, it should be the same for all three. Also, I feel that we should give retrospective effect to it from January 1950. Anyhow, it is up to the Joint Committee to consider it.

According to customs we have in Manipur lands which belong to village deities. We have also which are devoted to individual deities. Then, there are hundreds and hundreds of acres of land which belong to the Govindji temple. I do not know whether the ceiling would apply to those lands. I do not find any provision in the Bill for that. I think we should make some provision for that in the Bill

Then I beg to submit another thing. After the ceiling limit has been fixed at such a level, I feel that the owners will start eviction of their tenants.

The permissible limit for personal cultivation has been fixed at 7.5 acres. That is too high. Before this Bill is passed, they may start mass eviction. I am told in Bengal when the Land Reforms Act was introduced, it just synchronised with the landlords trying for mass eviction of share croppers and leaseholders. The theory is, of course, very nice because holdings are fixed and holdings dispersed, but in practice we find that the ceiling which has been fixed for eviction may lead, I am afraid, mass expropriation of the peasantry.

Evictions have already started many places in Manipur. The landlords knew beforehand that some such legislation would be coming. feel that we should have some clause in this Bill, specially in Chapter X, regarding the right of tenants. submit that a provision should added whereby all those tenants who have been in actual possession of their lands for the last twelve years should be given the right to own or purchase their land on the payment of compensation money provided for in this Bill. Otherwise, it will be very deleterious to their interests. The Tenancy Acts extended to Manipur from time to time, that is, the Bombay and Madras Acts, have not been so effective. That is why I am very much afraid that the passing of this Act even will not affect much the interests of these tenants.

As regards personal cultivation may submit that the definition in clause 2(p) (iii) also includes-

"by servants or by hired labour on wages payable in each or in kind but not as a share of produce under his personal supervision or the personal supervision of any member of his family;".

I feel that this is very unjust. In the case of disabled people, of course, we may allow in special cases cultivation by hired labour. But then to have this clause would be very much harmful to the interests of the peasants and will work against them. suggest that some amendment should be made in this sub-clause.

In clause 110, sub-clause (1), which provides for the procedure for dealing with lands left uncultivated by land owner, I would also like some amendment to be made because they [Shri L. Achaw Singh]

5159

are poor peasants and poor land owners who may not be able to cultivate the land even for two years. In that case the Government should make provision for granting them financial assistance and on no ground they should be evicted from the land. For the proper utilisation of the land Government should come forward and some credit should be given to them.

Clause 122 provides for the conditions and procedure for eviction of a tenant from land held by him as a tenant and clause 128 also provides other conditions for determination of tenancy. These conditions are very They are also too numerous. Formerly, no eviction took place even if one did not pay any rent for some reasonable period. But after passing of this Bill, on the slightest pretext eviction might take place. Of course the period provided for is three months and then again another six months. But then I submit that, in fairness to the tenants also, there may be circumstances by which they may not be able to clear the rent arrear for that year. So, in such cases a provision should be made so that the tenant may be allowed to pay arrears during the next harvest season and to retain the land.

I now come to the last item, namely, land revenue administration in Union territory. It is very unfortunate that the land revenue administration there is far from our satisfaction. The state of affairs there rather scandalous. A revenue officer can do everything. When he goes to the village, he is a terror to villagers. He can manipulate records. In the case of mutations, partitions, new lands and other land matters it takes some months and sometimes years for disposal. I have my own experience in these matters. Sometimes deliberate attempts are by the revenue officers including Amins to delay partitions, mutations and things like that. I am sure the House would know the meaning. There is corruption. There is red-tapism. There is miscarriage of justice. The Bill, of course, provides for land revenue administration for the Territory. But this is not new. As the hon. Minister has pointed out to us, this is a provision which used to exist in the Assam Land Revenue Act. I do not think much would be done by providing all these things. I feel, of course, that the land revenue administration should be thoroughly overhauled so that we can have all these reforms carried out in an impartial manner.

There are some welcome Those are about settlement operations which are being carried on and the preparation of record of rights. When the settlement operations are over and when the records of rights are being prepared, then of course I feel that most of this corruption and defects in the land revenue administration would be over-But I feel that these settlement operations do not make so much progress and are not so fast as we expect them to be. No principles have been laid down for the classification of lands. There is a proposal for the revision of the revenue rates

Clause 33, which lays down some abstract principles, 1 feel should be amended. These are all abstract principles and it will give wide discretion to the settlement officers to vary the rates. I feel that we should fix some minimum and maximum. The land revenue rate there is about Rs. 9/- per pari—that is about 24 acres—and the maximum should be fixed at Rs. 9/- for agricultural lands and for non-agricultural lands some different rate may be fixed. The minimum may be fixed at Rs. 6/-.

I would like to submit that clause 96 which provides for appeals against the assessment of land revenue and other revenue matters should be amended because there is no adequate safeguard against the injustice done by the revenue officers. The appeal of

course lies to the Administrator, but then that is not sufficient. We should provide for some tribunal for such matters.

I have got some minor matters also to speak about, but I do not know whether you will allow me to continue.

Mr. Deputy-Speaker: He has already taken 25 minutes and we have got only two hours for it.

Shri L. Achaw Singh: I will only speak on some more clauses.

Regarding clause 15, I submit that there is unnecessary litigation now taking place. Unauthorised occupation of land and encroachments are taking place on a large scale and the Tehsildars and SDOs take so much time to evict them. Some provision should be made and some machinery should be provided so that there may be prompt and speedy eviction of those encroachers.

Clause 17 should also be amended. It refers to alluvial land. Alluvial lands are not so many in Manipur. If we allow the alluvial lands to be cultivated, there is a fear that floods would recur, that the river beds would rise and they will be very disastrous.

Mr. Deputy-Speaker: The hon. Member is also in the Joint Committee. He will have an opportunity there too.

Shri L. Achaw Singh: The alluvial land should not be thrown open for cultivation.

Shri Nagi Reddy (Anantapur): Mr. Deputy-Speaker, after having heard a very concrete and detailed speech made by a Member who is in direct contact with the people and the situation in Manipur. in supporting the Bill, I would advise the Joint Committee and the Ministry to take note of all the points that have been made to make the Bill much more pro-tenant, pro-agricultural labour and pro-peasant than what it is as it is now placed before the House.

We have had the experience of quite a number of land reform Bills in our country in the past 10 years or so. I think it is very essential that when we prepare a new Bill, we must take into consideration the experience that we have gained in the implementation of these Bills. I am afraid that exactly has not been done by the Ministry when they have framed and formulated this Bill. We know that quite a number of Committees have been appointed to into the question as to how far we have been able to implement the Bills that have been passed either Bombay or in Hyderabad or in Bengal or in any other province as a matter of fact. Any Committee that has gone into it, official or non-official, has come out with the detailed reasons as to why every Bill in every province has failed to give benefit to the peasant which was expected to be given by these Bills. Even the Panel on land reforms the Planning Commission has, great detail, reported to the country as to how we have failed to implement our own Acts and they have given us the reasons. I am afraid the Government has failed to take note of that when it prepared this comprehensive Bill, dealing not only with land reforms, but beginning with the creation of land records and also survey.

My hon. friend Shri L. Aehaw Singh has told us that this Bill is going to be implemented in an area which is mostly a feudal area, which is mostly. I should say, an area in which there is less of education and less of contact with the outside world for the ordinary peasant to make his voice felt. Even in a place like Andhra Pradesh, where there is a strong peasant movement and where the peasants out of the force of their strength are capable of getting certain things done by the Government, they failed to get the tenancy reforms implemented. I know very well and one of the members of the Panel on land reforms in a note has said that 80 per cent of the tenants in Andhra

[Shri Nari Reddy]

We're evicted after the Tenancy Act was passed. If that can be so in hindhira, I can very well imagine the fear of the representatives of the people here as to what the situation will the in Manipur. But, what steps can we take? That is the concrete question with which we are faced. That is exactly what I would deal with and give a few of my suggestions.

The major factor in any land reform is the preparation of land records. It is at the very beginning that sabotage is likely to take place. Therefore it was that quite a number of committees in the country had always envisaged that the people should be taken into confidence when land records are prepared. It should never be left to the village patwari or the revenue officer. The village patwari or the revenue officer, in the conditions in which we are living today, is always pro-landlord, if I do not want to call him by a strong term, as an agent of the landlord. fore, it is the duty of the Government, which wants to implement land reforms, to create a kind of administrative set up which bases itself on the people and he peoples movement. Then alone can justice be done.

What can be done? At this time, when we speak so much about panchayats and panchayat raj, in the whole Bill, I do not find a single reference to panchayat. I do not know We are talking of a place where there are no land records. We are talking of a place where there has been no settlement. There has been no survey made so far. We are talking of a place where people have been till yesterday exploited by a feudal system. In such a place that, it becomes of the utmost importance to get the least benefit to that area, that, in the preparation of the land records, we must take into confidence that section of the people which is going to be benefited by this Bill. I would appeal that some clause be introduced with a certain concrete proposals to create peoples tribunes in those areas—call them by whatever name you like—to cooperate with the officials who are going to prepare the land records and who are going to survey the land and settle the ownership of the people to that land. That is my first suggestion that I can make.

The second suggestion that would make is this, and that is about the question of the tenants. What happens to the tenants? Let me give an account of the way in which our tenancy reforms have been implemented in quite a number of provinces. Let us take one province, the State of Hyderabad or today Andhra Pradesh. Dr. Khusro, Director of the research scheme to study the economic and social effects of the jagirdari abolition and land reforms in Hyderabad State had pointed out that 22 per cent have been illegally thrown out while 17 per cent have voluntarily surrendered. He again that the so-called voluntary surrenders are very often a subtle form of illegal evictions and only a proportion of these surrenders is genuine. The area where that has taken place is an area where the biggest struggle for land reforms has taken place in the country, that is the Telengana area. It is because of the struggle in the Telengana area that the idea of land distribution was first mooted in our country by Acharya Vinobha Bhave. It is after the struggle in Telengana, we know that for first time, the country woke up and found the necessity for land reforms immediately as otherwise there may be a volcano that would burst.

An Hon. Member: It is not correct.

14 hrs.

shri Nagi Roddy: That is my opinion; if it is not correct, you have your own opinion. That is the opinion which Acharya Vinobha Bhave expressed when he came out with the slogan of bhoodan. He gave that slogan in Telengana, saying: if you

want to stop this eruption of the landless masses into a revolution, here it is, please come forward and give. That slogan he gave in Telengana and nowhere else, and it was after the huge peasant struggle that was carried on and after capturing, almost getting the lands of the landlords who owned millions of land in that area. Well, leave it at that.

All the same, it is in that area that the tenancy reforms have failed, that is my point, and that has been very expressly mentioned even in the resport that has been placed before the country by the man who went and enquired into the whole position. So, what can be done, and how can it be done?

I can very well imagine that there will be a hate and cry by some people if I make the suggestion which has been incorporated in the Bill which was passed by the Kerala legislature a few days before it was dissolved. What is the suggestion? It is not the land reforms Bill that the landlords are afraid of; they are not afraid of the land reforms Bill with so many loopholes to be implemented by bureaucracy and a soulless administration. They are not afraid of the Bill, they are not afraid of the administration, they are not afraid of pro-landlord bias which is already there. What are they afraid of? They are afraid of the people coming and taking the reform as their reform and trying to implement it with the help of the Government.

In that Bill it was suggested that there should be a land tribunal in which the tenants, the agricultural labourers and the peasants of the village should be given a chance to try to implement the legislation in favour of the tenants and the landless agricultural labour.

Are Government serious that this Bill should give at least a little amount of the land to the peasants, not as it was done in Telengana where the Government expected to

get 60,000 acres of land when the ceiling Bill was passed, but later found that not even 6.000 acres were available in the particular district? If you want that justice should be done then it is very essential that we should have land tribunals which would take this Bill as the Bill of the people and try to implement it with the help of administration which should become, from the day this Bill passed, not pro-landford, but tlited to the side of agricultural labour and become pro-tenant and pro-agricultural labour. Then alone will this Bill be implemented.

Therefore, I would suggest that a land tribunal be also included when the Joint Committee discusses this Bill seriously. I do hope—I do not know how far my hopes will materialise—that the Joint Committee will try to strengthen this Bill in favour of the tenants and agricultural labour. I hope the Joint Committee will not create many more loopholes than those already in existence. That is one thing which I would like the Minister to remember.

The last point I would make is this. When such Bills as this, which is a Bill for some kind of economic form, are passed, it is not enough that we pass them and be satisfied with them. We know what type administration we have. This administration which has been reared and bred by British imperialist methods cannot function in a dynamic Therefore, it becomes essential important on the part of the Government to see, if such Bills as this areto be implemented, that the administrators of the area are first educated about the importance of the Bill. This education of the administrators is a very important factor for us to remember. It is very good for us to give a few ideas and ideals in this Parliament that no tenant should be evicted and that eviction is against the interests of the country society. All the same, evictions go on. How is it and why is it that our administrators are not able to carry out the wishes of the people of the

[Shri Nagi Reddy]

country as expressed in our Acts. I would say that our administrators should be taught. Not only that. We are learning every day, and out of the experiences that we gain, administrator should know that Bill is a pro-tenant Bill, that if it is to be implemented, he must have a pro-tenant, pro-agricultural bias, that he should become at least for a short time anti-landlord. It is only then the real land records will be prepared, it is only then that eviction will be curtailed, it is only then that the land will be really pooled, it is only then that the land which is pooled will be actually distributed to the agricultural labourers. If we are incapable of or unable to take this step, I am sure that this Bill remain one of the few Bills that have already been passed but which have become in effective and useless.

I hope the Minister would take this into consideration and try to make this Bill an effective one in the interests of the poorest in our country.

Mr. Deputy-Speaker: Ch. Ranbir Singh.

Shri D. C. Sharma (Gurdaspur): He is a landlord!

बी० रराषं र सिंह (रोहतक): उपा-ध्यक्ष महोदय, इस बिल का समर्थन करने दुए में निवेदन करना चाहता हूं कि जैसे पूर्व बक्ता ने कहा कि इस देश को मुस्तलिफ रियामतों के लैंड रिफार्म्स का तजुर्बा हुआ है और उस तजुर्बे का ध्यान इसमें रक्खेंगे और सेलेक्ट कमेटी को इस बिल में जितनी धाराएं हैं, उनमें जहां कामयाबी से लैंड रिफार्म्स और सूमि सुधार आ सके है उनके मनाबिक नबदीली करनी चाहिए।

इस देश की एक स्टेट के अन्दर कम्यु-निस्ट पार्टी का भी राज्य रहा है और बाकी स्टेट्स के अन्दर कांग्रेस की हुकूमनें रही हैं। सबसे बड़ी कामयाबी अगर किसी स्टेट में भूमि सुवार के सिलसिले में रही है तो वह हमारे पंडित गोविन्द बल्लभ पंत का प्रपता, उत्तर प्रदेश है भीर जिसके कि उस समय पंत जी चीफ मिनिस्टर थे। ग्राज उन की तरफ से दातार साहब इस बिल को पायलेट कर रहे है।

श्री दी० चं० शर्मा : दातार साहब की ग्रपनी स्टेट के अन्दर क्या हुआ ।

चौ० रराबीर सिंह : उत्तर प्रदेश के ग्रन्दर किसी ऐसे भादमी को जिसका कि जमीन से सीधा सम्बन्ध था, जो जमीन को जोतता था उस जमीन के जोतने वाले को किसी कारण से भी बेदखल नहीं किया गया। मझे माल्म नहीं कि जो तजर्बा पंत जी को भाज से काफी साल पहले हम्रा उस तजब में हमें भागे जाना चाहिए था या पीछे भाना चाहिए था । मेरे नुक्तेनिगाह से यह जो रिजरवेशन का क्लाज है यह बिल्कुल फालत मा है और इस बिल के भन्दर इसको रहना नहीं चाहिए भीर इसको उत्तर प्रदेश की मानिन्द जहां कि ऐसी कोई घारा नहीं थी, रहना चाहिए क्योंकि खास तौर पर इस इलाके में जहां से कि कुछ एक कागज बनेगा उसमें भ्राप भौर हम भन्दाजा कर सकते हैं। उपाध्यक्ष महोदय, माप भी पंजाब स्टेट से आते हैं और मैं भी पंजाब स्टेट से आता हं। वहां हर छिमाही के भन्दर हर जमीन के टकडे का माल का रेकार्ड बनता है जिसमें दर्ज होता है कि मालिक कौन है भीर मुजारा कौन है। वहां पर जो म्जारों के संरक्षण के लिए बने, कानून उन कानूनों का जिस की फायदा हुआ यह आपको भी मालूम है। भीर मझे भी माल्म है और तमाम हमारे प्रदेश को मालम है। वह मुजार जो कि सालहा साल से इतजार में ये कि भव देश के भन्दर एक हक् मत आई है जो कि जमीन बोने वालों को जमीन बोने का भीर मिलिक्यत का हक। देगी, कई जगह उन्हें बहुत उम चीज का चक्का

मगा भीर उनको जो हक या वह उनसे दिनम्यशन के नाम से छीना गया और वहां पर जहां कि बाकायदा गिरदावरी के रेकाईस हैं भीर यह देशा जा सकता है कि यह सही है या गनत और उसमें भी माप जानते हैं यहां दिल्ली स्टेड के कानून में गिरवावरी का, पीछे की कई साल की गिरदावरी का जिक किया लेकिन उसका क्या नतीजा हुमा वह हमारी आंखों के सामने हैं। कई जगह पटबारियों को हजारों रुखे लोगों ने दिये । कुछ गिरदावरियां तबदील हुई भीर झुठी गिरदावरियां बनीं भीर उसमें कई मादिमयो के, चाहे वे मुजारों के या दूसरे भाइयों के, करल भी हुए। जमीन बोने वालों के लिए जमीन एक पेशा है और जो भाई उसका लगान लंजे हैं उनके लिए जमीन का वह रिश्ता नहीं है जो कि बोने वाले के लिए है।

मुझे जब बोलने के लिए ग्रभी बुलाया गया तो शायद मेरे बुजुर्ग भाई शर्मा साहब ने यह कहा कि मेरा वास्ता जागीरदारों से है तो मैं कड़ंगा कि शायद उन्हें मालम नही कि जिस वक्त भी यहां इम सिलिसले मे कोई बिल ग्राया या कोई चर्चा हई तो मैंने कभी उन भादिमयों का जिन्हें कि एैबसेंटी लैंडलाई कहते हैं, कभी साथ नहीं दिया । मैं चाहता हं कि सरकार श्रीर सेलेक्ट कमेटी इस मामले पर दो नुक्तेनिगाह से गौर करे। एक तो यह कि कुछ ऐसे मालिक हैं जो कि कागन के तौर पर मालिक हैं, जिन्होंने मंग्रेडों के साथ वफाई की थी या किसी राजा के साथ वफाई की और उस सिलसिले में उनको मिल्कियत के हक्क दे दिये गये भीर जो माई पीढ़ी दर पीढ़ी उन जमीनों को जोतते बोते प्राते ये उनके हकूक की खीन लिया गया नयोंकि उस वक्त की हुकूमत के मुताबिक वे नहीं चले । उस ब.रे में मेरी राय बिल्कुल साफ़ है कि ऐसे सोगों के साथ त्याय होना चाहिए जिनके कि साथ इस तरह की बेइंसाफी की गई है भीर भाज तक जो भाई उनको एक दरीके से कानून के नाम पर लूटते रहे भीर

उनकी भामदनी का हिस्सा लेते रहे, बह लूट भव बंद होती चाहिए । जहां तक उन भाइगों का वास्ता है जिनको कि यह जमीनें जागीरदारी की शक्ल में न मिनी हों बल्कि बिरासत की शक्ल में मिली हों तो भी मैं कहंगा कि उनके साथ भी हमारी हमदवीं नहीं है।

जो जमीन जोतते हैं उनका कामन बड़ी होशियारी में तैयार किया जाय । मेरी तो राय है कि उत्तर प्रदेश के खास तौर पर वे मिवा री जिन्होंने कि उत्तर प्रदेश के जमींदारी एबौलिशन बिल के मन्दर काम किया और ईनानदारी से काम किया उनके जिन्मे यह काम सुपई किया जाय । असे मानम नहीं कि आज मनिपुर या त्रिपुरा के अन्दर कौन से अकार वहां यह काम करते हैं, वे प्रौदेसिव हैं या नहीं। वे कितो जागोर-दार या अमींदार फैमि तो से हैं या नहीं, मझे कुछ मालम नहीं और इपलिए मैं उनके जिल फ कोई बात यहां पर नहीं कहना चाहता लेकिन में समझता हूं कि जिस स्टेट के अन्दर यह कामयात्री से चला और जहां कि अकतरान इस कानृत को सही तौर पर भ्रमल में लायें भीर उसका नतीजा यह हुपा कि भाज पंजाब के बहुन सारे भाई यह समझ कर गरे थे कि उत्तर प्रदेश के भ्रन्दर जनीन उसकी है जो कि बोता है और जोतता है। च.हे वे कानुनी तौर पर कहीं परेशान भी हों लेकिन एक विश्वास उनमें पैदा हुपा भीर देश के भन्दर एक विश्वास गैश हुता कि उत्तर प्रदेश के मन्दर एक ऐतो मन्छो भौर स्वस्य फिजां भाई है कि जो जमीन जीतेना भीर बोबेगा, वह जमीन का मालिक बनेगा। मैं चाहता हं कि मनिपुर भीर त्रिपुरा के लिए जो हम यह मुमि सुवार सम्बन्धी कातून बना रहे हैं, वहां पर उत्तर प्रदेश की कि गां भानी चाहिए। मुझे तो विश्वास है कि पंत जो जो कि इस मंत्रालय के मंत्री हैं उनके उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्रित्व काल में उस प्रदेश के चन्दर जो यह स्वस्य धीर भन्हो भावना पैदा हुई

DECEMBER 15, 1959

[णी० रणशीर सिंह]

थी, वह भावना वहां भी पैदा होगी। उसके लिए यह जरूरी है कि यह जो रिजम्पशन की बात हैं यह बिल्कुल फालतू बात है। भलबत्ता उत्तर प्रदेश के भन्दर मैं जानता हं कितने मादमी ऐसे थे जिन बेचारों के पास कोई जरिया नहीं था भीर कोई ५ रुपये के जागीरदार थे तो कोई १४ पये के जागीर-दार थे, ऐसे लोगों को मुद्राविजा कुछ ज्यादा दे दिया गया । मुग्राविजे की जो तादाद थी उसके मन्दर उनका स्थाल रक्ला गया भीर बिस्वेदार को कुछ मुद्राविजा मिला ग्रीर रिहैब्लिटेशन गांट मिली लेकिन जहां तक जमीन का ताल्लुक या जमीन का ताल्लुक उससे हटा दिया गया क्योंकि उसका जमीन से कोई ताल्लुक नहीं था। वह एक कागज का सम्बन्ध था ग्रीर उस कागज के सम्बन्ध को तोड़ा गरा। मैं चाहता हं कि जमीन के साथ सीधा सम्बन्ध उनका होना चाहिए जो कि जमीन को जोतते हैं।

उपाध्यक्ष महोदय, इसके बाद में दूसरी बात की तरफ ध्यान दिलाना चाहता हूं जिसके कि बारे में श्रापने जिक्र किया श्रीर मंत्री महोदय जो कि उधर बैंडे हैं उन्होंने जिक किया था। स्टैन्डडं एकड़ के लिए उन्होंने कहा कि मनिपु: के अन्दर कोई फर्फ हो नही मझे ताज्जब हुआ कि इस बिल के मुताबिक तो यह जाहिर होता है कि शायद मंत्रालय के पास न कोई मालुमात हैं भीर न उनके पास कोई लैंड रिक.म्स के रेकार्डस हैं जिनसे कि वे कोई भ्रंदाजा कर सकें कि मनिपुर की जमीन सारी यकसां है। या मनिष्: की जमीन कुछ खराब है भौर कूछ भच्छो है। भीर मैं समझता हूं कि बहा पर जो लैंड रेवेन्यू या दूसरे किस्म का रेंट लिया जाता है उससे यह साबित किया जा सकता है कि कौन सी जमीन भच्छी है भौर कौन सी जनीन खराब है। मुझे पूरा विश्वास है कि इस सारे देश के ग्रन्दर किसी एक प्रदा की बात नहीं है---हर जमीन का

यकसां रेंट नहीं हो सकता भीर इसी तरह से मनिपुर के अन्दर भी हर जमीन का रेट यकसा नहीं होगा। यह मेरा विश्वास है। भाई भवल सिंह जी को ज्यादा पता होगा, शायद उनका जमीत से सीधा बास्ता रहा हो। पता नहीं शहर में रहकर उनका यह बास्ता हुमा है या देहात में रह कर। लेकिन हमसे तो उनका वास्ता ज्यादा है। हमने तो वह इलाका और वह स्टेट भी नहीं देखा, श्रासाम से आगे हम कभी नहीं गए।

ध्राप जानते हैं कि जिन हालात में इस कानून को लाग् किया जाएगा वह भी दूसरी स्टेटों के मुकाबले में निराले होंगे। गो वहा म्रविकार पालियामेंट का है, लेकिन पालियामेंट के पास इतना समय नहीं कि वह इतनी छोटी छोटी बातों के अपर गौर कर सके। न वहां के सवाल ग्रा सकते हैं। इसलिए मै यह मानता है कि भ्रगर रिजम्शन की बात ग्हेगी तो वहां के मजारे के साथ कभी कोई न्याय नहीं हो सकता। तो हमें एक कलम से यह तै कर देना चाहिए कि उस इलाके के लिए रिजम्शन शिक नहीं है। उसमे कमी न्याय नहीं हो सकता, न उसके साथ न्याय होगा जिसके लिए वह जमीन रिन्यूमकी जाएगी श्रीर न उसके साथ न्याय होगा जिससे वह जमीन छीती जाएगी। नतीजा वह होगा जैसा कि हम पंजाब में देखते हैं कि लोग दस दस साल से परेशान हैं भीर भाज भी उनके भदालत में मुकदमे चल रहे हैं। एक मजारे से मालिक जमीन छीनना चाहता है भीर मजारा रेजिस्ट करता है भीर उन दोनों का जो मुकदमे में खर्च हुप्रा है प्रगर उसका हिसाब लगाया जाए तो मालूम होगा कि वह उस जमीन की कीमत से कहीं ज्यादा रूपया वकीलों को दे चुके हैं। भगर हम चाहते हैं कि वहां के लोगों को भी इस तरह के झगड़ों में हाला जाए, तब तो हम यह रिजम्शन रखें, लेकिन भगर हम उनको इन समझें से निकालना चाहते हैं भीर वहां पर जो पिस्र हैं

हुए इलाके के लोग हैं उनके साथ न्याय करना चाहते हैं, तो हमें इस चीज को निकालना होगा ।

दूसरी बात में स्टेंडर्ड एकड़ के बारे में धर्ज करना चाहता हूं। जैसा कि मैं ने पहले कहा, मैं माननीय मंत्री महोदय से इस बात में इत्तिफाक नहीं करता कि वहां सब जमीन यकसां है। मझे मालम है कि एक बीघे भीर दसरे बीधे में फर्क होता है चाहे वह जमीन नहरी हो, बरौनी हो या कुवें की हो। पंजाब में कंसीलीडेशन का काम बहुत तेजी से आगे बढा भीर बहुत ज्यादा काम हुआ। जिनको कंसोलीडेशन का तजर्ज है वह जानते है कि एक एक खेत की अलाहिदा कीमत होती है। तो भगर हम यह समझें कि किसी एक स्टेट की सारी जमीन एक ही कीमत की होगी, तो हम बड़ी मोटी गलती करेंगे, जिसे कि हमें नहीं करना चाहिए।

मझे मालम नहीं कि भाषा मनिश्र में कुछ ऐसे भाई हैं कि जिनके पास सीर्निंग से प्यादा जमीन है और वह उम पर खुद खेती करते है। प्रगर कोई भाई ऐसे है, तो मैं ममसता ह कि उनके साथ न्याय होना चाहिए यौर उनको उसी यार्डस्टिक से नहीं नापा जाना चाहिए जिससे कि एवसेंटी लंडलाई को नापा जाता है। श्राप जानते हैं कि इस देश के अन्दर आमदनी पर कोई सीलिंग नहीं है। एक तरफ एक भादमी लाखों भीर करोड़ों रुपया कमा सकता है, दूसरी तरफ जो भादमी सेती पर रात दिन मेहनत करता है वह तीस एकड़ या पचास एकड़ से ज्यादा जमीन नहीं रख सकता । तो जहां तक उस भाई की जमीन की सीलिंग का सवाल है हम को जो उसूल प्लानिंग कमीशन ने प्ला है उसको तो मानना ही चाहिए भीर भगर उस भाई को उससे ज्यादा भी रियायत दे दी जाए तो देश का कोई नुकसान नहीं होगा। जिनकी जमीन पर मजारे की शक्ल में किसी दूसरे का हिस्सा नहीं है भीर जो खद उस पर खेती करते हैं भौर भाम भादमी से ज्यादा पैदाबार करते हैं उनको कुछ ज्यादा रियायत दी जानी चाहिए। वह देश को जमीन से ज्यादा पैदावार दे सकेंगे ।

उपाध्यक्ष महोदय, मुझे इस बिल के भन्दर एक बहुत बड़ी कभी दिखायी दी। इसके अन्दर कोई ऐसा क्लाज नहीं रखा गया है जिसमें यह बतलाया गया हो कि जो जमीन सीलिंग से ली जाएगी उसका बटवारा किम तरह से होगा। क्या उस जमीन को वहां के धफसरों को बतीर जागीर के दे दिया जाएगा जिसका बटवारा चाहे वह ईमानदारी से करें या खराबी से करें। श्राप जानते हैं कि जमीन के बटवारे में कितनी खराबियां होती है। इस बिल में कोई उसल नहीं दिया गना है कि जो जमीन सीलिंग के बाद हासिल होंगी उसका बटवारा किस तरह किया जाएगा। इमलिए मैं चाहता हं कि जब वह बिल सिलेक्ट कमेटी से यहां भाए उसके बाद इसमें यह दर्ज होना चाहिए कि सीलिंग के बाद जो जमीन मिलेगी उसका बटवारा किस उमूल के मताबिक होगा।

इसके साथ साथ में एक भ्रोर भ्रजं करना चाहता हूं। मैं चाहता हूं कि उन भ्रादमियों के हकों का ध्यान एखा जाना चाहिए . . .

भी भ्रम अब भली (धुबरी) : दफा १४४ देखिए ।

ची । ररावीर सिंह: वह में ने देख लिया है।

इस सदन में जहां हम बैठे हैं यहां पर भी पहले खेती होती थी। इस सदन की भूमि में किसी समय खेत लहलहाते थे। मार उन लेतों के मालिकों की भौलाद भभी दो मिनट पहले मुझ से बातें कर रहे थे। उनको यहां से बेदलल किया गया भीर उनको पंजाब में जमीन दी गयी। जब पंजाब वा बटवारा

[बी॰ रणवीर सिंह]

5175

हुमा तो उनको दिल्ली स्टेट के मन्दर क्यासी परमानेंट बैसिस पर जमीन दी गयी। उनमें से ६ मादमियों को जो किरकी गांव में हैं मब निवारा उठाने की कोशिश है। जमीन एक पेशा है। इसलिए में चाहता हूँ कि जिन माइयों की जमीन ली जाती है उनके साथ ज्यादती नहीं होनी चाहिए। जिन भाइयों की जमीन ली जाए सड़क निकालने के लिए, नहर निकालने के लिए, भ्रस्पताल बनाने के लिए, या दूसरे मुक्ड काम करने के लिए, सीलिंग से जो जमीन बचे उसके मन्दर उनका क्याल रखा जाए।

इसके घलावा मेरी राय हैं कि मजारे की जमीन मालिकों के लिए रिज्यूम न की जाए । भगर भापको मालिकों के लिए जमीन चाहिए भीर धगर भाप उनको लाजिमी तौर से जमीन देना चाहते हैं और नए काश्तकार बनाना चाहते हैं तो जो सीलिंग से जमीन मिलती है उसमें से उनको जमीन दीजिए, मजारे को जमीन रिज्यूम करने के लिये बेदलल न कीजिए। धगर उन लोगों को, मालिकों, को, भ्राप जमीन देना लाजिमी समझते हैं तो जो जमीन सीलिंग से फालतू मिले वह उनके लिए रखनी चाहिए।

Mr. Deputy-Speaker: Shri Ranga.

Shri Supakar (Sambalpur): The hon, Speaker had said that Members who had not spoken so far would be given opportunity to speak.

Mr. Deputy-Speaker: I will come to them. They will have their opportunity. But not as much as the hon. Member wanted, that each Member should have one hour. I cannot give that.

Shri Ranga: Mr. Deputy-Speaker, I do not wish to traverse the ground I have covered yesterday, but some new points which were raised today have to be answered and some new points which occur in this Bill have also to be touched upon.

My hon. friend, the Minister in charge, was pleased to quote the Planning Commission and take shelter behind their recommendations in favour of the so-called land reforms. I wish to inform the House that first of all, I had never accepted the Second Five Year Plan. Therefore, I am not prepared to accept their reasoning (Interruptions). Secondly, I took care to vote against the First Five Year Plan in which some of these ideas were incorporated and specifically stated.

Mr. Deputy-Speaker: Even if he had not done that, he can speak against the Bill.

Shri Ranga: That is true. But then my hon, friend said that these are all the things which have been generally accepted; therefore, there is nothing more to argue about their advisability or otherwise and all that he had to do was simply to quote them.

My hon, friend said that ceiling was sought to be imposed in order to find enough land or some land for all agricultural those people who are workers. Actually, the policy of the present Government and the Party behind it, to which till the other day I myself belonged, comes to this, that whatever land that they could obtain as a result of the imposition of ceiling is not to be distributed among the landless agricultural workers by family holdings but is to be kept under the ownership of Government-Government thus coming to be the biggest landlord and zamindar in that way-and then placed at the disposal, as they say, of co-operatives, of which these landless workers would be invited to become members.

Therefore, they have frustrated, and have sought to destroy, the very purpose for which, as they said years ago, the ceiling was proposed by them. This ceiling is really not intended, and cannot be expected, to benefit the agricultural workers. If the agricultural workers.

tural workers at least come to be peasant proprietors having their own basic holdings or family holdings, it is something. If, on the other hand, they were to say that what they hope to gain by the imposition of celling would be such a small area in any village or in any group of villages that it would be worth their to think more in terms of co-operative farming than in terms of peasant proprietorship. I would like to draw their attention to one of the provisions made in this Bill which says that a basic holding is supposed to be 2.5 acres and a family holding is supposed to be three times as much or 7.5 acres and, therefore, as agricultural workers as should be allowed the family holding or basic holding.

There is nothing in this Bill prevent Government, if they so wish, from granting the status of peasant proprietorship to as many agricultural workers as possible, if and when they get some land as a result of the imposition of ceilings. But they do not want to do that. They do not want peasant proprietorship at all. They have no faith in it. That is how the Planning Commission appear to be disposed towards this matter. That is also how their proposals seem to tend to-the abolition of peasant proprietorship and its replacement by co-operative ownership, co-operative cultivation and farming which would ultimately end-of course, they themselves know it-in the communes of the Chinese type with which till the other day they were very much in love but with which today, I suppose, they are a little lukewarm in their love

Do Government really expect that production is likely to go up by the imposition of ceiling? Why do they want to prevent fragmentation? One of the main reasons why they want prevention of fragmentation is that through fragmentation production will go down. Therefore, fragmentation should be prevented. At the same time, while they themselves go on professing this kind of imposition

of these ceilings for higher production, they categorically deny the very rationale for their justification for these ceilings.

I agree that one part of Government policy need not be in consonance with another part of Government policy. But it becomes much more extraordinary when the same Bill in regard to agriculture were to contradict itself through the different provisions of the Bill.

Next, they say there are so many landless people and they have got to provided with land. I put the question. My hon, friend was rather unhappy at the question. The question is this. There are so many who are homeless. I would like to know whether there is going to be any ceiling at all on the number of houses that anyone is expected to hold. So many people are without any property. A similar question can be put also whether all these properties are going to be sequestered or confiscated. I do not wish to weary the House with what the Prime Minister has said in the Rajya Sabha not so many years ago. He said that he was not going to be a party to that kind of socialism which would result in the distribution of poverty amongst people. But that is what exactly my friend is going to do, to distribute landlessness among the people who have some land and also those those who are landless agriculturists in the country by making them lose all their control over the farming operations, making them lose self-employment stauts thereby losing their social as well as economic stauts and independence; and thereafter, one fine morning simply dismiss their so-called title to their land-holdings.

In the meanwhile they hold out one soup. Although they will be driven into these co-operatives of their conception—they call them voluntary—they are going to be allowed to enjoy, the possession of their own titles to their lands. That will only be on

[Shri Ranga]

51795

paper. Will they be sold? Will anybody be so foolish as to purchase these titles once the control over the land is gone and the land becomes not the property for enjoyment but for utilisation, for exploitation, property from which no self-employment can be derived once it has gone into the possession of the co-operative and no longer remains in the hands of the pattadars or landholders? Therefore, it is wrong in conception. It is partial in application. It is not social justice; it is social injustice imposed upon one sector of our society at the arbitrary will of a number of people calling themselves the Planning Commission presided over by no less a person than the Prime Minister himself. This kind of social injustice had been inflicted on the peasantry in other countries and they have paid a very high cost.

Shri Harish Chandra Mathur (Pali): Not by the Planning Commission but by this Parliament. Is it.....

Shri Ranga: Unfortunately the Planning Commission was quoted by my hon. friend and therefore, I am confining myself to that alone. course, Parliament has also been party. But we have got different That was the Parliaments. This is the Second Par-Parliament. liament. There would be a Parliament also (Interruption) hope that the Third Parliament might come out to be a different thing its social as well as political content, other than what this Second Parliament happens to be, in which my hon. friend will not be a member in the Treasury Benches (Interruption).

Shri Harish Chandra Mathur: Let us hope it will not be so.

..Mr. Deputy-Speaker: Order, order; let that not be decided just now.

Shri Ranga: Thanks very much. I did not accept that particular principle at all.

Secondly, I come to the extent of the land that is to be allowed to be enjoyed by such of those few people who happen to have some land more than the family holding. In yesterday's Bill it was stated to be 25 standard acres and today they say only 25 acres.

I had also an opportunity of going to Manipur. I saw the lands there. We went through the villages as Members of the Public Accounts Committee. We found that land was not the same all over in fertility or productivity. They said so. were not the same also in the facilities that they enjoy either in regard to water supply or in regard to drainage facilities and other things. I do not see any reason why a different standard should be applied to the lands in Manipur, apart from the usual standard that they have accepted for Punjab, for instance, and also in Tripura. That is the question of standard acre.

Thirdly, the question of compensation comes up. It is tied up with the Constitution itself. There was an amendment of it to which so many of us were a party according to which Government would be the final authority to fix the quantum of compensation. At the time we were passing it we were under the impression that it was to be applied to the functionless intermediaries in land. Now, in this Bill, not only the functionless intermediaries known as the zamindars -and by other names in other parts of the country-but also pattadars and the peasant proprietors and even the tenants are being clubbed together. The interests of all these people have got to be taken up separately. In one sense Government has also conceded this particular principle.

When the question of compensation to be paid to the pattadars or peasant proprietors by Government comes to be considered in this Bill in clause 146, they would like it to be 25 times the land revenue if the land has not

been cultivated and 50 times the land revenue if the land has been cultivated. I would like the Government to look into the accounts of the Dandakaranya Project, and also find out the amount of money that they had to advance to so many of our own displaced persons when they wanted to enable them to convert tarai lands into cultivated lands. Let them look into the amount of money that was needed by each one of these peasants to turn an acre of uncultivated land into an acre of cultivated land or bring it under proper productive cultivation over a period of years. Can it be said that it is anywhere less than Rs. 1,000 over a period of five years or 10 years per acre? Let them look at the provision that they want to make.

Surely, land revenue is going to be fixed under this Bill. It cannot be more than Rs. 10 per acre, even in this Manipur. Therefore, Government wishes to pay Rs. 250 for uncultivated land and Rs. 500 for an acre of cultivated land. Does it square with facts or with reality or with the actual expenses that the peasants are obliged to incur over a period order years-not one year-in bring uncultivated land into proper productive cultivation? Surely, this is unjust; this is not the way in which people have got to be treated in regard to the prices.

Government offered compensation at the market rate to the holders of shares which were possessed by the Imperial Bank of India. They fixed a particular date.

An Hon. Member: On the face value.

Shri Ranga: Not on the face value, I think, but at the market value. The face value was about Rs. 100 and the market value was Rs. 1,600, I speak subject to correction. When it comes to land they want to do this thing. Is this not unjust? I would like to know that. Apart from all your principles, here is the principle of actual realism and reality. I challenge

Government, this Government as well as any other Government anywhere here in India to bring uncultivated land into proper productive cultivation in the manner in which offer this compensation, (Interruption). Then, I am prepared to accept their solution. They ought to able to look at it with a sense actual realism; not only that but also with a sense of responsibility towards our peasants. They are the people who have given their votes to our friends and all of us who have been able to come here to this House as well to the other Legislative Assemblies. You want to deal with them in this summary fashion just because you are in the mid-period of election and you think somehow or other you can start some kind of scare at the time of the next election and back again with a majority as hon, friend Shri Mathur wants you to come back

An Hon Member: You Sir!

Shri Ranga: Then, there is another thing. When it comes to the tenants the amount of compensation to be paid by the pattadars has been fixed at 30 times and not 50. If it is 50, then it may not be too unreasonable though unreasonable it is. If it is to be 100, then it has got to be something else. Of course, the tenant has got to be treated a little better than the Government. Government has got the money and it can be expected to pay the market price; but the tenant may be able to pay it. I am prepared to consider that; but it does not mean that only 30 times is legal. I would like the Joint Committee to give some consideration to this particular matter. They have fixed a particular date. Yesterday, I took jection and my hon, friend stated that the other Bill was published in 1957 and so they knew that this Bill was coming up and from that date wards they were going to say that all the transfers of land were not to be recognised or treated as if they have not taken place at all. First of all, it is yet to be considered by

[Shri Ranga]

2183

House as well as the courts later on as to from which date the Government would be entitled give retrospective effect in regard to a Bill which had not been introduced or considered by this House. I do not know whether they are entitled to do so or not in law but in all conscience I feel they are not entitled to impose a thing like this. My friend who is a distinguished lawver and certainly a very distinguished Minister said here that ignorance of law was no excuse. After he has come over to Delhi, he seems to have forgotten the conditions of his own people in his own constituency. Do they all know the law, its provisions and its dangers? Do we expect these people seriously to go on looking into all the Bills that are coming up here, at what time notices of Bills given and so on. Many of our own Members do not themselves know. Thanks to your Secretariat we being informed about what has happened during the last week or during the last session and all the rest of it. If it is not for that information, quite a number of the hon. Members would not be able to know what Bills are being introduced or are being discussed, what Bills this Ministry has got in its anvil and archives or thought fit not to introduce. Yet he wants penalise our peasants. I take objection to this. The same sort of difficulty arises in this Bill also. They have fixed 15th January, 1959 and all transactions from that date had been negatived. Wonderful! Here is King Canute who simply says that the moon has not set and it is not day and the Sun has not arisen at all although it is mid-day. I wish him all good luck at the next election.

Shri Harish Chandra Mathur: Are you really serious?

Mr. Deputy-Speaker: All along the hon. Member's eye is on the next election....(Interruptions).

Shri Ranga: 'They should think about it very carefully. Then there is this question of land for personal

cultivation. They say that it should be 21 acres only. Is that enough? Why have they fixed it so low? There is the question of profits in agriculture. They want the settlement officers to estimate the profits in agriculture. Indeed I am very glad that they are for the first time asking whether there would be any profit in agriculture. They feel that some officer should be made responsible to calculate whether there are any profits in agriculture. I hope when they collect that information, they will be good enough to place it on Table of the House so that we will be able to make use of it when we have to deal with the other sections.

Yesterday I took objection to the provision regarding the land revenue collection. I repeat my objection. For two months they can delay the harvesting of crops in this tribal, hilly area, where it is so dangerous keep all these things in the fleids. The crops come up and are heaped up. Unless the peasant pays the land revenue, he can be prevented from harvesting his crop for two months. Is this reasonable? Is it not insensible? Is it not, from the agriculturist's point of view, a stupid thing? I am not looking at it from the point of view of the law books of the Home Ministry but from the agriculturists point of view. To delay the harvest for two months because a person is unable to pay land revenue is very unfair.

There are courts. What is the authority which will decide about all these things? It is the revenue authority. It is the court. Against a large number of decisions of such courts. there is to be no appeal at all to the proper courts. It is a very peculiar socialism of the Hegelian type. Therefore, I oppose this. We know too well what sort of a nuisance the revenue officials can be, how partial they can be, to what extent they can be manipulated by the Ministers and the legislators and by the Ministry here and the Ministry that has to come in these respective States. Therefore, I

Land Reforms Bill

am anxious that these revenue courts should be replaced by judicial tribunals. Sir I have done.

Shri Supakar: While moving the Tripura Land Revenue Bill, the hon. Minister has said that it was a model Bill and when he moved this Bill he refrained from saying that this was also a model Bill because the Speaker asked him not to repeat his previous arguments. They are having three successive Bills for Tripura, Manipur and Delhi, each coming close on the heels of one another and therefore we have the opportunity of having a comparative estimate of the three Bills. I would particularly like to discuss the provisions about ceiling on land holdings because that is burning problem of the day not only in the Centre but in all the States, I was comparing the ceiling in Tripura, Manipur and Delhi. Hon. Members criticised this Bill that there was lacuna because no arrangement had been made to assess the different kinds of land, of their productivity. of the facilities for their irrigation, etc. in Manipur whereas so far Tripura is concerned, a standard acre has been defined. Now, I will choose the land of Manipur and compare it with the land of Tripura. I was eager to know whether, because the Government provides under the earlier Bill relating to Tripura that a person may have 50 acres which, when converted, becomes 25 standard acres, if all the fifty acres of lands were of the variety known as fallow or upland. In the case of Manipur he may not possess more than 25 acres of land, whatever be the quality of the land. About the geography and the variety of soil in the two different States I was anxious to know. Although I have no first-hand knowledge, I consulted the Imperial Gazetteer of Manipur and Tripura. I have no time to quote the classification of lands in these two States but I learn that the land in Tripura is much more fertile than the land in Manipur. We know from Shri Achaw Singh's speech that Manipur also is mostly a hilly area and people take recourse to Jhoom cultivation. Let us compare 25 acres of land in a hilly area where Jhoom cultivation is practised with the land in Tripura which has luga lands which is perhaps more fertile according to all accounts. we compare these two figures, have to doubt whether social justice is being done when we fix a ceiling merely on arithmetical basis without taking into account the productivity of the land in these two States.

In this case, while the Deputy Minister was moving for reference of this Bill to a Joint Committee of both the Houses, when the hon. Speaker asked him as to why no account has been made of the different varieties of land-irrigable land, dry land and wet land-the hon. Minister as a justification that here the lands are more standardised. He also said that because the Bill provides for a basic holding of 2.5 acres and a family holding of 7.5 acres it was not found necessary to have the definition of "standard acre" which is provided in the corresponding Tripura Bill.

In this connection I would like to submit that 25 acres in the aggregateby "acre" I suppose that it is only 4840 square yards and nothing elsehas been provided, but we do find any co-relation between the ceiling of 25 acres and the basic holding or the family holdings which has been defined in the first chapter the Bill.

You will find, Sir, that even Tripura Bill provides for basic holding and family holding. There family holding is still less, it is only 6.4 acres, whereas here it is 7.5 acres. This leads us to the presumption, which is supported by geogra-phical facts, that the land in Tripura is much more fertile than the average land in Manipur, Therefore, what social justice is done if we allow person in Manipur not to hold more than 25 acres of land, we fix 25 acres as the ceiling whereas in the case of Tripura where the land is much more

[Shri Supakar]

fertile we allow a person to hold about .50 acres, because two acres of tilla land is equal to one standard acre.

DECEMBER 15, 1959

When we compare these two Bills with the Delhi Land Holdings (Ceiling) Bill we face a greater surprise. because there it is provided that the ceiling on land holding is 30 acres. Can we compare the land which is washed by the holy river Yamuna for several thousands of years and which is known for its fertility with the arid, forest region of Manipur? Whereas we say that a person can hold 30 acres in Delhi, we say that a person cannot hold more than 25 acres in Manipur. Is this social justice?

Sir, the whole trouble with especially with policians, is that we go by statistics, we do not take into consideration the facts, the difficulties that are faced by the agriculturists. We usually lose sight of any pragmatic approach to problems as they crop up. I can understand that in a place like North Bihar, U.P. or Puniab where there is concentration of people on land, where there are more people on land, where there is great fragmentation of holdings and many of the holdings are uneconomic, there is necessity of weaning away land so that they cultivators from may take recourse to other occupations and other professions. There may be a good justification for fixing a fairly low ceiling in such areas where the land is very fertile and very rich, but where it is necessary to bring more and more land into cultivation for the sake of the country's prosperity and for making India self-sufficient in food I fail to understand what is the necessity of having a very low ceiling as has been done in the case of Manipur. For example, this will also apply, this limit of 25 acres will also apply to persons who are habituated to jhoom cultivation. Supposing a very industrious man. an agriculturist. brought into cultivation 25 acres of land and he has the capacity and the

means to bring under plough more area, if we say that no person will cultivate more than 25 acres then we not only put a ceiling on the land holdings but we put a ceiling to the prosperity of the territory of Manipur. That is my objection. I should submit that we may not take our idealism to a very extreme limit, in all the corners of this country; but we may limit that to those places where there is a real pressure of population.

Sir, I have no time to discuss in detail all the other points, but I would like to urge one other point, and that is about the definition of "family". We find here that "family" has been defined as: "'family' in addition to the person means the person's wife or husband as the case may be and dependent children and grand children of such persons." suppose we are not living in European society where even children and grand children above the age of 18 are considered to belong to some other family. I would ask the hon. Minister, what happens to the aged mother? Does she belong to the family or she is in somebody-else's? What about the widowed daughterin-law? I would submit that it is just and proper that those persons whom the manager or the karta has the moral or the legal obligation to maintain should be considered as members of the family. Even if we say by force of legislation that from the date this Act comes into force our families would be said to be Europeanised and nobody except the sons and daughters and grand sons and grand daughters would be considered as members of a family, still for ages to come, perhaps, the aged parents and other members of a family who have no independent means of livelihood and who have to depend for their livelihood on the earning adult members of the family will continue to be members of that family though not de jure at least de facto, and it will be an absolute

₹189

cruelty to exclude such persons, especially those persons whom the manager or the karta has a moral and legal liability to maintain, from the membership of the family.

These are two very important things to which, I believe, the Joint Committee will give their due consideration.

15 hrs.

Shri Panigrahi (Puri): While introducing the Bill the hon. Minister would have done well if he could have given us an idea as to the number of landless people in Manipur and the extent to which they are going to get land by the introduction of this Bill. However, we have come to know that the pressure of population in Manipur is heavy and the land is fertile. But with regard to the ceilings, Shri Ranga had certain points and certain misgivings. Yesterday, he wanted us to go back to the old days of the Chola dynasty and Chola kings in the South, and today also he did not accept, from the very beginning, the second Five Year Plan. But we would not like to remain stagnant; we would not like to go back to the days of Chola dynasty but to go ahead.

With regard to the ceiling which has been proposed in this Bill, I have a few suggestions to make. When it has been admitted that the land in Manipur is fertile and the pressure of population is heavy, the ceiling of 25 acres for a family of five and an extent of 50 acres for every additional member, to my mind, is too big a ceiling. I would submit that the ceiling for a family of five should be 15 acres and for every additional member it may go up to the maximum extent of 30 acres in Manipur.

When we come to the question of exemption, we find that exemption has been provided in clause 153. The Government has decided upon a ceiling and then it has also given powers of exemption. In clause 153 wide powers have been given. I may refer to clause 153(c) which reads thus:

"any specialised farm which is being used for cattle breeding, dairy or wool raising:".

It is too wide an exemption. Any land which is being held by a cooperative society is also exempted. I do not object to the co-operative societies being exempted, but I have my own feelings about them. I have seen in Orissa certain co-operative societies which took money to the extent of Rs. 50 thousand from the Government: the lands there were shared among the members of the family of the landowners; they took Rs. 50 thousand from the Government but they did not buy any new bullock or a new cart. They only used the old bullocks and the old carts and charged the bill to the extent of Rs. 50 thousand payable by Government on the ground that they actually spent Rs. 50 thousand! When the Government went and enquired into the matter, they realised that everything was a fraud. So, if co-operative societies are to exempted, as the hon. Minister pointed out in the beginning. they must be bona fide co-operatives, and it must be enquired and ascertained as to whether they really intend to benefit the members of the society and whether they are really going to introduce co-operative farming.

With regard to the rights given to the landowners, I think the rights have been enumerated in detail. But I would draw the attention of the hon. Minister to clause 112, where the rights of the tenants have been defined. Let him take into consideration and compare the rights which have been given to the landowners and the rights which have been given to the tenants. The rights offered to the tenant is nothing when compared to the rights given to the landowners. After giving the rights to the tenants in clause 112, wide powers are being given in clause 122 for eviction of

[Shri Panigrahi]

1191

tenants. If you go through clause 122 you will find that a tenant can be evicted on as many as six or seven grounds which have been enumerated in that clause. As far as the eviction of tenants is concerned. I submit that this Bill should not give as wide a power as it has given. Otherwise, the purpose of the Bill will be defeated. The landlord has been given the right for reservation of land for personal cultivation. The reservation of land for personal cultivation also varies. The landlord may evict a tenant, sometimes to the extent of five acres, sometimes up to seven acres and sometimes even up to 25 acres. So, how many peasants are there in Manipur who own a basic holding, say, 2.5 acres? How are you going to provide at least a minimum basic holding to a tenant? After giving wide powers of eviction to the landowner and after giving him wide powers to evict up to 25 acres, the Government, at the same time, wants to assure a basic holding to a tenant. How can the two go together? According to a mixed pattern of economy, they may go together. You can satisfy both the landlord and at the same time the tenant, according to that pattern. But, if you really want to have a land reforms Bill which would really satisfy the needs of the toiling millions, which would really satisfy the needs of the toiling masses and the tillers of the soil. this kind of mixed idea about land reforms will not help the tenants to the extent that you aim at.

With regard to the distribution of land, my hon. friend Ch. Ranbir Singh made certain points. There is no specific provision in the Bill as to what the Government or the administration is going to do with regard to the extra land that it is getting after the ceiling is fixed. There must be a specific provision that the land will be distributed. Firstly, it should be distributed to those who have no land. Secondly, it must be distributed to the tribal population who have no land up to the extent of a basic

holding. That would be reasonable. In fact, I would go further and say that land may be distributed completely free, if possible, to those who are landless, out of the land which will be available by fixing the celling.

There is a provision which has given power to the landlord to give lands on lease to the tenants and, at the same time, given the rights to terminate a lease by giving notice. The two things go side by side. I think once you give the landiord the right to terminate a lease, by any pretext the landlord will try to give notice and then terminate the tenancy right of the tenant. This must be well known to the Government through their experience in implementing the different land reform Acts in the various States: the poor peasant has been pitted against the well-placed landlord in society. landowner has every access to court of law. The landlord is a monied man and he can continue a case for ten years. In some cases, in Orissa, peasants have come from there to the Supreme Court to get justice. Is it possible on the part of a tenant or a peasant to get justice from the hands of a landlord by coming from Manipur to the Supreme Court here or from my State of Orissa to the Supreme Court? That experience must be remembered. there must be a specific provision that a tenant who is cultivating the land for a period of ten years belongs to a separate category of tenants. He must be considered as belonging to a separate category. The Bill should provide for two kinds of tenants: a tenant who is permanent, who is cultivating the land for the last ten years; and a tenant who is temporary. There is no such specific provision in the Bill which makes any distinction between a permanent tenant and a temporary tenant.

Keeping in view the fertility of land in Manipur and also the pressure of the population, I suggest the family holding should be 5 acres and not 7.5 agres. I draw attention to clause 106, under which the landlord has been given the right to resume land up to a permissible limit, which is too high. It ranges from a basic holding of 2.5 agres to a ceiling of 25 acres. This clause on permissible limit will be utilised by the landowner and the very objective of the Bill will be defeated. The grand ideals which the hon, Minister cherishes to offer to the landless agricultural labour in Manipur will be vitiated and defeated by the landlords.

Therefore, I submit, let the period be considered from 1950 and not 1956, so that at least a period of 10 to 12 years will be there. Any tenant who is there for the last 10 or 12 years should be considered as a special category of tenant-a permanent tenant-and he can on no account be evicted by the landowner. The other category will be the temporary tenant, whose case can go to competent authority, whether he can be allowed to retain his land or not. with regard to competent authority, you know well how the bureaucratic machinery is functioning. In this everything has been left to the sweet will of the administrator, who has been defined as the competent authority. Even fixing and assessing of rents, finalising records, etc. have been left to the competent authority. I hope some measures will be devised, so that the people of the village may be associated when all these decisions are taken and the bureaucratic officers will not get a free hand to decide as they like. It is well known that usually the landlord and the rich in the village have a greater pull with the bureaucratic machinery than the poor people.

When, under the provisions of the Bill, the poor peasant is going to be involved in litigation for many years to come, it is better that Government provides legal aid to a tenant who is being evicted by the landlard. But there is no such provision in the Bill. I submit that the poor

tenant who is going to be evicted by the landlord should be given legal, aid by Government, so that at least, he can fight his case against the landlord or landowner.

With regard to the special provision for the tribal people the provision only says that no land of a tribal people can be transferred to another without the permission of the competent authority. I welcome this, but it is not enough. It must also be ensured that if a tribal person is landless, he gets land free from Government, when the Government is going to get extra land by imposing this ceiling.

As the Bill is being referred to a Joint Comittee, I will not more time. My last submission is, according to the hon. Minister, only an amount of Rs. 6 lakhs it required for meeting the needs of compensa-When the financial provision is so meagre. I suggest that the land made available by imposing this ceiling should be directly given without any charge to the landless agricultural labour in Manipur. Government is spending crores of rupees in other departments; so, when the amount is. so meagre as Rs. 6 lakhs, why not give the land free to all the landless agriculturalists in Manipur?

Shri Datar: A number of suggestions have been made by hon. Members. My friend, Shri Ranga, was almost in an aggressive mood. made a speech on the lines of his utterances as a leader of the new party that has been formed. I should like to reply only very briefly to the main points which require a reply. My friend, Shri Achaw Singh, complained that the records of the revenue were not satisfactory. That is the very reason why Part II of this Bill deals only with this question of proper revenue administration. Especially when land reforms are going to be introduced and substantial rights are being given to cultivators, it is essential that records should be as perfect as possi-

51 SE

[Shri Datar]

ble.. Therefore, I am confident he will welcome the introduction of new measures for making the revenue administration as efficient and faultless as possible.

Some hon. Member suggested that the ceiling should be put at a higher figure. But two hon. Members stated that it ought to be put at 15 acres. My friends, Shri Ranga and Shri Supakar, were of the view that all the land was rocky there. That is an entirely incorrect notion.

Shri Ranga: I did not say so.

Shri Datar: There are fertile lands also there. Out of 700 square miles in the valley, we have got 2.03 lakh acres, which are sown. So, it would not be proper to suppose that all these lands are not fertile or are rocky. We have not generally taken into account the lands that are in the hilly areas. These are in the valley areas. There the crop is paddy. That is why it was considered that 25 acres would be a proper ceiling. We are not going to keep it at 15 or 30 acres as in other places, but 25 acres has been fixed, not by Government only, but only after consulting the advisory committee for Manipur. That is also a matter which should be taken into account.

A number of hon. Members naturally have not visited Manipur, though my friend has. All the same, we have to take into account all these circumstances.

Shri Ranga: The Congress was defeated there by the Communists.

Shri Datar: I do not want any running commentary while I am speaking. I have heard him patiently; he has to hear me now. It may be unpalatable to some extent, but he will kindly hear me.

'Shri Deputy-Speaker: I might enquire that if only less than half is so fertile in the valley

Shri Datar: I am replying to that very point. In the case of Tripura there were different types of land. So far as Manipur is concerned, we considered that question, and we decided that basic holding and family holding should be equivalent to 2.5 and 7.5 acres respectively. In the Tripura Bill the concepts of family holding, basic holding and permissible limits have been expressed in standard acres. In the Manipur valley, to which this legislation is intended to apply generally, the variations in the quality of land are not marked. That is the reason why it has been mentioned here

Mr. Deputy-Speaker: Just now the hon. Minister stated that about half, or less than half, of the land in the valley is fertile.

Shri Datar: Not less than half. 700 sq. miles was the extent of the valley. The total extent of Manipur was 8,038 sq. miles, of which only 700 sq. miles was the valley area, and in this valley area the land sown is 2.03 lakh acres.

Mr. Deputy-Speaker: The land in the valley area is the same as in the hilly area?

Shri Datar: There as no question of any hilly area as such. The question here is confined to the valley area. That is why I said that the land is generally fertile. I cannot say it is completely fertile, but it is generally fertile. The Government wanted to work out the whole thing with a view to see whether any standard acre should be laid, and after full examination of the whole question the Government came to the conclusion that the variations in the quality of land are not marked. Secondly, you will also see that the quantity of paddy that is available has been fixed at a flat rate of 3.60 per acre. It is not proposed, therefore, to apply the concept of standard acres for the purpose of defining the expressions.

Then we have to take into account another thing. So far as rent is concerned, what we have done is this. Generally, the Planning Commission follow one-fourth or one-fifth of the produce. Here we have allowed the customary rent, which is roughly equal to one-third of the produce. Therefore, we have kept that in this case.

Under these circumstances, I would point out that there is no substance in the contention that the ceiling has been fixed arbitrarily. Naturally, ceiling has got to be fixed and we cannot leave the matter as it is. I have already made a reference to the larger question of having a ceiling. In this case, 25 acres had to be fixed, taking into account the conditions in Manipur, the yielding quality of land and all other relevant circumstances.

Two hon, Members have pointed out that the ceiling ought to be lesser. Shri Achaw Singh and Shri Panigrahi have rightly pointed that the ceiling ought to be 15 acres. That shows what we have done is a satisfactory arrangement. This question was considered in the State Advisory Committee, in which there were a large number of hon. Members from Manipur, and they suggested that this was a proper ceiling.

Another hon. Member suggsted that non-cultivation for two years should not be visited with any punishment or penalty.. I have already answered this question. So far as Tripura is concerned, we cannot afford to allow the land to remain uncultivated for longer periods, in the interests of the State and the cultivator himself.

Another hon. Member suggested that the cultivator ought to be given some money, or some loan and other facilities, for proper cultivation. May I point out in this connection under the new Bill that is going to be passed he will be entitled to all the help that an agriculturist is entitled to? Taccavi loans can be taken. Then there are loans for cattle, well, fertilizers and other things. All these things are made available now with a view to facilitate the cultivation of the land so that he can get as much profits out of the land as possible.

Then, some hon. Members suggested that the rules about evictions were very rigid. May I point out that they are not rigid? And if the cultivator does not carry out the work properly. it is not only he-his suffering may or. may not be taken into account-but the whole nation that suffers, and so when he acts in such a manner that the land is laid under waste, active waste, it is natural he will have to give up his land, or he will have to be evicted from his land.

Then the question of rent has been brought forward. May I here point out that it is the primary duty of the tenant to pay his rent? He can ask for some time by way of grace. period of grace of three months has been given and again another months has been provided in this Bill. If he does not pay, then naturally, unless he retrieves his position in right time, he will have to give up his possession. Something will have to be done there. While we are anxious to look after the interests of the tenants-and you will find that a number of provisions have been introduced for the benefit of the tenants who require a lot of help, a lot of safeguards-it is the primary duty of the tenant to pay the due rent in time The amount has also been fixed after taking all the circumstances into account.

My hon, friend, Shri Ranga, brought in a number of controversial points and, as usual, he put things at, would say, their worst. He said that the Government was becoming a big landlord.

Shri Ranga: Is it not so?

Shri Datar: Further, he said that ceiling would amount to fragmentation also. He mentioned all these things. Here may I point out-I would not go into all those circumstancesone thing with due deference to my

(Shri Datar)

hon, friend? All these provisions relating to land reforms will be found in the Planning Commission's report which . . .

Shri Nagi Reddy: He contests that Also.

Shri Datar: Let the hon. Members have some patience. It was issued in 1956 when my hon, friend was either a member of this House or the other House.

Shri Ranga: Yes. I voted against it when it came for voting in the Rajya Sabha.

Shri Datar: Then he was a member of a particular party.

Shri Ranga: Then also I spoke against it.

Shri Datar: The hon, Member has to accept it. Because he issued certain veiled threats to us, therefore, I am mentioning only two or three points. (Interruptions) The reports of Planning Commission, or the plans envisaged by the Planning Commission were not very well the products of the Congress party—the Congress party had nothing to do with it-it was the product of the Government. It was accepted by both the Houses of Parliament, and when both the Houses of Parliament accepted it, it is entirely futile on the part of my hon. friend to say that he did not accept Secondly, there is a more telling instance. . .

Shri Ranga: Sir. as a member of personal explanation.

Mr. Deputy-Speaker: Order, order.

Shri Ranga: I have always the right to make a personal explanation.

Mr. Deputy-Speaker: When the Chair allows or even before that?

Shri Ranga: I want to explain one thing.

Mr. Deputy-Speaker: I will give him time for it.

Shri Datar: I will refer to one more telling instance. After the report was accepted by the Congress party and by the Government new general elections were held in 1957 and my hon. friend was a member of the Congress party. He was elected on the ticket of the Congress party, and only recently, after the Nagpur session of the Congress, my hon, friend says in all seriousness that he has not accepted (Intrruptions) If, for example, he felt that the Congress was wrong. then the proper course for him would have been to resign his seat in Parliament.

Shri Ranga: Oh! oh!

Shri Datar: That was absolutely essential. That was absolutely consistent. My hon, friend is putting before the House his own views as against the views of the Parliament. That is the point which has to be understood. After all-we are entitled to our personal views-when we are in public life we have to accept the views either of the party or of the Government to whose party we belong. Under these circumstances, I again repeat that it is absolutely futile for my hon. friend to say that his views are like this. He is entitled to his individual views provided he is in an individual capacity. Even now my hon, friend owes his seat in Parliament to the Congress Party and he owes it to the Congress Party and owes it fairly to himself to resign and then to contend. That my hon, friend has not done.

Shri Ranga: I request you to give me permission to speak on a point of personal explanation after he closes his speech.

Mr. Deputy-Speaker: I will him an opportunity. He should hold himself in patience.

Shri Datar: These are matters which have to be decided. I would not have stated all this, but my hon, friend gave

a veiled threat and said, "You saying so. Let us see what happens at the next election." We are prepared to accept the challenge. us see what his party does.

4301

Mr. Deputy-Speaker: That is all right. But why have a challenge against a challenge now?

Shri Datar: I had to say all this because my hon, friend brought it in.

Shri P. R. Patel: (Mehsana) May I know if the hon. Minister says all these things because of himself or because of Panditji. If Panditji is not there, what would be his position?

Mr. Deputy-Speaker: He should interpret it himself instead of the hon. Minister telling him.

Shri Datar: So far as the co-operauve societies are concerned, all this has been pointed out in the Commission's report itself. A question was asked as to why it was not made clear about the priorities that had to be followed so far as the distribution of lands was concerned. We have got here one large section, that is, section 14 which says:

"The deputy commissioner may allot land belonging to the Government for agricultural purposes or for construction of dwelling houses, in accordance with such rules as may be made in this behalf under this Act."

The Deputy Commissioner naturally will be an officer of the Government and the Government are committed to the principles and the policy or the advice laid down in the Second Five-Year Plan. There it has been stated that after the land was vested in Government. Government does not become a land owner at all. Government want to use all this for the best interests of the country. That has been made clear in the Planning Commission's report itself. I would reed para 318 (Ai) L.S.D.-7.

43 on page 197 in this connection.

"In the settlement of lands acquired in consequence of the application of ceilings, tenants dis-placed as a result of resumption. "

Some hon. Member had suggested this:

"In the settlement of lands acquired in consequence of the application of ceilings, tenants displaced as a result of resumption of land for personal cultivation farmers with uneconomic holdings and landless workers should recepreference. Settlements should be made as far as possible on co-operative lines."

Then, the same matter has further been eluciated in paragraph 44. shall read only one or two sentences.

".....it is important that while the national economy develops and offers wider opportunities for employment to agricultural workers and others, some positive relief within the rural economy is given. to a section of the population which has long suffered from disabilities and has been denied minimum social and economic opportunity. It is, therefore, recessmended that in each State, after the data relating to the census of land holding and cultivation have been studied and the areas likely become available detailed schemes for the resettlement on land of agricultural workers should be drawn up."

This is the policy that we are going to follow everywhere, naturally includ ing Manipur.

Then about family some complaint was made by my hon, friend, Shri . Supakar. When a ceiling has to be [Shri Datar]

laid we have to take account of a family as such. We cannot think of a family in the large sense under the Hindu law, Even that also is being cramped and contracted to a certain extent. Therefore, naturally this is not borrowing anything from the West. A family must first consist of the father and sons and grandsons and his wife. Under the Hindu law, as also under the present law, family members also will be entitled to have their own family considered as a unit for this purpose. Therefore, what hon. Member has suggested does not in any way affect the rights. please understand that the brother's brother's brother's son's son's son may not come within the definition of a family. I would not concede position. But they may live together. We have no objection to that.

Shri Supakar: I was talking of the mother and the widowed daughter-in-law as to whether they will come under the definition of the family.

Shri Datar: I need not answer this question because I have clearly pointed out that we have purposely defined it that way.

Mr. Doputy-Speaker: Why should we presume widows? Instead, let us have married wives.

Shri Datar: So, we have purposely devised the definition in such a way that there would be what you can call a convenient unit for the purpose of carrying on the work of cultivation. That is the reason why it has been done. Therefore, all these limits have been laid down.

Lastly, my hon. friend stated something about legal aid. Legal aid is a general question and that question also, I understand, is being considered in the Law Ministry to a certain extent. Some of the State Governments also are considering as to whether legal aid should be afforded to poor people. That question will also be duly considered. But so far as the Bill is concerned, it is not necessary at all. We have a revenue jurisdiction.

Shri Narayanankutty Mence (Mukandapuram): What about the States which have already passed such measures and have sent them to you several months ago?

Mr. Deputy-Speaker: That is a different matter altogether.

Shri Datar: That is entirely a different matter.

Lastly, I would say one word about the officers. A number of hon. Members stated that the officers were bureaucratic, that they were carrying on things as they pleased and that they were anti-tenants or anti-cultivators. I would like to submit that such vide generations should not be made.

Shri Nagi Reddy: It has been made by the panel of the Planning Commission and not by me.

Shri Datar: Whenever instaces have been found that a particular officer has not been acting properly or has been acting partially or in an arbitrary manner, surely action will be taken against him. Action has been taken in a number of cases. Let us not therefore go by such wide generalisations

Mr. Deputy-Speaker: Shri Ranga might give his personal explanation now.

Shri Ranga: Sir, The hon, Minister called upon me to resign from House because I resigned from Congress Party after having been elected on the Congress ticket. I would like to inform the House and remind my hon, friend that in November 1954 on a vote of no confidence moved by the leader of my party in Andhra, the then Congress Government was defeated. In 1955 the Congress had to enter into a coalition with me and form, what is known, as the United Congress Party. manifesto is still governing that United Congress Party. That manifestonever made any mention of the Plans

or of these land reforms. It was under that manifesto that the present Ministry owes its strength because two-thirds, or about 200 members from Andhra came to be elected under that manifesto in the name of the United Congress Party and not the Congress Party. In that United Congress Party there were three leaders. One was the late......

Mr. Deputy-Speaker: He need not go into all those details. He can say that he was not elected on the Congress ticket. That is all.

Shri Ranga: It is that United Congress Party and the agreement that we reached that governs us. There were three leaders—that late Shri Prakasam, the great Pandit Nehru and myself. It is because of that that today 200 members are sitting in the Cabinet as well as in the Andhra Assembly. If I am to resign.....

Mr. Deputy-Speaker: We are not at present concerned with all those details and the number of the leaders. The only thing that the hon. Member can say is that he was not elected on Congress ticket.

Shri Ranga: Therefore, so far as Andhra is concerned, it was not the Congress as it is understood in other areas but it is a Congress that has arisen out of the United Congress. In the United Congress I am a co-equal of the other partners of that United Congress. If I am to resign, all those MPs, my hon. friends who have been elected in the name of the Congress and also the Assembly members have got to think of resigning their seats.

On what point have I resigned? Not on a personal point, but on a point of principle. If my hon, friend or the party to which I had the honour of belonging till the other day were to think that anybody could resign just because he does not agree with their policy then they should have asked me the reason. In April or May 1957 when I came here soon after the election, I declared here, on the floor of this House, that I am opposed to

the conception of land reforms that have been placed before the House by the Planning Commission and by Government. From the very beginning I had been opposing these proposals placed before Parliament in that House as well as this House by the Planning Commission. I concede point. It is futile for me to oppose these things when the opposition is so strong. But, nevertheless, as a matter of principle it is the right of every Member of this House, whatever may be the consequences of the division or voting or his speech, he should be prepared to lay bare his heart and his faith before the House and if he thinks that a warning should be given to the party in power,-after all it is usual parliamentary decorum to give warning to the party in power -to give a warning to the party in power that what it is doing is not likely to meet with the favour of the electorate next time, because the last election is over and this election is going to come. That is all I have to say.

Mr. Deputy-Speaker: The question is:

Bill to consolidate "That the and amend the law relating to land revenue in the Union territory of Manipur and provide for certain measures of land reform be referred to a Joint Committee of the Houses consisting of members; 20 from this House. namely Shri Bangshi Thakur. Rungsung Suisa, Dharanidhar Basumatari. Shri Etikala Madhusudhan Rao. Ghanshyamlal Oza, Shri Bibhuti Mishra, Major Raja Bahadur Birendra Bahadur Singh, M. Gulam Mohideen, Shri Shoba Ram, Shri Raja Ram Misra, Shri J. B. S. Bist, Shri N. B. Maiti, Shri H. Siddananjappa, Dasaratha Deb, Shri Laisram Achaw Singh, Shri Pramathanath Banerjee, Shri Tridib Kumar Chaudhuri, Shri Ram Chandra Majhi, Shri Bijaya Chandrasingh Prodhan and Shri B. N. Datar.

[Mr. Deputy-Speaker]
and 10 members from Raiya Sabha;

that in order to constitute a sitting of the Joint Committee the quorum shall be one-third of the total number of members of Joint Committee:

that the Committee shall make a report to this House by the first day of the next session;

"that in other respects the Rules of Procedure of this House relating to Parliamentary Committees will apply with such variations and modifications as the Speaker may make; and

that this House recommends to Rajya Sabha that Rajya Sabha do join the said Joint Committee and communicate to this House the names of members to be appointed by Rajya Sabha to the Joint Committee."

The motion was adopted.

15.42 hrs.

DELHI LAND HOLDINGS (CEIL-ING) BILL

The Minister of State in the Ministry of Home Affairs (Shri Datar): I beg to move:

"That the Bill to provide for the imposition of a ceiling land holdings in the Union territory of Delhi and for matters connected therewith be referred to a Joint Committee of the Houses consisting of 30 members; 20 from this House, namely,-Shrimati Sucheta Kripalani. Shri Radha Raman, Choudhry Brahm Perkash, Shri C. Krishnan Nair, Shri Naval Prabhakar, Shri Shivram Rango Rane, Shri K. V. Ramakrishna Reddy, Shri Bhola Wath Biswas, Shri Ramappa Balappa Bidari, Shri Surti Kistaiya, Shri K. Periaswami Gounder, Shri Daljit Singh, Shri Bhakt Darshan, Swami Ramanand Shastri, Choudhary Pratap Singh Daulta, Shri Mohan Swarnp, Shri N. P. Shanmuga Gounder, Shri Atal Bihari Vajpayee, Shri N. G. Ranga and Shri B. N. Datar and 10 members from Rajya Sabha:

that in order to constitute a sitting of the Joint Committee the quorum shall be one-third of the total number of members of the Joint Committee;

that the Committee shall make a report to this House by the first day of the next session;

that in other respects the Rules of Procedure of this House relating to Parliamentary Committees will apply with such variations and modifications as the Speaker may make; and

that this House recommends to Rajya Sabha that Rajya Sabha do join the said Joint Committee and communicate to this House the names of members to be appointed by Rajya Sabha to the Joint Committee.

My task in this respect has been lightened, because we have referred by now two Bills to a Joint Committee and in both of these Bills, we have a provision for ceilings. In Delhi, all that has been done is, instead of 25 acres, we have put in 30 standard acres. In an earlier Bill Land Reforms (Amendment) Bill also, this standard acre was referred to. Because there were different types of land in the Delhi territory. it was considered advisable that there ought to be a standard acre taken into account. Thirty standard acres have been fixed for ceiling in this Bill so far as Delhi area is concerned. The House may also remember that in a similar Bill in Rajasthan, the ceiling has been fixed as thirty standard acres. That is the only point on which there has been some difference in respect of this Bill. In other respects, the provisions are the same. About compensation also, you will find how it has been a graded one. I need not go into all those points. I have that this House will be pleased to safer this Bill also to a Joint Committee.

Mr. Deputy-Speaker: Motion

"That the Bill to provide for the imposition of a ceiling on land holdings in the Union territory of Delhi and for matters connected therewith be referred to a Joint Committee of the Houses consisting of 30 members; 20 from this House, namely Shrimati Sucheta Kripalani, Shri Radha Raman, Choudhury Brahm Perkash, Shri C. Krishnan Nair, Shri Naval Prabhakar, Shri Shivram Rango Rane. Shri K. V. Ramakrishna Reddy, Shri Bhola Nath Biswas, Shri Ramappe Balappa Bidari, Shri Surti Kis-taiya, Shri K. Periaswami Gounder, Shri Daljit Singh, Shri Bhakt Darshan, Swami Ramanand Shastri, Chaudhary Pratap Singh Daults, Shri Mohan Swarup, Shri N. P. Shanmugha Gounder, Shri Atal Vajpayee, Shri N. G. Ranga, and Shri B. N. Datar and 10 members from Rajya Sabha;

that in order to constitute a sitting of the Joint Committee the quorum shall be one-third of the total number of members of the Joint Committee;

that the Committee shall make a report to this House by the first day of the next session;

that in other respects the Rules of Procedure of this House relating to Parliamentary Committees will apply with such variations and modifications as the Speaker may make; and that this House recommends to Rajya Sabha that Rajya Sabha do join the said Joint Committee and communicate to this House the names of members to be appointed by Rajya Sabha to the Joint Committee."

Shri P. R. Patel (Mehsana): I have one amendment that the Bill be circulated for the purpose of eliciting opinion thereon by 10th Pebruary, 1960.

Mr. Deputy-Speaker: Is he going to move it?

Shet P. R. Patel: Yes, Sir. I beg to move:

That the Bill be circulated for the purpose of eliciting opinion thereon by the 10th February, 1960.

Mr. Deputy-Speaker: There is one by Shri Mohammed Imam. He is not there. Amendment No. 6 is by Shri P. R. Patel. That is moved. There is smother by Pandit Taskur Des Bhargava. He is absent. That is not smoved. The original motion for reference to the Joint Committee and this one are before the House.

Shri P. R. Patel: Mr. Deputy-Speaker, I move the motion and in support of it, I beg to submit the reason why the Bill should be circulated for public opinion.

We know that the Congress has come to a decision that there should be ceiling on land at Nagpur and they are implementing it here and such types of Bills are also introduced in different States. Whatever Bill we have will be an ideal for the rest of the States.

15.48 hos.

[SHRI BARMAN in the Chair]

Whatever limit is placed here will be followed by the different States to some extent. I am of opinion that this Bill affects set only the land[Shri P. R. Patel]

5211

holders of Delhi, but it affects the cultivators and landholders of the whole country, and whatever we put here in this Bill shall have effect on other Bills. For this reason, I am of opinion that the opinion of the people should be sought. After all, merely publishing the Bill in the Gazette or discussing it here or referring the Bill to a Joint Committee will not be sufficient to invite the attention of those persons who will be affected thereby. After all, vast people living in the villages know little of what is published in the Official Gazette and most of them perhaps would not be acquainted with the proceedings of this House. So, it is desirable that this Bill be circulated in such a way that the people may come to know about this and offer their opinion on this Bill.

I am strengthened also in my view by a letter that I received from the Home Ministry. By fixing the ceiling as it is proposed in this Bill, I think we shall be able to get only standard acres of land and that too 1953-54. calculated in 1953-54 much water has flowed under the Jumna, and there must be many changes, and I am afraid that by putting a ceiling Government will not be able to secure more than 600 or 700 acres of land for distribution others. I think even that is not possible

In Clause 26 of the Bill certain exemptions are given, and the first exemption is orchards. If orchards are to be exempted, naturally the acreage available will be minimised. If orchards have 50 or 100 acres, they are not to be affected. Generally orchards are owned by well-to-do or rich people getting their earnings from other sources. So, we are having a Bill which will affect the poor cultivators but not the well-to-do persons.

The second exemption refers to

"a farm in which heavy investment or permanent structural improvements have been made and which, in the opinion of the Chief Commissioner, is being so efficiently managed that its break up is likely to result in a fall in production;"

Who are the persons owning such farms?—not the common cultivators. They will be persons having a good amount of money and at the same time other sources of income, and we are going to exempt them. If these are exempted, the acreage that we may get by putting a ceiling will be much less.

Now I would like to put one question to the hon. Minister. Looking to this sub-clause, I think the Government is of the opinion that if there be large farms and greater investment, it gives more production, because it is admitted here in the subclause that because of the investment, because of the bigger farm. production may be very good. it is admitted by the Government that bigger the farm, better the production: the smaller the farm, poorer the production. If that be the case, do not understand why Government wants to put a ceiling on holdings. because by putting a ceiling on holdings we will be making the and if they are well-culsmaller. tivated and giving good production, why should they be interfered with? I do not understand this.

So, I can read from this one principle, that this Government, I may be excused, wants to take away properties from the poor, and they do not want to touch the properties in the hands of the well-to-do and rich people as the exemptions clearly show.

The third exemption is that if the land is used for cattle-breeding, dairy and wool-raising, the ceiling will not apply. I would like to know whether the Government desires that the cultivator should give up production of agricultural produce and take

Delhi

up breeding and all these things. What is the desire of the Government? If a man takes to the profession breeding he is exempted; if he has a dairy on his land, he is exempted; but if he produces foodgrains, he is not exempted. So, the man who serves the country by producing foodgrains, the essential thing, is affected, those who do not produce foodgrains are exempted. I do not under stand the philosophy of the hon. Minister moving the Bill.

Of course, there is the question of the co-operative societies and so on. I think there are so many principles myolved in this Bill that it would be desirable to ask the opinion of the people at large; it would be in the interests of the country to ask people to give their frank opinion on this ceiling and on these exemptions.

I would add one thing. These land holdings would be round about city of Delhi, and the man living in Delhi proper may possess buildings, raj mahals worth lakhs and crores; a man within the city may possess property worth crores, may have an income worth lakhs and crores-no ceiling on that. He may have income by way of rent or in any other wayno ceiling on that, because it seems that the city proper, in the view of the Government, is a protected area where people should be allowed to possess any amount of wealth, and there is no distinction absolutely. The socialism that is preached in Delhi is preached by the urban people, those who do not possess land; they want to apply the principles of socialism in the villages and the rural grave injustice done to the farmer grave injustice done to the farmer community; this is a grave injustice done to those who by their votes have put the Government in power.

My hon, friend was rather angry with Shri Ranga, but he must consider and give full thought to what I say. If at all socialism is a good thing and disparity is to be removed,

it should be removed in villages. towns and cities. I would like to know why there should be disparity between an officer getting Rs. 3,000 and a poor sepoy getting Rs. 70 or Rs. 80. After all, the latter has to maintain a family of four or five persons as well as the former, he must get his needs and he is also offering his service to the nation. Why much discrimination? Their socialism is meant not for the officers, not for the Ministers even, not for the Members of the Congress Party even, because even though they have passed the Nagpur resolution, they can possess any amount of wealth, they can have any amount of deposit in the banks, they can have any amount of jewels and gold with them.

Ch. Ranbir Singh (Rohtak): And the Opposition Members too.

Shri P. R. Patel: So, socialism is not meant for them; disparity in society should not be a concern to them. Socialism is only to be applied to the villages and the agriculturists. is why Government are coming forward with this Bill. But Government talking of ceiling on land holdings only and not on other holdings. Some days back, I was reading some books on China and Russia. In those countries, they first nationalised the factories and city properties. Here too, no doubt, we claim to bring in socialism in our country, but we want this socialistic principle to be applied only to the agricultural lands and to nothing else.

16 hrs.

My hon, friend Shri Ranga was right when he said that when the Imperial Bank was nationalised. market value of the shares was paid, but when land is to be nationalised or when ceiling is to be imposed, we [Shri P. R. Patel]

5215

find there is no market value. There is a proverb:

"किसी की पैन, किसी की स्याही, किसी का काउज, किसी का लखन और मत्तु लगावें मेरा मदन भाई ।"

which means that whosoever's be the ink, whosoever's be the paper, and whosoever's be the pen, the credit will be taken only by Madanbhai. Here, the credit for imposing a ceiling on land-holdings is taken by those persons who are not to lose anything. I say that this is too much.

This is being done because there are no strong farmers' organisations. I would ask Shri Ranga, who is not here at the moment, that he should better devote his life to farmers' organisation rather than to other things.

Shri Braj Raj Singh (Firozabad): He has gone to laissez-faire. That is the difficulty.

Shri P. R. Patel: If there are strong farmers' organisations, naturally, they would take up this problem. But they are not organised; the farmers cannot speak; they are not vocal; they are scattered in villages. So, these people sitting in the cities are applying the principles of socialism to them and making them very poor. I would request the hon, Minister to give thought to this matter.

There is one other point regarding the compensation to be given. clause 10(1), it is provided that it will be forty-five times the land revenue in respect of the first twenty-five acres of excess land. Let us even take it as forty-five times; if the land revenue assessed is Rs. 5, then fortyfive times that would come to about Rs. 225; that is, Government want to pay them less; even though the cultivator may have bought this land at a higher price, even though the cultivator may have bought this land by paying Rs. 2000, yet Government would say, yes, we pay you compensation, we do not take your land without paying you anything; and a meagre compensation of Rs. 225 would be given.

I would urge the hon. Minister, of he has some faith in socialism, if he party has some faith in socialism, if the Nagpur resolution is meant to bring socialism on this earth, then tet him apply this principle to one and all; let him apply this principle to the urban areas; let him say, for instance that the value of a hundred-rupee note would be diminished to Rs. 25, let him diminish it and see the consequences.

The poor cultivators do not understand all these things. With strength of the money of those persons in the urban areas, you buy the votes of the poor cultivators, and after having come into power with votes, you just massacre them, would say, you just halal them. would say that that is what the Bill seeks to do. If at all compensation is to be given, give full compensawhatever be tion. the price. what is proposed is outy a meagre compensation. Better not pay any compensation. I would say take away the lands; take away everybody's lands, and then talk anything you like; take away all the properties from all the persons in country. Why should you allow some persons to possess wealth worth ereres of rupees and at the same time. you want to pay less to the poor multivators? I do not understand. the opinion of the people must asked for. This is a Bill which affects one and all. The city people or the urban people may be happy over this. because this Bill does not affect them. But I would say this to them. If 80 per cent of the people of this country lose any interest in their property or their land-holdings, if they that they are impoverished and made poorer by such Bills as this, then, do you think that they would allow the

other 20 per cent to live happily in the cities? Sir, non-violence been preached by Gandhiji. warn the hon. Minister that if these principles are put into action in the villages, in ten years, there will be a bloody revolution in this country, and those 80 per cent will over the cities and rob them all by the sword, by the revolvers and rifles. are doing a thing which would harm the peace of the country. The city people must realise this also. Today, if such Bills as these are passed by sitting here, what will be the effect on the mentality of those persons living in the villages, in years? So, I feel that the city people also must give thought to this matter. Therefore, this Bill must be lated, and everybody must be asked to give his or her frank opinion.

Sir, what has happened in our country? A few top persons, in the name of planning, have come to certain decisions. My hon. friend, the hon. Minister, referred to some remarks of the Planning Commission. I would like to know from him whether in the Planning Commission there was anybody who represented the agricultrists. In this country where 80 per cent of the people are agriculturists, I would like to know whether these planners have seen village, have seen any agriculturists living in the rural areas. I say they have not. They are talking of things. sitting under the fan in the cities, and they have this kind of planning for an agricultural country, about which they have got very little knowledge.

Then, there is reference to the National Development Council. Then comes the crux. I know that if in the High Command, some two, four or five persons put their heads together and come to certain conclusions, then the rest have to say, yes; and the resolutions go through. If you say that this resolution is the viewpoint of the country, I would say that you commit a great blunder and a great mistake in thinking so. And this will have a very adverse effect.

I am not against ceiling.

AGRAHAYANA 24, 1881 (SAKA)

If they put a ceiling of 30 acres or 20 acres, I would not come in their But I want that this justice be done to one and all. What would be the price of the 30 acres that they propose under this Bill? At the rate of 45 times the land revenue assessment, it would come to, I think-I cannot calculate exactly just about Rs. 1000 or Rs. 2000. Let there be a ceiling on properties of one nd all. Put Rs. 2000 as the ceiling. One cannot have a house worth more than Rs. 2000. If Government say that a: farmer cannot have land worth more than Rs 2000, let them put a similar ceiling on properties in urban areas. But that is not done.

So I wish that the Bill should be circulated; if the hon. Minister is sure that it will be supported by the people, he will be with me in getting my motion for circulation through. But I am sure he will not because he is afraid that if this Bill is circulated, he will receive opinion against the Bill and against the principles embodied in it.

I would not take more time. But I would refer to one thing, and that is the definition of 'family'. Replying to the debate on the other Bill, he gave an explanation. But I am not satisfied with it. He says that a family means the person, the wife, the dependant children and grand-children. If the mother is there, what happens? Well, here the mother is member of the family! I do not understand what he means. Is he introducing the Bill in the Parliament of India or in the Parliament England? In England, the mother is considered a member of the family. But in our country, mother is a member of the family. Then what about sisters-widowed sisters? What about sisters' children? What about brothers? They are all members of the family. So the hon. Minister should not think that he is introducing the Bill in the Parliament of England. He is introducing [Shri P. R. Patel]

3219

the Bill in a country where traditions are very old and family covers many things.

Lastly, I would make a reference to clause 10(5) which says:

"Where any excess land of a religious or charitable institution vests in the Government ... "

So he does not want to exempt the charitable or religious institutions. Lands have been given to charitable institutions-matts and mandirs-so that they may derive the income from those lands and the temples may be maintained. But he does not like to exempt these even.

I would not like to take more of vour time.

बी बजराज सिंह: सभापति महोदय. में इस बिल के सिद्धान्त का भीर उहेश्य का स्वागत करता हं। किन्तु यह पता नहीं लगता कि इस बिल के कानन बन जाने के बाद माखिर दिल्ली प्रदेश में कितनी जमीन मिलने वाली है सरकार को, जिसे कि वह बाट सकेंग, या जिससे कि और जिन उद्देश्यों की इस बिल में चर्चा की गई है उनको पूरा किया जा .सकेगा ।

धच्छा होता कि इस बिल को पेश करने से पहले गह-मंत्रालय एक इस तरह का नक्शा तैयार कराता जिससे यह पता चलता कि ३० स्टेंडर्ड एकड से ज्यादा रखने वाले दिल्ली प्रदेश में कितने काश्तकार है और ६० स्टेंडर्ड एकड से ज्यादा जमीन रखने वाले कितने काश्तकार हैं । लेकिन गह-मंत्रासय की तरफ से इस तरह की कोई सुचना सदस्यों को नहीं दी गयी है। जहां तक मझे पता है, दिल्ली प्रदेश में जिनके पास ३० स्टेंडर्ड एकड से ज्यादा जमीन है ऐसे सिर्फ ४२ श्रादमी हैं। श्रीर जिनके पास ६० स्टेंडर्ड एकड से ज्यादा जमीन है उनकी संस्या अधिकल से ६ या सात निकलेगी। अब कुल

६ मा ७ भावनी ऐसे हैं जिनके पास ६० एकड से ज्यादा जमीन है तो देखना यह ोगा कि इस बिल को सिलेक्ट कमेटी के सुपूर्व करने से या इसको राय मालम करने के लिए प्रसारित करने से, जसा कि मेरे मित्र ने सुझाव दिया है कितना उदृश्य पुरा होने वाला है, क्या मिलने वाला है। मुझे तो लगता है कि इस कानून के द्वारा कम से कम दिल्ली प्रदेश में तो एक एकड़ जमीन भी मिलने वाली नहीं है जिसकी ग्राम पंचायत को दिया जा सके या किसी दूसरे को वितरित किया जा सके।

यही प्रश्न महीं है कि ३० स्टेंडर्ड एकड़ जमीन एक कुटम्ब के पास रखनी चाहिए और भ्रविक से भ्रधिक ६० एकड तक जाना चाहिए, बरिक इस के साथ यह भी प्रश्त है कि क्लाज २६ में जो अपवाद गिनाये गये हैं. उन के कारण सरकार को एक एकड भिम भी मिलने की सम्भावना नहीं है। इन प्रभवादों में कहा गया है कि भगर किसी फ़ार्म में हैबी इन्वेस्टमेंट करली गई है, या पर्मानेंट स्टक्चरल इम्प्रवमेंटस कर लिये गये हैं, तो फिर यह कानन उस पर लागू नहीं होगा और वहां सीमा बांबने का सवाल पैदा नहीं होगा । लेकिन प्राप सारे बिल को पढ जाइये, ग्राप को हैवी इन्बेस्टमेंट की कोई परिभाषा नहीं मिलेगी। उस वक्त के चीफ़ कमिश्नर जैसे चाहें, इस की इन्टर-प्रदेशन-व्यास्या-कर सकते हैं। वह एक हजार रुपये को भी हैवी इन्वेस्टमेंट मान सकते हैं और पचास हजार वपने को भी मान सकते है। मान लीजिये किसी बड़े किसीन के पास ७० एकड जमीन है, जिस में से ६० एकड़ तो उस के घर के आदिमियों के हिसाब से उस की मिल जायगी और १० एकड़ भीर रह जाती है। फिर प्रक्त उठेगा कि वहां पर हैवी इन्वेस्टमेंट किया गया है या नहीं । लेकिन इस बिल में हैवी इन्वेस्टमेंट की कहीं मी व्यास्था नहीं की गई है भीर उस के बारे में यह नहीं बताया कि इस बिल के पास होने के पहले जो हैवी इन्वेस्टमेंट की गई हो. सिर्फ़

Delhi

खसी को दृष्टि में रक्ता जायगा । अगर इस कातृन के बनने के बाद कोई हैवी इन्वेस्टमेंट की गई हो, तो उस का क्या होगा ? जब यह बिल प्रकाशिल होगा, जब यह ऐक्ट बन बायेगा, तो जोगों को मालूम पड़ेगा कि इस में यह खिद है, तो वे इस का फ़ायदा उठाना चाहेंगे भीर कहीं थोड़ा सा कुछ रक्त देंगे भीर कह देंगे कि हैवी इन्वेस्टमेंट किया गया है । वे इस बिल के ऐक्ट बन जाने के बाद दरस्वास्त दे देंगे कि यह घारा हम पर लागू नहीं होती है, क्योंकि हम ने हैवी इन्वेस्टमेंट किया है । में यह निवेदन करना चाहता हूं कि जब तक हैवी इन्वेस्टमेंट की साफ़ क्याक्या नहीं की जायेगी कि उस के क्या मानी हैं, तब सक एक इंच खनीन मी लेना झासान नहीं होगा।

यही नहीं, दक्ता २६(१) (बी) में कहा गया है:---

"any specialised farm which is being used for cattle breeding, dairy or wool raising."

यह कहीं भी नहीं दिया गया है कि कटल-बीडिंग के लिए या वल रेजिंग के लिए या डेयरी के लिए इस से पहले कोई फ़ार्म इस्तेमाल किया जाता रहा था । सरकारी पार्टी की कान्फ्रेन्स स नागपुर में एक प्रस्ताव पास किया गया और उस के बाद दनादन यह चर्चा चल रही है। में नहीं फहता, बल्कि श्री प्राचार्य बितोबा मार्वे फहते हैं कि सीमा के सम्बन्ध में विभिन्न राज्यों भीर केन्द्र-शासित प्रदेशों में जो कानन बनाये जा रहे हैं, उन के द्वारा कहीं मी कोई जमीन मिलने का प्रकन नहीं उठेगा, क्योंकि सरकार के कानून लचर हैं भीर उस के पहले ही सीगों ने भपना पूरा इन्तजाम कर सिया है भगर किसी के पास साठ एकड़ या तीस स्टेंडर्ड एकड़ से ज्यादा जमीन है, तो भगर वह हैवी इन्वेस्टमेंट नहीं कर सकता है, तो वह वहां डेचरी स्रोल लेगा भीर कहेगा कि यहां पर क्रेयरी है, इसलिए यहां पर यह कानून लागू नहीं होता है। दफ़ा ३ उस पर लागू नहीं होगी भीर दका २६ डे मातहत उसको **श्रपणाद** मिल जायगा ।

इस के बाद कहा गया है--

"any land held by a body notified by the Chief Commissioner under section 33 of the Delhi Land Reforms Act, 195, as in force before such commencement."

इस एक्ट के मुताबिक बीक कमिक्तर साहब कौन सी बागीन को एगजम्म्ट कर सकते हैं? मैं कहना चाहता हूं कि वह भ्रपनी इच्छा के मुताबिक किसो भी जगीन को एगजम्म्ट कर सकैंगे भीर कह सकैंगे कि यह कानून इस पर लागू नहीं होता है ।

जहां तक को-श्रापरेटिव सोसायटीज का ताल्लक है, वह तो स्वागत-योध्य बात है, लेकिन जितने ग्रन्थाद दिवे गये हैं, उन सब का नतीजा यह होगा कि एक एकड़ जमीन भी लंडनैस पेजन्द्स--म्मिहान किसानीं-को या प्राम पंचायतों को देने के लिए नहीं बचेगी। श्राखिर नया उद्देश्य है इस बिल का ? धगर सरकार कोई का रून बनाना चाहती है, तो उस का कोई तो उहेश्य होना चाहिए। सरकार जनता को यह कह रही है कि वह जमीन का पूर्वितरण करेगी । प्रश्न यह है कि क्या इस बिल के द्वारा जमीन का पूर्नीवतरण हो सकेगा या नहीं । मैं निवेदन करना चाहता है कि जान बुश कर गृह मंत्रालय ने हमें इस की सूचना नहीं दी है कि इस जिल के परिणाम-स्वरूप कुछ जमीन मिलेगी या नहीं । मैं साफ़ कहता चाहता है कि सगर गृह मंत्री महोदय समझते हैं कि इस बिल के पास होने के बाद कोई जमीन मिलेगी, तो वह इस को बतायें कि कितने एकड जमीन सरकार की मिलेगी। मैं विश्वास करता है कि इस किल के पास होने के बाद एक एकड़ जमीन भी नहीं मिल संकेगी।

सरकार दिल्ली में भीर सारे मुल्क में जमीन की सीमा बांघने जा रही है। लेकिन प्रश्न यह है कि वह सिर्फ़ जमीन पर ही सीमा क्यों बांघना चाहती है। दिल्ली तो एक ऐसा नगर है, जहां पर झास-पास रहने वाले सारे श्री ब्रजराज सिंही

किसानों की जमीनों को हड़पा जा रहा है। उन से कहीं तो कानून बना कर जमीन नी गई, कहीं दलाल घूम रहे हैं, कहीं पैसे वाले घूम रहे हैं। उन्होंने कम पैसे से जमीन ली और उस को सौ गुना, कीमत पर मकान बनाने दो सी गना बालों को बेचा । भ्रगर जमीन पर सीलिंग तो हो, लेकिन भ्रगर उस जमीन पर कोई कोठी या कारखाना बन जाता है, उस ५र सीलिंग न हो, तो जनता पर इस का कोई प्रभाव पड़ेने वाला नहीं है। मेरे मित्र श्री पटेल ने ठीक कहा है कि इस से गांव वालों पर यह प्रभाव पडेगा कि सरकार हमारे कपर तो सीमा बांघती है, लेकिन वह शहरों के पूंजीवादी डंग से रहने वाले लोगों पर, कारखाने वालों पर कोई सीमा नहीं बांघती है। श्रगर सरकार चाहती है कि सीमा बांधी जाय, तो केवल बमीन पर सीमा बांघने से काम नहीं चलेगा। प्रस से जनता का जीवन सुधर नहीं सकता। जनता के एक वर्ग पर तो सरकार सीमा बांधती है ग्रौर दूसरे वर्ग को यह इजाज़त देती है कि वं करोडों रुपये कमा सकते हैं उन पर कोई सीलिंग नहीं है। इस का नतीजा यह होगा कि जिन लोगों पर सीमा बांधी जायेगी, वे भी बेईमानी करेंगे।

सरकार की ग्रोर से बार बार कहा जाता है कि हम इनकम--- ग्रामदनी--- पर सीलिंग नहीं बांबते हैं, बल्कि जमीन पर बांबते हैं। थोडी देर के लिए श्रगर ऐसा मान लिया जाय, तो फिर जरा शहर में भ्राइये भ्रौर कहिये कि हम सीलिंग जमीन पर बांधते हैं, श्रामदनी पर नहीं ग्रीर इसलिए दो मकानों से ज्यादा किसी के पास नहीं होंगे, या दो कारखानों, या एक कारखाने से ज्यादा किसी के पास नहीं रहेगा । दिल्ली, मद्रास, कलकत्ता, बम्बई इत्यादि बड़े नगरों पर इसको लागु कीजिये। सरकार किसी तो सिद्धान का पालन करे। लेकिन सरकार यह कह कर कि इन्टेन्सिक कल्टीवेशन के द्वारा-- घनी खेती के द्वारा

श्रीर ज्यादा पैदा किया जा सकता है, सारे सीमा के सिद्धान्त की हत्या कर देती है। सरकार सिर्फ़ जमीन पर सीमा बांघ कर स पूरे मसले को हल नहीं कर सकती है। जब यह बिल ज्वायंट कमेटी के पास जा रहा है, तो में सरकार श्रीर मिनिस्टर महोदय स कहुंगा कि वे इस पर विचार करें कि वे इस बिल के जरिये जिस उद्देश्य की पूर्ति करना चाहते हैं, उस की पूर्ति सिर्फ़ जमीन पर सीलिंग बांधने से नहीं होगी। हमारे जितने पेशे हैं, जितने व्यापार हैं, तिजारत है, या नौकरियां हैं, उन सब पर सरकार को सीमा बांधनी होगी । यह निरचय करना पड़ेगा कि इतने से कम किसी भ्रादमी की भ्रामदनी नहीं होगी भौर इतने से ज्यादा किसी भादमी की नहीं होगी। सरकार मोटे तौर से कह सकती है कि हम एक और दस का फ़र्क रखना चाहते हैं--अगर १०० रुपये से कम किसी की आमदनी महीं है, तो १००० रुपये से ज्यादा किसी की नहीं होगी। सरकार की श्रीर से कहा जाता है कि हमारे सोशलिस्टिक पैटर्न में ऊंची तन्खाहों को नीचे नहीं लाया जायेगा, नीचे की तन्ख्वाहों को ऊपर लाया जायेगा । म्राखिर कोई योजना होनी चाहिए, जिस के अनुसार नीचे दबे हुए, पिसे हए, शोषित, पीडित, दलित लोगों को किसी निर्वारित भवधि के भन्दर ऊपर उठाया जा सकेगा । मैं कहना चाहता हं कि सरकार की योजनामों के मनसार एक हजार सालों में भी नीचे दबे हुए लोगों को ऊपर की श्रामदनी में नहीं लाया जा सकता है। जब नहीं लाया जा सकता है, तो सरकार को इस तरह की बात निश्चित करनी चाहिए कि दोनों भ्रामद-नियों में, छोटों और बड़ों की श्रामदनी में एक भीर दस का फ़र्क हो--जब सरकार कम से कम पचास रुपये की भ्रामदनी रखती है, तो पांच सौ रुपये से ज्यादा किसी को नहीं मिलेगा। लेकिन इस सिद्धान्त को सरकार स्वीकार नहीं करती है। प्रश्न यह है कि जिस उद्देश्य की पूर्ति सरकार इस बिल के ज़रिये करना चाहती है, उस की पूर्ति प्रकेले इस बिल के जरिये नहीं

होती है। सरकार बमीन पर सीलिंग बांबना बाहती हैं, वस के वस उद्देश्य की पूर्ति नहीं होती है। उस के लिए चरकार को सूमि के सलावा और जितने सावन हैं, जिन से श्रामदनी होती है, पैदाबार होती है, उत्पादन होता है, जब सब के बारे में सोचना पड़ेगा, क.हे वे कारकाने डॉ, शहर की वायदाद डो, बा नौकरियां हों। मुखे भक्रपोस है कि सरकार खबर नहीं सोच रहीं है। सरकार को यह कड़ने में स्त्री होती है कि हम शहरों को बढ़ाते जा प्रें हैं, यहां कारचाने वहें हैं, मकान वहे हैं, क्योंकि शहरों में मकानों की बड़ी मारी समस्या है, शहर में मकान नहीं हैं, इसलिए प्राईवेट लोगों को मकान बनाने के लिए श्रोत्साहन दिया जाता है। क्योंकि कारखानों की गैदाबार बढ़ानी है, इसलिए प्राइवेट लोगों को मौका दें कि वे कारखानों की पैदावार को बहायें । इस योजना के नाम पर कारलानों की पैदाकार बढ़ा कर लोगों की मामदनियों बढ़ाई जाती हैं, खास सास लोगों का काम बने, बाद देखा जाता है, सोग प्राइवेट तीर पर बकान बनायं और बना करके ऊंबे किरायों कर उनको द्वायें लेकिन वहां एक किसान भा सम्बन्ध है, छछके लिए सीलिंग की जाती 🛊 । में सीलिंग का विरोध नहीं करता है, में इसका स्वागत करता हूं । लेकिन प्राप सीनिंग इक वर्ग पर लगायं, एक हिम्से पर लगावें, इस से देश की उन्नति का जो पहेन्य है, वह कैसे पूरा करने की श्राप शका कर सकते हैं, इस से तो लोगों में बर्ननी फैलेगी, लोगों में असन्तोष पैदा होगा,लोगों में गुस्सा पैदा होबा और इसका नदीजा यह होना कि जिस योजना को भाग सफल बनाना चाहते हैं, वह सफल नहीं होगी। मैं समझता हूं कि धकेले भूमि पर शीर्षिण जनाने से, धकेने वामीन पर सीमा बीबने से को भापका ब्लेय है, वह पूरा नहीं ही सकता है। इस समय जबकि भाप भूमि कर सीमा बांक्ने जा रहे हैं, इसके साथ ही साथ काप इस सिद्धान्त को भी मार्ने कि हमें धामक्वी कर भी सीमा मांबनी है । यह स्टेटिक न हो, यह प्रस्यायी हो सकती हैं । प्राप प्राय सी

रुपये माहवार प्रगर तय कर देते हैं, उसके बाद मान मीजिये कि कल दैक्तालाजी की जो बाह्र की जाती है, वैज्ञानिक प्रगति की जो बात की बाती है, उधमें विकास हो बाता है भीर सोगों की भागदनी बढ़ जाती है तो उसको धाप बढ़ा कर पांच सी कर सकते हैं। घाप की माज की परिस्थितियों को सोच करके यह काम करना पढेगा । प्रधान मंत्री महोदय नै कई बार कहा है कि हम भामदनी को कम नहीं करना चाहते हैं, हम श्रामदनी पर सीया बांबना नहीं चाहते हैं, क्योंकि ऐसा करने से सोगों को प्रधिक काम करने का इसैंटिय नहीं रहेगा, प्रोत्साहन नहीं रहेगा, ऐसी हालत में भाप यह कह सकते हैं कि दो साल के लिए यह सीमा बांबी जा रही है भौर उसके बाद मगर हालत मच्छी हो जायेगी तो इसको हम अंचा बढ़ा देंगे । लेकिन इसको भ्राप नहीं करना चाहते हैं। जिन लोगों के लिए भाव सीलिंग बांधी जा रही है छनके दिमागों में यह बात धायेगी कि यह हमारे लिए ही है, उन लोगों के लिए नहीं है, जो समाज में शाबे बढ़े हए हैं, जो पढ़े लिखे हैं, जो सफेद पीश हैं, जो प्रच्छे पच्छे मकानों में रहते हैं, जो ऊंची ऊंची कोठियों में रहते हैं, जिन को विज्ञान द्वारा प्रवत्त सारी सुविधाएं प्राप्त हैं। इसका नतीजा यह होगा कि राष्ट्र का वो निर्माण भाष पाहते हैं, देश का जो नष-निर्माण पाइते हैं भीर उसकें भाग जनता का सहयोग चाहते हैं, और बाहते हैं कि जनता में इन कार्यों के प्रति उत्साह पैदा हो, न तो यह उत्साह पैदा होगा घोर न ही यह सहयोग घाएको प्राप्त हो सकेगा।

में निवेदन करना चाहता हू कि खमीन के मलावा जो दूसरे वर्ग हैं, जो दूसरे हिस्से हैं, उन के बारे में भी सीलिंग की बात होनी चाहिए। जहां तक इस कानून में कमियों का सम्बन्ध है, में कहूंगा भीर ज्यायंट कमेटी से प्रार्थना करूंगा कि वह इस पर विचार करे कि बलाय २६ में जो एग्वेम्पशंस विये गये हैं, जो भ्रणवाद रखे गये हैं, क्या उन भ्रपवादों के रहते कोई ऐसी जमीन विस्ती में निका सकती

[भी बजराज सिंह]

है जो कि वितरित की जा सके या गांव पंचायता को दी जा सके । मुझे लगता है कि जो अपवाद इस में रखे गये हैं, उन भपवादों के रहते कोई इस तरह की जमीन भाषको मिल नहीं सकेगी। ये अपवाद इतने गोल मोल है कि उन पर किसी तरह से भी इंटरप्रेटेशन लगाया जा सकता है, किसी भी तरह से चीफ कमिश्नर द्वारा व्याख्या की जा सकती है, इन अपवादों के रहते किसी भी भादमी को माफ किया जा सकता है भौर उसको कहा जा सकता है कि तुम्हारी जो जमीन है, वह ली नहीं जायेगी। इसमें कहा गया है कि जिस जमीन पर हैवी इनवैस्टमेंट लगी हुई हो, कैटल ब्रीडिंग के लिए उसका फार्म बना दिया गया हो या इस तरह की कोई दूसरी चीज हो, तो उसको एम्ब्रेम्प्ट किया जा सकता है। यह बहुत बोलमोल चीजें हैं इन को इस तरह से छोड़ा नहीं जा सकता है। इनको इस तरह से आप छोड करके यह करेंग कि जो कानून की भावना है, जो उसका उद्देश्य है, उसका लोग पालन नहीं करेंगे, उसको वे सत्म कर देंगे।

मापको म यह भी बतलाना चाहता हं कि दिल्ली में जब से इस सीलिंग की चर्चा चली है. तभी से लोगों ने जमीन को या तो किसी के नाम कर दिया है, या बेच दिया है या कुछ भौर कर दिया है भौर ऐसा इंतिजाम कर दिया है कि किसी फैमिली के पास ६० एकड़ से भिषक जमीन ही न रहे। इस सब के होत हुए भी भगर भाप इस चीज को इस तरह से रखते हैं, गोल मोल रखते हैं, इसको इसी तरह से छोड़ देते हैं, कि झागे चल कर वे इससे फायदा उठा सक, तो यह ठीक नहीं होगा। मैं बाहता हूं कि इस बीज पर ज्वायट कमेटी प्रच्छी तरह से विचार करे भौर इस तरह से देखें कि क्लाज २६ में जो एग्जेम्पशंस दी गई हैं, उनको क्या इस तरह से खोड़ा जा सकता है। धगर धाप कानून बनाने बा रहे हैं, तो इस तरह से उसको बनायें जिस से

कि बाप जो साभ चाहते हैं, कि जनता को हो, वह उसको मिल सके । मैंने भापको ४२ बादिमयों को बतलाया है जिन के पास ३० एकड़ से ऊपर जमीन है भीर मिक्क से पांच छः बादमी ही ऐसे रह जायेंगे जिन के पास ६० एकड़ से अधिक जमीन रह जायेंगे जिन के पास ६० एकड़ से अधिक जमीन रह जायेंगे जिन के पास ६० एकड़ से अधिक जमीन रह जायेंगे और उनको मी भगर बाप इस बात का कायदा पहुंचाना चाहते हैं, कि वे कैटल बीडिंग फार्म बना दें, या हैवी इनवेंस्टमेंट की बात भाप यहां लगा दें या इसी तरह की कोई दूसरी चीज कर दें कि उनका जो फार्म हैं वह इसमें नहीं भाता है, तो यह ठीक बात नहीं होगी भीर में चाहता हूं कि उवायंट कमेटी इस पर गम्भीरतापूर्वक विचार करे।

जहां तक कुट्मब की परिभाषा का ताल्लुक है, इसके बारे में एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रवन उठाया गया है। प्रालिर हम हिन्द्स्तान में रहते है, जहां पर हमारे बुद्दे मां बाप भी होते हैं भीर उनको खानदान से भलग नहीं किया जा सकता है। श्राप जो परिभाषा करते है उसमें न तो वृद्ध मां भीर न ही वृद्ध पिता मा सकते हैं उनकी कोई चर्चा मापने नहीं की है। ऐसा भी हो सकता है कि वृद्ध मां हो या वृद्ध पिता हो। श्रगर किसी काश्तकार ने प्राज जमीन पैदा की है, उसकी पै क सम्पत्ति नहीं मिली है, उसके पिता के नाम वह नहीं थी, भीर उसका पिता उस पर निर्भर करता है, वे इकट्डे रहते हैं तो पिता का खानदान में नाम नहीं श्राता है या मा का नहीं भाता है तो उनका भरण पोषण नहीं हो सकेगा ऐसी सुरत में में ज्वाबंट कमेटी से प्रार्थना करूंगा कि वह इस पर भी विचार करे भीर देखे कि हिन्द्स्तान की जो परिस्थितिया हैं उनमें पिता , इ. हो या मां ्र हो तो उनको सानदान से भलग न रका जाए। हिन्दुस्तान की संस्कृति को भ्यान में रसते हुए जो कुट्रम्ब की परिभाषा की गई है, उस पर मैं बाहता हूं कि पुनिवचार हो।

एक प्रन्तिम बात कह कर मैं समाप्त करता हं। इस बिल में यह व्यवस्था की गई है कि इसके पास होने के बाद यहां के जो काश्तकार हैं उनके पास भगर दिल्ली सें बाठ स्टेंडर्ड एकड से कम जनीन रह जाए ती वह न बैंव सकेंगे, इससे ज्यादा जितनी बमीन है, उसकी ही बेब सकेंगे । इसके पीखे यह उद्देश्य मालुम पड़ता है कि खोटी कारत न रह जाए, खेती छोटी न हो सके, जिसे कि धनईकोनोमिक होस्डिंग कहा जाता है, भ्रलाभकर जोत कहा जाता है, इस ग्रलाभकर जीत का जहां तक ताल्लुक है, सारे हिन्दुस्तान में धगर धाप इसकी जांच पड़ताल करें तो भापको पता चलेगा कि ८६ प्रतिशत ऐसी बोतें हैं, जो भ्रलाभकर हैं, जोकि सवा छ: एकड़ से कम बै ती हैं। उनके लिये ग्राप क्या कर रहे हैं। इस चीज को केवल दिल्ली में कर देते से काम नहीं चल सकता है। ऐसे ग्रादिमयों को बेचन का ग्रविकार नहीं रहेगा। जिस तरह से दिल्ली का निर्माण हो रहा है, जिस तरह से दिल्ली का विकास हो रहा हैं, उसे देवें तो पता चलेगा कि दिल्ती में जमीन की कीमत कुछ बढ़ती जा रही है भौर उस हिसाब से वह अपनी जनीन की कीमत को नहीं ले सकेगा। ऐसी सुरत में यह प्रधिकार रहेगा कि उसकी एक्वायर किया आ सकता 🗜 हस्तगत किया जा सकता है ग्रीर उसका उचित मुधावजा नहीं मिल पायेगा । मै चाहता हैं कि ज्वायंट कमेटी इस पर भी विचार करे कि पुराना जो लैंड रिफार्स एक्ट चला भा रहा है, क्या उसमें संशोबन करना मुनासिब होगा? चाठ एकड़ से कम कोई खाता न बने, इस तरह की रोक लगाना मृत्र, विव होगा?

इन शब्दों के साथ में ज्वायंट कमेटी से निवेदन करना चार्तुगा कि जो उद्देश्य है, को लक्य है, वह देखें कि क्या वह पूरा होता है या नहीं । जो इसमें कमियां रह गई है उनके रहते क्या उद्देश्य पूरा हो सकता है भीर भगर नहीं हो सकता है तो मैं चाहता ह कि वह उनको दूर करने का प्रयत्न करे धौर जो मूमि को वितरित करने का उद्देश है, उसको कम से कम कुछ हद तक पूरा करने की कोशिश हो। घण्छा होता कि सं.लि की जो लिमिट है, जो सीमा है, उसे तीस एकड़ स कम पर लाया जाता, साढ़े बारह एकड़ पर लाया जाता क्योंकि मैं समझता हूं कि तीस एकड़ रख कर घाप किन्हीं लोगों को जमीन नहीं दे सकते हैं। जब घाप तीस एकड़ पर भी इसको रख रहे हैं तो फिर घौर जो कमियां रह गई हैं, उन कमियों को दूर करने की पूरी कोशिश की जानी चाहिए घौर मैं घाशा करता हूं कि ऐसा ज्वायंट कमेटी द्वारा किया जाएगा।

श्री राषा रमण (चांदती चौक):
सभापति महोदय, जो विवेयक इस समय
सदत के सामने हैं और जिसको प्रवर समिति
के सुपुदं करने का प्रस्ताव किया गया है
माननीय मंत्री महोदय की तरफ से, उसके
लिए में उनको धन्यवाद देता हूं। इसका
कारण यह है कि मैंने भी ऐसी ही ध्राशा
की थी और इस प्रकार का संशोधन भी सदन
के सामने रखा था।

जहां तक इस विधेयक का सम्बन्ध है, विधेयक के भन्दर जो मस्विदे है, उसके बारे में चन्द बातें में सदन के सामने रखना चाहता हं। दैसे तो तफसीलन यह विषय जब प्रवर समिति के पास प्राएगा प्रवर समिति के जो सदस्य हैं वे इस पर काफी सोच विचार करेंगे भौर इसमें इस प्रकार के संशोवन करेंगे जिससे कि जब यह विषेयक वहां से हो कर वापिस सदन में घाएगा तो इसमें से वे बहुत सारी त्रुटियां दूर हो जाएंगी जो कि धव दिखाई देती हैं। मैं सदन के माननीय सदस्यों के सामने भीर मंत्री महोदय के सामने चन्द विचार ऐसे रखना चाहता हूं जो इस समय भी रखे जा सकते है धौर जिन को कि मैं बहुत जरूरी मानता हूं। उन्हीं को भापके

Land Holdings (Ceiling) Bul

[भी रावा रमन] सामने रक्षने के लिए में बोलने के लिए आहा ह्या है।

Delhi

यह बात पाज भक्षाव की नहीं है भीर न ही इस पर कोई विवाद हो सकता है कि हमारे देश में जड़ा तक कारत की खनीन का ताल्तुक है उस पर एक सीमा लगनी बाहिए। निम्न निम्न प्रान्तों में यह बात स्वीकार हो चुकी है भीर वहां पर कुछ इस बकार के विवेदक पास हुए 🖁 बौर सारे देश में इस पर काफी चर्चा हुई है। पहले प्लान में हमने इसको स्वीकार किया, इसरे प्लान में हमने इस पर भ्रमल शुरू किया भौर तीसरे प्लान तक हम यह देव सकेंगे कि हमने जो फीउला किया पा उसका क्या नतीजा निकला हैं, क्या इससे हमारा दित हमा है। इसमें कोई श्वर नहीं है कि सभी शान्तों में सीर्वित होती चाहिए परन्तु इसके साय साय यह बात भी मैं सदन के सामने रखना चाहता हूं कि दिल्ली की धनस्या दूसरे प्रान्तों से जिल्ल है, भीर उसकी भिन्न प्रकार से देखा जा सकता है। मैं इससे बिल्कुल इतिकाक करता हुं कि जो विवेयक बाया है उसके फातस्वरूप सरकार को कोई बहुत ज्यादा जुनीन दिल्ली के भासपास मिलने बाली महीं है। इसका कारण यह है कि कारत की बनीन बहुत कम है और बहुत भीड़े से परिवार ऐसे रह गए हैं जिन के बारे में यह कहा जा सकता है कि उनके पास तीस एकड़ से भविक जनीन काश्त की है। इस बाहते यह ख्वाल करके कि बहुत ज्यादा बानीन सरकार को मिल सकेगी, हमें भागे नहीं चलना है। इसके साथ साब यह भी जरूरी है कि जब सारे हिन्द्स्तान के लिए कानून बनते हैं भीर हम एक तरीका रक्ते हैं तो चाहे कोई छोटा सूबा क्यों न हो या कोई ट्रैरिटरी क्यों न हो--प्रभी सदन 🕏 सामने दो भौर बिल भाए थे, एक निपुरा के बारे में और दूसरा मनीपूर के बारे में, ने इलाने भी कुछ बड़े नहीं है भीर वहां भी कीई बहुत ज्यादा जमीन मिलने बाली नहीं है—क्य के लिए भी एक छा कानून अनना वाहिए। हम के एक चीव उद्यक्त धारी भीर उस का सारे देख में प्रसार और विकास करना चाहते हैं तो, अगर एक छोड़े से इसाकें का जो बास कर राजवानी से बाल्क्क रक्का है उसे प्रलग रस्थ, यह काल कुछ ध्यानाद-जनक मालम होती हैं भीर उस के बहुत सारी मापत्तियां हो तकती हैं। इंशिये मैं इस विस को नुषारकवाद कहता हूं। मैं समझता है कि यह बिस बाबश्वक था। चन्द महीते हुए हमारे होम मिनिस्टर वे इस बात का इकरार किया था अब सैंड रिफ:मं बिल पास किया था कि दिल्ली वें मी सीविंग होगी। अन कमी सीतिंक का संवाल भाता है तो हमारे बहुत से समाजवादी माई इस बात की चर्चा करते हैं कि शहरी घामदरी के ऊतर भी हम को जरूर कुछ सीबा लगानी चाहिये। मैं इस बात का विरोज नहीं करता भीर में यह समझता हूं कि वह जनाना माने बाला है। भगर हम बोड़ा 🖝 सब से काम लेगे तो शायद हमारी सरकार. जो माज इस तरफ भपना ध्यान दे रही है. उस पर भी कोई न कोई धमक करेवी। लेकिन भगर इस बात को सामने रस कर हम बहस करने लग जायें कि ३० एक की जो बीमा हम ने बड़ां रक्की है, भीर यह भी स्टैन्डर्ड एफड़ की, उसे नहीं रखना चाहिये या, इसनिये कि हम ने शहर की प्रापर्टी के ऊनर कोई सीमा नहीं रहती है, तो मैं समझता हं कि वह गसत बात होगी। कारव यह है कि किसी ३० एकड से भाप ४० वन भी वैश कर सकते हैं, २० मन भी पैदा कर सकते हैं और १० मन भी नैदा कर सकते है। हो सकता है कि भगर हम वैक्रानिक दंग प्रक्तयार कर सें, जो भावनिक दुनिया में मक्तयार किने गये हैं, तो इससे भी ज्यादा कर सकें। में यह नहीं कहता कि उपज बड़ ही जारेगी, लेकिन बढ़ सकती 🕍। की भेरा कहना यह है कि हिन्दुस्तान के सन्दर जी कि एक कृषि प्रश्नान देख है, और यहाँ बर सेंडलेस लोग भी बहुत काफी है, हुन के पास जमीनें हैं भीर कुछ के पास विल्कुल नहीं हैं, जब हम समाजवाद की बात करते हैं, को हमें इस बात का स्याल रखना पड़ेगा कि हमें कितना कदम उठाना है। तमाम देश में मेजारिटि कुवकों की है, जो सब से ज्यादा संस्था में हैं वह किसान हैं, इसलिये पहला कदम इस तरक उठा। हम ने एक सीलिंग लगाने का फैसला किया। सारे प्रदेशों में हम सीलिंग मुकर्र करते जा रहे हैं। इस से क्या नतीजा निकलेगा यह तो भविष्य की बात है। मैं समझता हं कि जो कदम हम उठाते हैं वह प्रच्छा समझ कर उठाते हैं, उसका नतीजा मच्छा भौर बुरा दोनों ही हो सकता है। लेकिन प्रगर हम नेक हैं, ईमानदार हैं, तो इस बिल में ऐसी भावना रखी गई है जिस की बिना पर हम कह सकते हैं कि हम देश में एक रेबोल्य्शन कर सकते हैं, लेकिन वह हम कर सकते हैं जमीनों पर सीलिंग लगाने के बाद। हमें इस बहस से मतलब नहीं कि किस खेत में ज्यादा उपज होती है किस में कम। ग्रगर किसी में ज्यादा उपज होती हैं तो उसे लेने का हमारा रूपाल नहीं है। इसी तरह से प्रगर शहर के भन्दर एक भादमी के पास दस कारलाने हैं, उस के पास दो या चार मकान हैं तो उस के दोनों या चारों मकानों ग्रीर कारखानों पर कुछ बन्दिशें लगाई गई हैं। सरकार ने उस की भामदनी पर बन्दिशों लगाई हैं। हमारा कम्पनी ला मौजूद है कारखानों के लिये। यह नहीं है कि हम ने उस की मामदनी को ख्याल में नहीं रखा है या उस को खुली छुट दे रक्खी है। तो बैसा में ने कहा हमारी सरकार जो कदम उठाना चाहती है और उस का जो इरादा है, उस से मुझे इस बात का विश्वास है कि वह दिन जल्द भाने वाला है जब शहरी भाबादी पर बा शहरी प्रापर्टी पर खास तौर पर मकानों पर कोई न कोई सीमा निर्धारित करनी होगी, भीर में समझता हूं कि इस तरफ हमारी सरकार कुछ न कुछ कदम बढ़ाती जा रही है। हो सकता है कि वह और तेजी से 313 (Ai) LSD.-8.

बढ़े भीर इस सदन के भन्दर शायद इस किस्म का बिल भाये भीर गवर्नमेंट का स्थाल ऐसा हो जाय भीर तमाम देश के भन्दर लोग इस असूल को अपनाने लगें। जो कदम दस बरब बाद उठने वाला हो पांच बरस बाद उठने बा-ला हो वह तीन या चार बरस में ही उठ बाये तो में उसे लब्बयेक कहुंगा। लेकिन यह कहना कि बृंकि सरकार ने फैसला किया है कि बमीनों पर सीमा लगनी चाहिये इसलिये अमीनों पर सीमा लगाने से पहले जो शहर की प्रापर्टी है उस पर सीमा लग जाय, में समझता हं कि यह कोई बहुत ज्यादा मुनासिब बात नहीं है। जैसा सेंने कहा, सरकार ने यह मुनासिय समझा की जमींदारी को खतन करे, जिन के पास ज्यादा जमीनें हैं उन्हें हर प्रदेश में सीमित करे भौर उसके बाद जो शहरी भावादी है उसके लिये दूसरा कानृत बनाये। जहां तक लेंडलाडिज्म का ताल्लुक है, में समझता हुं कि सरकार उस पर बड़ी गम्भीरता से विचार कर रही है। उस का यह विचार बहत जल्दी किसी न किसी शक्स में हमारे सामने भाना चाहिये, भौर में यकीन भी करता हूं कि वह भायेगा। जिन लोगों के पास बहुत बड़ी बड़ी प्रापर्टीज हैं, महलात हैं, बहुत बड़े बड़े मकान हैं भीर उन से हजासें लाखों, रुपये वे कमाते हैं भीर ऐश व भाराम में अपनी जिन्दगी बिताते हैं, उन पर कोई न कोई बन्दिश लगनी चाहिये, घौर सुनर घार लेटर लगेगी। भभी नहीं लगी तो चिर लगेगी, लेकिन इस का हमें ध्याम रहे कि माप को कदम ब कदम बढ़ना है। मगर माप मानते हैं कि देश में ५० फी सदी कास्त-कार हैं, तो पहला कदम इस तरफ उठेगा और पहले उन्हें हमवार करने की कोशिश की जा रही हैं, उस के बाद दूसरा नम्बर शहरों का मायेगा। इस के लिये भगर यह कहा जाये कि सीलिंग लगाना शहरी प्रापर्टी के साथ डिस्क्रिमिनेशन दिखलाना है, तो मैं इस बात को नहीं मानता भीर समझता हूँ कि ऐसा कह कर भाप दूसरी सक्ल पैदा करते हैं। जैसा मैंने कहा हमारे मुल्क

[श्री राषा रमण]

के अन्दर जो सीलिंग लग रही है वह प्रोडक्शन पर नहीं है, वह जमीनों के रकवे पर है। धगर हम रकवे को सीमित करते हैं तो इसका मकसद यह है कि हम हिन्दुस्तान के मन्दर हेसे लोगों को जो जमीन पर भपनी जीविका बाधारित करते हैं उन को सहायता देना चाहते हैं। इसलिये में समझता हं कि उसलन यह बात सही है श्रीर जिस प्रकार हम उस पर श्रमल कर रहे हैं वह सही हैं। जो लोग यह चाहते हैं कि समाजवाद हिन्द्स्तान में जल्दी ग्राये भीर तेजी से बढ़े उन को बजाय इस की यह शक्ल रख कर लोगों को कन्पयुज करने के हकुमत को इस बात के लिये मबारकबाद देनी चाहिये ग्रीर जो भी ऐसे विवेयक भाते हैं उन को एक भावाज से लब्ययक कहना चाहिये।

इसके बाद में यह धर्ज करना चाहता हूं कि इस विषेयक के ग्रन्दर ऐसी कई बातें हैं जिन में संशोषन की ग्रावश्यकता है।

Mr. Chairman: The hon. Member is a member of the Joint Committee. He can speak only in general terms now.

Shri Radha Raman: Sir, I am going to be very brief. Allow me five to ten minutes more because I want to place certain aspects of the Bill before the House.

Mr. Chairman: He can place them before the Joint Committee. There are other hon. Members who are not members of the Joint Committee and who want to participate in this debate.

Shri Radha Raman: But having had the opportunity which you have so kindly given, I think you will allow me five to ten minutes more and then I will have my say in the Joint Committee.

में यह धर्ज कर रहा था कि दिल्ली और इसरे सबों में थोड़ा सा फर्क है। इस वक्त यहां पर जो जमीनें काश्त के नीचे हैं, मैं समझता हं कि वे हल्के हल्के शहरी भावादी में शामिल होती जा रही हैं। भासिरकार बह भी श्रवंन पापलेशन में या कर उस घाबादी में शामिल हो जायेंगी जो तेजी से बढ़ रही है। इस लिये जब हम यह बात कहते हैं कि हम उन जमीनों को फीमली के अन्दर डिवाइड करते हैं और एक फैमिली की व्याख्या करते हैं कि उस में खाविन्ड हो, बीबी हो धौर तीन बच्चे हों, ग्रैड चिल्डन हों. तो हमें इस बात को देखना होगा कि भाषा हम इस व्याख्या को कितना वाइड कर दें जिस से शहर दिल्ली के भन्दर इस वक्त जो जमीनें है उन जमीनों से वह लोग जो इस किस्म के टकडे कर के उस की तमाम कारत को जल्दी से जल्दी कम कर सकते हैं भौर उसको दूसरों के हाथों में दे कर उस से बहत ज्यादा फायदा उठा सकते हैं, उन को रोका जाय।

मेरे लायक दोस्त ने फरमाया कि हमने शहर के भन्दर जो प्रकड़ की सीमा रक्खी है वह हमें नहीं रखनी चाहिये। इस का मकसद सिर्फ यह है कि जिन के पास प्रकड़ जमीन है या उस से कम है वह उसे बेच नहीं सकता। लेकिन भगर प्रकड़ से ज्यादा उन की जमीन है, या १० एकड़ से ज्यादा उन की जमीन है, या १० एकड़ से ज्यादा है तो उसे बेच सकता है। इस का मतलब यह है कि जिन के पास छोटी होल्डिंग्स हैं भगर वह उनको बेचने लगें तो फिर उन की भ्राजीविका का प्रश्न भ्राजायेगा भीर भ्रानएम्प्लायमेंट फैलेगा इस से दिक्कत बढ़ जाती है।

इसी तरह से कम्पेन्शेसन का सवाल है, दिल्ली के प्रन्दर जो कम्पेन्शेसन दिया जा रहा है, मैं उस की तरफ प्राप का ध्यान दिलाना बाहता हूं। प्रयर प्राप उस का दूसरे सूर्वों से मुकाबला करें तो यह रिलेटि-

बली बहुत कम है। इस की वजह यह है कि दिल्ली के सन्दर को कंसालिडेशन हथा. जो भरेसमेंट हुआ वह सन् १६०८ में या १६११ में हमा था। उस के बाद कोई असेसमेंट नहीं हमा। इस का नतीजा यह हमा कि यहां पर जमीन का जो लगान दिया आता है वह भास पास के दूसरे सुबों के मकाबिले में बहुत कम है। उस के बेसिस पर कंपेन्होसन देने का मतलब न देने के बराबर हो जाता है। इस लिये हम जब इन बीओं को देखें तो हम को रियलिस्टिक होने की जरूरत है। अगर हम यह देखें कि गांव वालों पर इस का ग्रमर क्या पडता है, जिन पर हम इस का असर आज डालने जा रहे हैं, तो मैं घटन से घर्ज करूगा कि जब हमारे सामने कंपेन्होसन या फैमिली का जिक आया तो हम ने इस बात को खास तौर पर देखा कि हम यहां पर इस की नकल कर रहे हैं कि राजस्थान में क्या हो रहा हैं, यू०पी० में क्या हो रहा है, यंजाब में क्या हो रहा है। नेकिन हमें ग्रसल में देखना यह है कि जब हम सीलिंग का एक प्रिसिपल ऐडाप्ट करते हैं तो जिन भाइयों को हिफाजत की जरूरत है उनको हम क्या हिफाजत दे सकते हैं भौर इस सीलिंग को लगा कर सरकार, जनता को क्या फायदा पहुंचाती है।

Dr. M. S. Aney (Nagpur): Why the settlement was not done for such a long period? I just wanted to know for information.

Shri Radha Raman: That is a question which can be answered only by Government. I am giving the facts.

दी फैंक्ट इंड कि यहां पर जितना भी
मुझाविजा दिया गया है वह उस जंगीन
पर दिया गया है। अब बराबर की गाजियाबाद की या मंजाब की जमीनों के मुझावजे
का मुकाबला करें तो उस से जमीन को शायद
यहां दस गुना कम पायेंगे इसलिए इस तरह
की बेखिस रखना तो में समझता हूं कि को
साप महां की खमीनों के बास्ते
मुझाकिया देंगे वह इसना बोड़ा होगा

कि वह बिल्कुल ही नेगले जेबुज होगा भीर धनजस्ट और धनफेयर मालूम होगा। मैं समझता हूं कि इस पर खाम घ्यान रखने की जरूरत है और मुझे भरोसा है कि प्रवर समिति इस बात पर ध्यान रक्खेगी।

फिर यहां पर मोर्टगेज के बारे में भी जिक है। दिल्ली के माम पास की बहन सी जमीनें ऐसी हैं जिनको कि काश्तकारों ने रेहन रक्खा है भौर जमीनों पर उन्होंने काफी रुपया लिया है। अगर मान लिया जाय कि १००० एकड़ की एक जमीन है मौर कास्तकार ते उसको रेहन रख कर १०, १२ हजार हपये ले रक्खे हैं अब अगर आप चाहते हैं कि वह जमीन भव उससे ले ली जाय तो जो ऐक्सट्रा हो उसकी वैसिय पर उस जमीन क्रे मताबिक उसको रुपया दिया जाय तो मैं समझता हूं कि रेहनदारी एक म्लीबत हो जायेगी। इसलिए सभापति महोदय, निहायत भदब के साथ मरा यह कहना है कि मैं इस बिल का हार्दिक स्वागत करता हं और मैं समझता है कि इस उमूल को जो तमाम देश के अन्दर लगाया जा रहा है और जिसको कि मै एक बहुत पायेदार वसूल समझता हं धौर म्नासिब वसूल समझना हं, उस वसूल को दिल्ली के इलाके पर लाग किया जाय। मैं मानता हूं कि वह उसूल म्नासबि हैं नेकिन मैं यह जरूर कहंगा कि इसको बिल्क्ल नकल करके जैसे कि भ्राप दूसरे सूबों के मुताबिक उसको करते हैं वैसा न करें भौर यहां दिल्ली के जो हालात हैं भीर दिल्ली के भासपास और गिदोनवा के हालात है और जो काश्तकारों के हालात हैं उनको ध्यान में रख कर इसको करें। यह बात में बिल्कुल मानता हुं कि हमें यह भी देखना चाहिए कि इस बिल को लागु करने के बाद हम किसनी अभीन लोगों से हासिल कर सकते हैं भौर उनका किस तरह से इंतजाम होना है। भाज श्चरत यह है कि एक जमीन जो कि गवर्नमेंट के पास बाली है उसका इंतजाम कभी कभी एक इंडिक्जियल के पास से भी ज्यादा क्षराव हो जाना है।

भी राषा रमणो 16.48 hrs.

[Mr. DEPUTY-SPEAKER in the Chair]

माननीय दातार साहब ने जो इस बिल को प्रवर समिति के सुपर्द करने का प्रस्ताव किया है वह सर्वया उचित है भीर उसके लिए में उनको धन्यवाद देता हुं और में माशा करता हं कि जब यह बिल प्रवर समिति से गजर कर फिर यहां हाउस में भायेगा तो उसमें वे तमाम संशोधन जो कि दिल्ली के सास हालात को देखते हुए करने जरूरी होंगे वे उसमें कर दिये गये होंगे भौर दिल्ली बालों को जो इससे नतीजा निकलने की धाशा है वह निकल पायेगा और यह बिल ऐसा नहीं होगा जो कि सिर्फ एक कागज तक ही महदूद हो कर रह जाय भीर इसके भ्रमल में देखा जाये तो हमारे हाथ में न तो कुछ जनीन आये भीर न भाम लोगों को कुछ फायदा ही पहुंचे भीर वे बिलकुल एक मसीबत भीर तरदद का कारण बन कर रह ज.य। इस बिल को प्रवर समिति को भेजने की सिफा-रिश करते हुए मैं उप गृह मंत्री महोदय से यह प्रार्थना करूंगा कि वह इसकी पास करने में जल्दी न करें भीर इस बारे में ग्रच्छी तरह से छानबीन करके ही यहां वापिस सायें। धव दिल्ली एक छोटी सी १४, २० मील की टैरिटरी है जिसके चारों तरफ गिरदोनवां हैं वह भी हल्के हल्के ग्ररबन बनते जा रहे हैं भीर तमाम कारत की जमीनें विकती जा रही हैं भौर आयद १०, १५ वर्ष के मन्दर दिल्ली के भासपास कोई कारस की जमीन रहने वाली नहीं है इसलिए इन हामात को देखकर ही उसका फैसला किंदा बादे।

Some Hon. Members rose-

Ch. Ranbir Singh rose-

Mr. Deputy-Speaker: We have had three Bills of the same nature. hon. Member has spoken on one of them.

Ch. Ranbir Singh: This Bill relating to Delhi is much more important for me as Delhi is much nearer to Rohtak.

Shri Datar: May I submit that this motion should be passed today, possible, because tomorrow there is going to be the food debate and this motion has to be passed in the other House also. We may sit for half an hour more today and finish this.

Shri Amiad Ali (Dhubri): Five hours have been allotted for this.

Shri Datar: The original idea was that there would be no reference to a Joint Committee. That was why they fixed five hours.

Shri Amjad Ali: There has been no change in the timing.

Shri Datar: There is a change.

Mr. Deputy-Speaker: Shri Prabhakar is a member of the Joint Committee. Ch. Ranbir Singh has spoken on one of the Bills. So, I have to call either Pandit Jyotishi or the hon. Lady Member, I will call the hon. Lady Member.

श्री नवल प्रभाकर (बाह्य दिल्ली---रक्षित-भ्रतस्चित जातियां) : उपाध्यक्ष महोदय, इस विवेणक का मेरे निर्वाचन क्षेत्र पर खास ग्रसर पड़ने बाला है इसलिए मझे बोलने का भ्रवस्य भ्रवसर दियः जाय ।

छपाध्यक्ष महोडय : मझे तो कोई ऐसराज नहीं है लेकिन यह तो सेलेक्ट कमेटी को जा रहा है भीर गालिबन भाप भी उसमें होंगे भीर ज्यादा भन्छा होगा भगर वहां से बापिसी पर आप इस के बारे में कहें लेकिन धगर आप इस पर बोलना ही चाहते हैं तो मैं शापको इंकार नहीं करूंगा भीर में भावको जरूर कुछ समय दंगा।

चौ॰ रणकीर सिंह : उपाध्यक्ष महोदय, मझे बुलायः गयः या । काई ब.व मौन माई सैन्स । मुझे तो इजाजत होनी ही चाहिए ।

कराष्ट्रश महीदव : किसने बुलाया ?

ची॰ रजबीर सिंह : मैंने शुरू कर दिया चा.

उपाष्पक्ष महोदयः प्रथने छाप ही बुलाना सुक कर दिया ।

चौ॰ रचवीर सिंह : वेयरमैं स स हब ने मेरा नाम छे दिया था जब कि मंगी श्री राषा रमण बीच में ही थे।

उपाध्यक्ष महोदय : पहले तो मुझे लेडी मेम्बर को बुलाना है और फिर श्री नवल प्रमाकर भी हैं जो कि कुछ समय ग्रवस्य चाहते हैं । श्रीमती लक्ष्मीबाई मुख्तसिर में ग्रयनी बात कह डालें।

श्रीमती लक्ष्मीबाई (विफार,बाद) : उपाध्यक्ष महोदय, में भ्रापको बहुत घन्यवाद देती हूं कि भापने मझे कृपा करके इस बिल पर मोड़ा निवेदन करने का भ्रवस्र दिया।

भ्रमी इस बिल के पहले जो हाउस में मिनपुर लेंड रेबेन्यू एंड लेंड रिफार्म्स बिल चल रहा था भीर उस के सम्बन्ध में बोलते हुए जो श्री नागी रेड्डा ने कहा था कि उनकी वजह से हैदराबाद में लेंड रिफार्म्स भ्राये था, वह गलत बात कही थी भीर में इस समय उसके जवाब में बोल रही हूं कि जो उन्होंने फरमागा था बह सही नहीं था।

यभी श्री राघा रमण ने जो यह कहा कि बूंकि यहां इस देश में ५० फीसदी किसान बसते हैं इसलिए पहले यह लेंड रिफार्म्स भीर इसिंगि वर्ग रह थाप उन ५० फीसदी मैजारिटी के लिए ले थाइये बाद में घरवन लोगों के लिए इसकी लाइयेगा तो यह उन्होंने गलत बात कही है। प्रापरटी के ऊपर कोई सीलिंग नहीं, मकाम के ऊपर कोई सीलिंग नहीं फिर शकेले किसानों के ऊपर ही कोई सीलिंग लगाना यनुष्यत बात है। बाइनारिटी के ऊपर भी इसकी लगना चाहिए और मेजारिटी के ऊपर ही इसका बका नहीं लगाना चाहिए।

मुझे यह मी कहना है कि सेलेक्ट कमेटी में ऐसे लोगों को रखा गया है जो कि जमीन के बारे में कुछ विशेष जानते नहीं हैं। भूगले १० या २० सालों में जैसे हालात हैं उनको देखते हुए यह कहा जा सकता है कि दिल्ली की भावादी भीर भिषक बढ़ जायगी क्योंकि यह रोजबरोज बढ़ती ही जा रही है भीर वह समाम कारत की जमीन धीरे घीरे खत्म होती जायगी और खेती की जनीन बिक कर बे रिहायशी क्षेत्र हो जावेंगे और उन पर मकान बन जायंगे और ग्राप की भरबन लोगों पर सीलिंग लगाने की बाह्य सोचनी चाहिए लेकिन यह जो श्राप उन बेचारे फिसानों के छोटे छोटे ट्कड़ों की सीलिंग करने की बात करते हैं तो यह द:ख का विजय है और में समझती हं कि ध्रगर यह बात दिल्ली के चारों तरफ इलाकों में बसे किसान मुनं कि शकेले उन के लैंड पर ही मीलिंग करने का प्रस्ताव किया जा रहा है और भरवन प्रापरटी की टच नहीं किया जा रहा है तो वह रो पड़ेंगे। जमीन जो होती है वह घरती माना होती है लेकिन हम देखते हैं कि दिल्ली के इदं गिर्द २०, ३० मील तक किस तरह से काश्त की जमीनों को खराब किया जा यहा है और उनको मकान प्रति वनाने के मकसद से खत्म किया जा रहा है ग्रीर उसका नतीजा हम देख ही रहे हैं कि यहां दिल्ली में खाने वाले तो बहुत हैं भीर रोजाना बहुले जा रहे हैं लेकिन यहां पर च।वल और गेहं झादि की कमी महसूस की जा रही है और पर्याप्त पैदा नहीं किया जारहा है।

इसके म्रालावा उसमें हम बेसिक होस्डिंग भी रक्खेंगे। हैदराबाद में हमारी जमीन खराब जमीन होगी थी भीर ६०० एकड़ एक फैमिली की बेसिक होस्डिंग थी भीर उसमें से साढ़े चार गुना हमने सीलिंग रक्खी थी। मब दस साल के बाद उनका मशविरा यह है कि सेलेक्ट कमेटी में राय देंगे कि दस साल के बाद काफी जमीन पर काश्त नहीं करेंग भीर इसलिए दस साल के बाद इस कानून का विशेष भ्रसर काश्तकारों पर नहीं पड़ने

[कीणकी सक्वीमाई]

भारत है, मैं उससे सहमत नहीं हूं। उन्होंने यह भी कहा कि कारतकार अपनी अपनी अभीनें बेच कर हजारों रुपया कमाते है भीर बैती हानत है उसंकी देखेते हुए दस बाल के बाद वह सारे रिहायशी क्षेत्र हो जावेंगे भीर बकान बनाने के काम में आयेगी और इस बास्ते कुछ नी रक्खें, ऐसा उनका कहना ठीक नहीं है। एक एम० पी० होने के नाते मुझे भी बोड़ां सा लैंड के बारे में तजर्वा है और मेरा निवेदन है कि हमें तमाम बीजों पर और इसका ध्यान रखते हुए कि हम कास्तकारों के साथ प्रतुचित संस्ती न करें, हम इस बिल को उचित रूप से संशोधित करते हुए अमल में साने का प्रयत्न करें। ब्रानरेबिल मिनिस्टर यहां बैठे हैं, वालाए साहब, उनको तजर्बा है। यह बम्बई से भाते है भीर उनको जमीन के बारे में माल्म है।

इस बिल में कम्पेन्सेशन देने की बात स्ती गयी है कि इ।ई लेंड के लिए रेवेन्यू का दस गृना भीर वेट लेंड के लिए बीस गृना दिया आएगा । भव हाई लेंड का रेबेन्य भाठ भाना है भीर बेट लेंड का १८ रुपया है। इसके ही हिसाब से कम्पेन्सेशन दिया जाएगा। पूराने जमाने में चनर बेट लेंड खरीदा जाता ली जिल्ला २४० रुपए में झाता उतना झब दो हजार रुपए में मिलता है, भौर ब्राई लेंड का द्वाम जो पहले बहुत कम होता या धव उतने ही लेंड का दाम ५०० रुप्या है। भाप देखें कि भवस्या यह है कि भाज किसान का लड़का पढ़ नहीं सकता, खा नहीं सकता, स्कुल नहीं जा सकता? भाराम नहीं कर सकता, लेकिन जो व्यापारी लोग हैं वह हजारों रुपया कमा सकते हैं भीर हजारों रुपया सर्व कर सकते हैं, उनके लड़के पढ़ने के लिए इंग्लेंड जा सकते हैं। यह सब काम मैबारिटी पर दबाव डाल कर हो रहा है। सिलेश्वर कमेटी के जो मेम्बर हैं उनको सोचना श्वाष्टिए कि किसान की हाजत कैसी है, उनको किसान के हिवों को देखना चाहिए। किसान के किए कोई झाराम नहीं है, उसके सिक्ष कोई हालीड नहीं है भीर उसकी कितना मुश्कित काम करना पड़ता है। किसान को छपनी बीनी का मंगम सूब तक उतार कर रेवेन्यू देना पड़ता है। अनावृष्ठि का उस पर असर पड़ता है। अनावृष्ठि का उस पर असर पड़ता है, रोग के कारण उस को कब्ट होता है। अब झाप उसकी जमीन और पन्ना लेना चाहते हैं। ऐसा करने का झापको क्या हक है।

मेरा सुप्ताव है कि ग्रापको सिलेक्ट कमेटी में किसानों के रिशेजेटेटिन्स को रखना चाहिए जो कि किसानों की बात को ठीक तरह से जानते हैं। जिनको जमीन की जानकारी हो उनको सिलेक्ट कमेटी में रखना चाहिए। मैं बाहती हूं कि मेरा यह व्वाइंट रिकार्ड कर लिय जाए कि सिलेक्ट कमेटी में किसानों के रिश्रेण न्टेटिव बहुत कम हैं। ऐसे लोगों को सिलेक्ट कमेटी में लेना आहए जो उनके बारे में बोल सकें। दानार साहब तो उनके बारे में जानते हैं। उनको तो मैं एक किसान ही समझ शिहं। हमें दिल्ली में किसी को मार कर दूसरे को नहीं बनाना है। अगर मां के एक बच्चा मोटा होता है एक दुवला, तो मां मोटे बक्बे को काट कर दुबले बक्बे की नहीं लगा देती। वह दोनों कच्चों को बराबर रखती है। हमें न किसानों की काट कर भ्रमीरों को बढ़ाना है भौर न भनीरों को काट कर किसानों को बढ़ाना है। इस बिल से वह काम नहीं हो सकता। इसलिए हमको बहुत सोव कर बिल लग्ना चाहिए। जल्वी नहीं करनी चाहिए । हमको यह रिकार्म सोबकर लाना चाहिए। सिलेश्ट कमेटी में किसानों की बात कहने वाले मेम्बर होते काहिएं। नैकड़ों हजारों वर्ष से किसान मर रहे हैं, उनके पास कपड़ा नहीं है, साना नहीं है। हमने देशा कि भी बाइजनहाबर धाए तो उनके बेंठने का सलीका नहीं या।

कहा जाता है कि दस साल में दिल्ली नगर बहुत बड़ने जाता है इसलिए एक एकड़ रको, दो एकड़ रको, यह ठीक नहीं है। सिलेक्ट कमेटी में जमीन के बारे में जानने वाले नहीं हैं। उसमें जमीन के बारे में जानने वालों को रक्षण चाहिए।

17 hrs.

Shri Naval Prabhakar and Ch. Ranbir Singh rose—

Shrimati Renu Chakravartty (Basirhat): May I submit that there is hardly quorum.

Shri S. M. Hamerjee (Kanpur): It is a very important Bill.

Mr. Chairman: If you want the House to be adjourned, I accept that. It is five o'clock now. So, the House stands adjourned.

17.01 hrs.

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Wednesday, December 18, 1959/ Agrahayana 25, 1881 (Saka).

[Tuesday, December 15, 1959/Agrahayana 24, 1881 (Saha)]

| ORAL QUI | ANSWERS TO | 500954 | WRITTEN ANSWERS TO QUESTIONS—contd. | |
|--------------------|--|--------------|--|----|
| S.Q. No. | Subject | Columns | S.Q. Subject Columni No. | |
| 875 87 6 | Trade with China . Allotment of wagons | 5009—12 | 856 Chinese competition in export trade . 5056-57 | |
| 877 | by State Trading Corporation Enquiry into Dalmia | 5012-13 | 897 Provident Fund bene- fits to I.I.S. Co. Wor- | |
| 8 ₇ 7 | concerns Advertisement of res- | 5013—15 | kers 5057 898 Restrictions on foreign | |
| 0,0 | erved vacancies in newspapers | 501518 | traders in Indonesia 5057-58 899 Corporation for fertili- | |
| 879 | Alkali industry . | 5018-20 | zers factories . 5058 | |
| 880 | Manufacture of watches | 5020-23 | 900 Uranium deposits in Salem district . 5058-59 | |
| 881 | Delhi Shops and Es- tablishments Act . | 502325 | 901 Exports to West Ger- many 5059-60 | |
| 882 | All India Memorial for | | 902 Textile automatic looms 5060 | |
| 883 | Martyrs Sale of scooters in Delhi | 502527 | 903 Manufacture of bicy- cles 5060-62 | • |
| 884 | Textile mills contribu- | 502730 | 904 'India 1958' Exhibition 5061 | |
| 885 | fund Stocks of cloth with | 5030—34 | 905 Manipur cement con- trol order 5062 | : |
| _ | textile Mills | 503437 | 906 President Nasser's visit to India 5063 | |
| 886 | Anti-Indian propaganda in Cairo by Chinese news Agency | 503740 | 907 Reclamation of land in Dandakaranya Arca 5063-64 | |
| 887 | Regularisation of cons- tructions by displaced | | 908 Fabrication of complete sugar plants 5062 | 4 |
| 889 | persons in Delhi. Sale of canvas and road | 5040-41 | 909 Film on Mahatma Gandhi 5064-69 | 5 |
| | building material to China | 5041-43 | 910 Portuguese case in the International Court 5065 | 5 |
| 891 | Fertiliser plant at Ko- thagudium | 5043-45 | 911 Jammu and Kashmir property in West Pa- kistan . 5065-6 | 6 |
| 892 | Export of manganese ore to U.S.A. | 5045-48 | 912 Bhopal Capital Project 5060 | |
| S.N. | | | 913 Hindi films 5066-67 | |
| No | • | | 914 Export of films . 5067 | , |
| 7 | Delhi Hindustan | C018-51 | 915 T.V. sets . 5067-68 | 3 |
| WRI | Standard TTEN ANSWERS TO | 5048—54 | 916 Zinc and Lead Smelters at Zawar 5068-6 | 9 |
| QL | ESTIONS | 5054 | 917 P.T.I | • |
| S.Q. No. | | | 918 Prohibition of docu- ments misrepresent- ing Indian frontiers 5069-7 | 0 |
| 888 | Indian Trade Centre at Beirut | 5 054 | 919 Indian traders in Tibet 5070-7 | |
| 890 | Ambar Charkha . | 5054 | | |
| 893 | | 5°55 | U.S.Q. No. | |
| 894 | the Indian High Com | • | 1405 South Patel Nagar, New Delhi 507 | /I |
| 895 | misstion at Karachi Tar distillation plant at Durgapur | 5°55 5°56 | 1406 Export of manganese ore | 72 |
| | · 0F | - - | | |

| WRITTEN ANSWERS TO QUESTIONS—contd. | | | | | |
|--|---|----------------------|---------------|---|--------------------------|
| U.S.Q. No. | Subject | COLUMNS | U.S.Q. No. | | COLUMN |
| 1407 | Migration of Indians from Tibet | 5072 | | Ter nicel survey of glass Industry | 5086-87 |
| 1408 | Development of Oil Mills | 5072-73 | 1430 | S udy of plastic In- dustry abroad | 5087 |
| 1409 | Sericulture industry in Kashmir | 5073 | 1437 | Slum c'earance in Kampur | 5087-88 |
| 1410 | Ex-employees of United Press of India | 5073 | 1438 | Employees State In- sura, C. Scheme | 5C88 |
| 1411 | Compensation to displaced persons . | 5074 | 1439 | Violation of sify rules by collieries. | 508889 |
| 1412 | Employment Exchanges | 5074-75 | 1440 | Denarcation of Indo- Pakistan Border | 5089 |
| | Handicrafts Centres in Punjab | 5075-76 | 1441 | Manufacture of lathes by Hi, dustan Ma- | J -0 y |
| 1414 | Manufacture of bicycles in Punjab | 5076 | 7442 | chine Tools Export of handloom | 5089 |
| 1415 | Razakars from Pakistan | 5076 | | Textiles | 5 089 -9 0 |
| 1416 | Indians in Malaya | 5 077 | 1443 | Rudraksha beads . | 5090-91 |
| 1417 | Labour Co-operative Societies in Himachal Pradesh | 5 °7 7 | 1444 | Ridio l'orne fres for Libiula d Spiti areas | 5091 |
| 1418 | Educated unemployed | 3-77 | 1445 | · | 5091-92 |
| | in Puliab Youth Employment & | 5078 | 1446 | Mi dya National Pep r Mills | 5092 |
| • | Vocational Guidance Sections | 5078 -79 | 1447 | Imports and Exports . | 5092-93 |
| 1420 | Transport facilities in Dandakaranya Area | 5079 | 1448 | New Industrial units in Punjab | 5>93-94 |
| 1421 | Paper factory in Kai- | • , . | 1449 | Automobile tyres . | 5094 |
| 1422 | yansinepur (Orissa) Export of manganese | 5079 | 1450 | Circulation of Indian newspapers and per- iodicals abroad . | 5095 |
| | ore . | 5 079–80 | 1451 | Sugar plant | 5095 |
| 1423 | Salt production in Orissa | 5080-81 | 1452 | Gurumukhi typewriters | 5095 |
| 1424 | Central Committee on | 3000-02 | 1453 | Sports goods | 5096 |
| | Employment | 5081-82 | 1454 | Hosiery and Rug Sec- | 5096 |
| | plantation strike. Puniab Circuit House | 5082 | 1455 | State aid to In- | 509697 |
| • | in Delhi | 5082 | 1456 | Imported Cars | 5097 |
| 1427 | Social Security Scheme for Industrial Wor- | | 1457 | Import of dyes and chemicals | 5097 -98 |
| 7.450 | kers | 5083 | 1458 | Non-ferrous metals . | 5098-99 |
| | Heavy Foundry Forge | 5083 | 1459 | Labour in High Range Estates in Kerala . | 5099-5100 |
| | Machinery for mineral oil industry | 5083-84 | 1460 | Land acquisition Development Scheme | 5100 |
| 1430 | Survey of the Carpet Industry | 5084 | 1461 | Production of liquid | 5100-01 |
| 1431 | Import of water coolers | 5085 | 1462 | Manganese ore trade. | 5101 |
| | Khadi Industry . | ₹ 085-86 | 1463 | Japanese Handicrafts | |
| 1433 | Salt Industry in West | # + D & | _ | design Expert | 5101 |
| 1434 | Bengal Working group on Social Welfare | 5086 | 1464 1465 | Import of tractors and | 51 06÷02 |
| 313 | (Ai) LSD9. | 5086 | | bulidozers | 5102~03 |

| WRITTEN ANSWERS TO QUESTIONS—coats. | | | PAFERS LAID ON THE | | |
|-------------------------------------|--|----------------------|---|----------|--|
| • | | * | TABLE | \$118-19 | |
| U.S . No | | Columns | (1) A copy of each of the following papers exphanged between the Govern- | 3110-19 | |
| 146 | 6 Rehabilitation grants to rural displaced persons | 51 3 - 04 | ments of India and China regarding the treatment of the Indian | | |
| 146 | 7 Industrial Estates in Andhra Pradosh . | \$1^4-05 | police patrol party cap- tured by the Chinese troops at Chang Chenmo | | |
| 146 | 8 Industrial Estate at Siliguri (West Bengal) | 5105 | Valley on the 2 1st October 1949:— | | |
| 1469 | Industrial expansion in Delhi | 51^5~06 | (i) Chinese Government un-official memorandum dated the 14th Novem- | | |
| 1470 | Power Projects | 51 ×6 | ber, 1959. | | |
| | Dandakaranya scheme | 5105-07 | (ii) Government of India's note dated the 24th | | |
| 1472 | Radio Sangeet Samme- | 5x >7- 8 | November, 1959. | | |
| | Tibetan refugees . Foot-wear for coal- | 51 8-09 | (iii) Chinese Bovernment note dated the 28th No- vember, 1959 | | |
| | miners | 5:09 | (iv) Government of India's | | |
| 1475 | Export of chilly and tamarind | 5109-10 | note dated the 13th December, 1959 along with the Statement of | | |
| 1476 | · Certificate of eligibility | | Shri Karam Singh. | | |
| | for allotment of ac- commodation | 511 :-ti | (2) A copy of statement cor- fecting the information | | |
| 1477 | Accommodation for Government Employees | 5111 | given on the ith Septem- per, 1959, in reply to the point raised by Shri V.P. Nayar during the discus- | | |
| 1478 | Unauthorised construc- tions in refugee mar- kets in Dolhi | \$111-12 | sion on the Report of the State Trading Corpora- tion of India Limited re- | | |
| 1479 | Strike at Bombay Port | 5112 | garding the association of | | |
| | Handicrafts Museum | • | the Directors of the Corporation with private firms. | | |
| | in New Delhi . | 5112 | | | |
| • : | Precision Tool Factory | 5113 | (3) A copy of the Annual Report of the Hindustan Antibiotics Limited for | | |
| 1482 | Bonus to workers in Hindustan Anti- biotics Ltd | 5113-14 | the year 1958-59 along with the Audited Accounts and comments of the Comptroller and Auditor Ge- | | |
| 1483 | Withdrawal of labour dispute cases from courts | 5114 | peral thereon under sub- section (1) of Section 639 of the Companies Act, | | |
| 2 484 | Grants to Sir Gangaram Hospital | 5114 | 1956. | | |
| 1486 | Import of cloves . | 5115 | CALLING ATTENTION TO | | |
| | Unsold headloom goods in Andhra Pradesh | 5115 | MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE | 2120-24 | |
| 1487 | Development of hilly regions of Punjab | 5115-16 | Shrimati Ila Palchoudhuri | • | |
| 1488 | Bhotiyas | 5116 | prime Minister to the res- trictions reported to have | • | |
| | Shops-con-flats in Kidwai Nagar, Delhi | 5117 | been imposed by the Gov- grament of East Pakistan | | |
| 1400 | Export of outons . | 5117 | community in the matter | | |
| | Indiani ation of foreign firms | 5118 | of renewal of their pass- | | |
| | | - | | | |

COLUMNS

5124-25

5125-26

5126-42

5142-44

COLUMNS

5207-46

CALLING ATTENTION TO MATTER OF UR-GENT PUBLIC IM-PORTANCE—contd.

The Deputy Minister of External Affairs (Shrimati Lakshmi Menon) made a statement in regard thereto.

BILLS INTRODUCED

(1) The Administration of Evacuee Property (Amendment) Bill, 1959.

(2) The Displaced Persons (Compensation and Rehabilitation) Second Amendment Bill, 1959.

BILL PASSED .

The Deputy Minister of Finance (Shrimati Tarkeshwari Sinha) moved that the Appropriation (No. 8) Bill, 1959 be taken into consideration. The motion was adopted. After clause-by-clause consideration the Bill was passed.

MOTION TO REFER BILL TO JOINT COMMITTEE ADOPTED

Further discussion on the motion to refer the Tripura Land Revenue and Land Reforms Bill to a Joint Committee was concluded and the motion was adopted-

MOTION RE. SUSPEN-SION OF RULE

The Minister of State in the Ministry of Home Affairs (Shri Datar) moved that the first proviso to Rule 74 MOTION RE: SUSPEN-SION OF RULE—contd.

of the Rules of Procedure and Conduct of Business in Lok Sabha in its application to the motion for reference of the Manipur Land Revenue and Land Reforms Bill, 1959, to a Joint Committee be suspended. The motion was adopted.

MOTION TO REFER BILL
TO JOINT COMMITTEE
ADOPTED 45144-5207

The Minister of State in the Ministry of Home Affairs (Shri Datar) & moved that the Manipur Land Revenue and Land Reforms Bill, 1959, be referred to a Joint Committee. The motion was adopted.

MOTION TO REFER BILL
TO JOINT COMMITTEE
UNDER CONSIDERATION

The Minister of State in the Ministry of Home Affairs (Shri Datar) moved that the Delhi Land Holdings (Ceiling) Bill 1959 be referred to a Joint Committee. The consideration

AGENDA FOR WFDNES-DAY, DECEMBER 16, 1959/AGRAHAYANA 25, 1881 (SAKA)—

was not concluded.

Further discussion on the motion to refer the Delhi Land Holdings (Ceiling) Bill and consideration of the Food situation in the country.